Duastro Sample Duastro Sample

Model: Duastro-Detailed-Kundli-Matching

SrNo: 115-120-105-3261 / 1027 Date: 21/02/2025

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
01/01/1999	जन्म तिथि	01/01/2000
शुक्रवार	दिन	शनिवार
घंटे 13:01:00	जन्म समय	13:01:00 घंटे
घटी 14:27:13	जन्म समय(घटी)	14:27:23 घटी
India	देश	India
.Delhi	स्थान	.Delhi
28:37:00 उत्तर	अक्षांश	28:37:00 उत्तर
77:12:00 पूर्व	रेखांश	77:12:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:12	स्थानिक संस्कार	-00:21:12 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:14:06	सूर्योदय	07:14:02
17:35:11	सूर्यास्त	17:35:01
23:50:25	चित्रपक्षीय अयनांश	23:51:11
मेष	लग्न	मेष
मंगल	लग्न लग्नाधिपति	मंगल
मिथुन	राशि	तुला
बुध	राशि–स्वामी	शुक्र
मृगशिरा	नक्षत्र	स्वाति
मंगल	नक्षत्र स्वामी	राहु
4	चरण	4
ब्रह्म	योग	धृति
विष्टि	करण	बव
की–किशोर	जन्म नामाक्षर	ता–तनुजा
मकर	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मकर
शूद्र	वर्ण	शूद्र
मानव	वश्य	मानव
सर्प	योनि	महिष
देव	गण	देव
मध्य	नाड़ी	अन्त्य
मार्जार	वर्ग	सर्प

Email: info@duastro.com | www.duastro.com | Contact: +91-9891911557

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि		ग्रह		राशि		अंश	विंशोत्तरी	
मंगल 0वर्ष 5मा 30दि		04:42:27	मेष		लग्न		मेष		04:22:29	राहु 3वर्ष 8मा 30दि	
गुरु		16:35:04	धनु		सूर्य		धनु		16:19:31	शनि	
02/07/2017		05:42:56	मिथु		चंद्र		तुला		17:13:20	02/10/2019	
02/07/2033		24:41:49	कन्या		मंगल		कुंभ		03:57:55	01/10/2038	
गुरु	20/08/2019	27:52:03	वृश्चि		बुध		धनु		07:44:44	शनि	04/10/2022
शनि	02/03/2022	28:08:46	कुंभ		गुरु		मेष		01:23:32	बुध	14/06/2025
बुध	07/06/2024	01:56:06	मक		शुक्र		वृश्चि		07:29:12	केतु	23/07/2026
केतु	14/05/2025	02:56:02	मेष		शनि	व	मेष		16:32:46	शुक्र	22/09/2029
शुक्र	13/01/2028	28:59:17	कर्क	व	राहु	व	कर्क		10:06:35	सूर्य	04/09/2030
सूर्य	31/10/2028	28:59:17	मक	व	केतु	व	मक		10:06:35	चन्द्र	04/04/2032
चन्द्र	02/03/2030	17:07:59	मक		हर्ष		मक		20:56:48	मंगल	14/05/2033
मंगल	06/02/2031	07:13:47	मक		नेप		मक		09:19:59	राहु	20/03/2036
राहु	02/07/2033	15:17:05	वृश्चि		प्लूटो		वृश्चि		17:35:42	गुरु	01/10/2038

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:50:25 चित्रपक्षीय अयनांश 23:51:11

लग्न–चलित

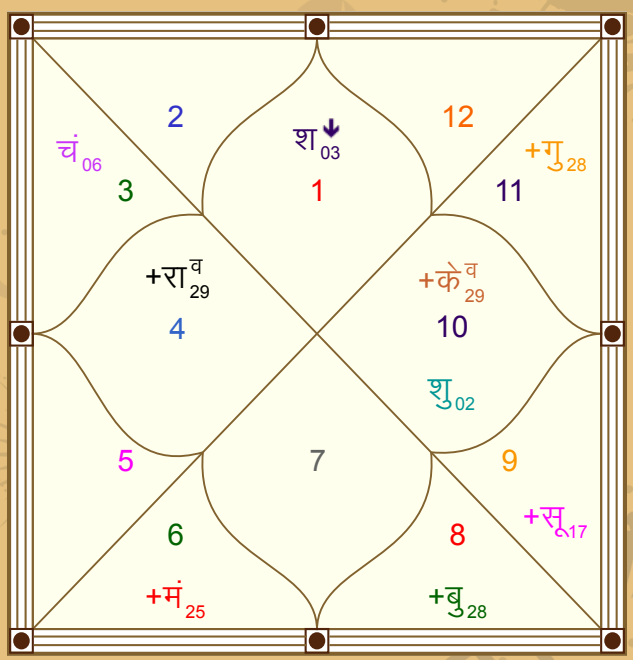

लग्न–चलित

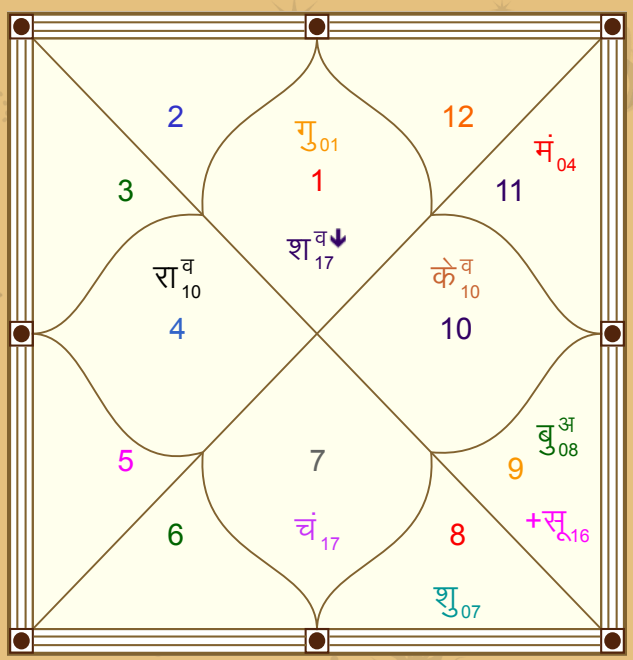

Email: info@duastro.com | www.duastro.com | Contact: +91-9891911557

Duastro Sample Duastro Sample

चन्द्र कुंडली

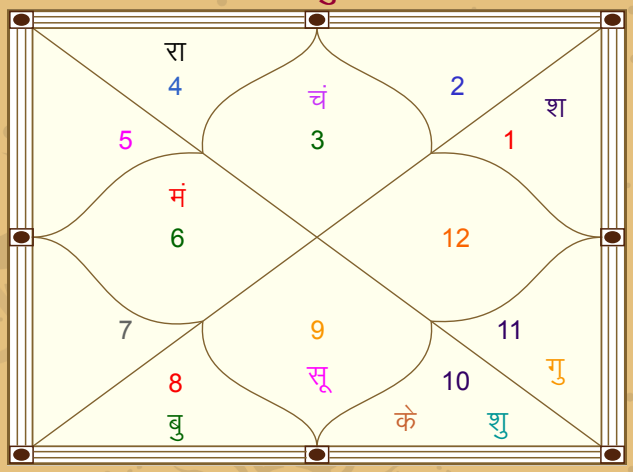

चन्द्र कुंडली

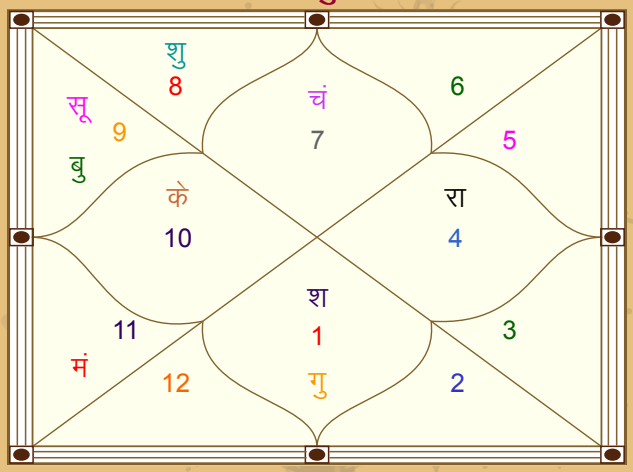

सूर्य कुंडली

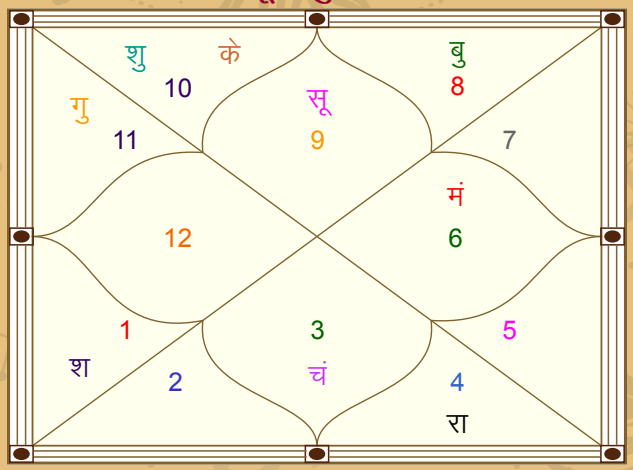

सूर्य कुंडली

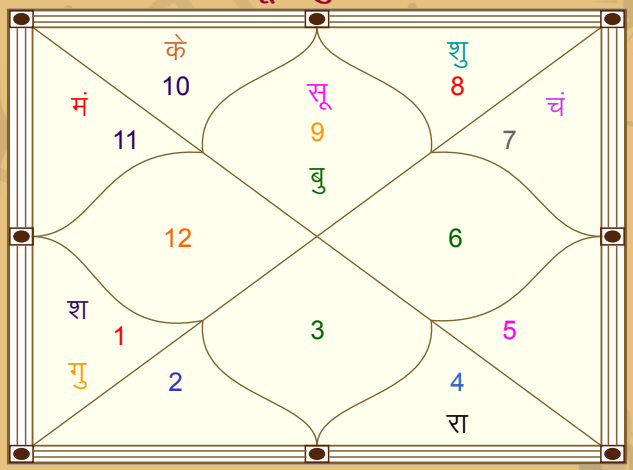

नवमांश कुंडली

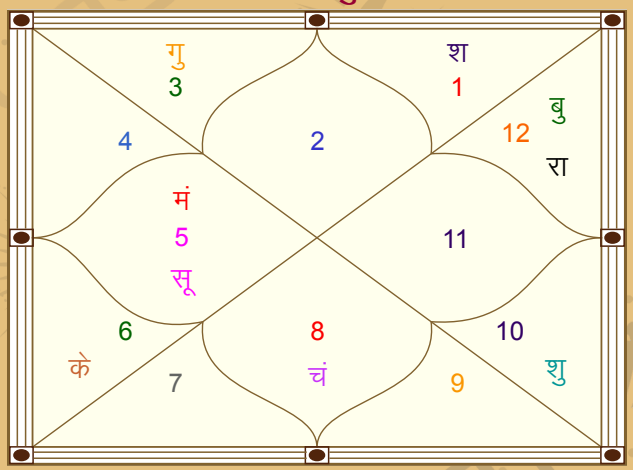

नवमांश कुंडली

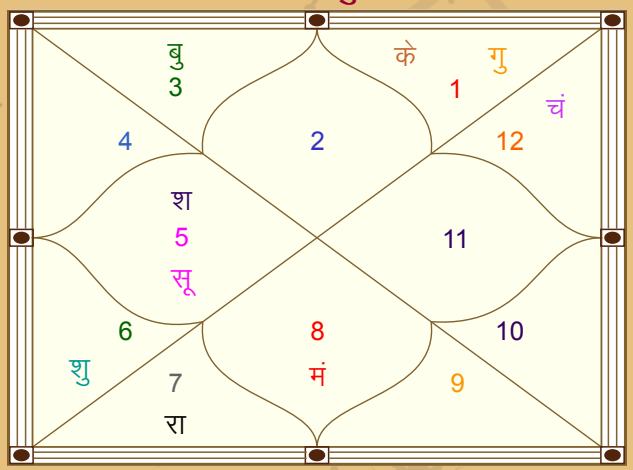

Email: info@duastro.com | www.duastro.com | Contact: +91-9891911557

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : मंगल 0 वर्ष 5 मास 10 दिन

के.पी. अयनांश : 23:44:20

फॉरच्युना : कन्या 23:56:24

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		धनु	16:41:09	गुरु	शुक्र	चंद्र	गुरु
चंद्र		मिथु	05:49:01	बुध	मंगल	चंद्र	राहु
मंगल		कन्या	24:47:54	बुध	मंगल	राहु	शनि
बुध		वृश्चि	27:58:08	मंगल	बुध	शनि	शनि
गुरु		कुंभ	28:14:51	शनि	गुरु	शुक्र	शनि
शुक्र		मक	02:02:11	शनि	सूर्य	गुरु	केतु
शनि		मेष	03:02:08	मंगल	केतु	सूर्य	चंद्र
राहु	व	कर्क	29:05:22	चंद्र	बुध	शनि	सूर्य
केतु	व	मक	29:05:22	शनि	मंगल	शनि	सूर्य
हर्ष		मक	17:14:04	शनि	चंद्र	शनि	राहु
नेप		मक	07:19:52	शनि	सूर्य	केतु	राहु
प्लूटो		वृश्चि	15:23:10	मंगल	शनि	गुरु	शनि

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मेष	04:48:32	मंगल	केतु	मंगल	मंगल
2	वृष	06:37:16	शुक्र	सूर्य	बुध	गुरु
3	मिथु	01:40:34	बुध	मंगल	बुध	शनि
4	मिथु	25:09:27	बुध	गुरु	बुध	राहु
5	कर्क	21:11:03	चंद्र	बुध	शुक्र	बुध
6	सिंह	23:57:37	सूर्य	शुक्र	शनि	गुरु
7	तुला	04:48:32	शुक्र	मंगल	शुक्र	केतु
8	वृश्चि	06:37:16	मंगल	शनि	बुध	राहु
9	धनु	01:40:34	गुरु	केतु	शुक्र	राहु
10	धनु	25:09:27	गुरु	शुक्र	बुध	राहु
11	मक	21:11:03	शनि	चंद्र	शुक्र	मंगल
12	कुंभ	23:57:37	शनि	गुरु	बुध	बुध

भाव कुंडली

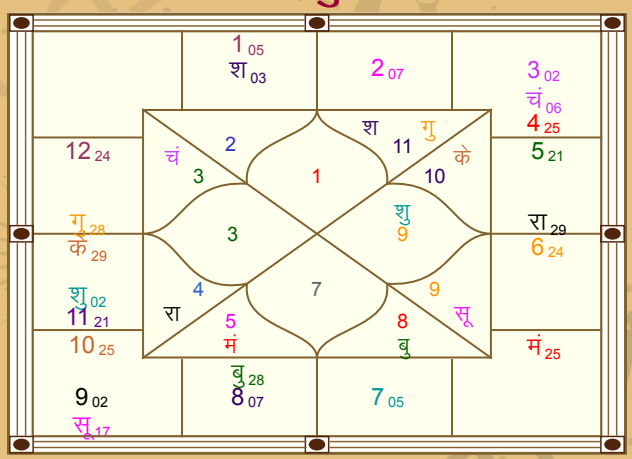

भोग्य दशा काल : राहु 3 वर्ष 7 मास 11 दिन

के.पी. अयनांश : 23:45:10

फॉरच्युना : कुम्भ 05:22:20

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		धनु	16:25:32	गुरु	शुक्र	चंद्र	राहु
चंद्र		तुला	17:19:22	शुक्र	राहु	शुक्र	केतु
मंगल		कुंभ	04:03:56	शनि	मंगल	शुक्र	गुरु
बुध		धनु	07:50:45	गुरु	केतु	गुरु	शनि
गुरु		मेष	01:29:34	मंगल	केतु	शुक्र	मंगल
शुक्र		वृश्चि	07:35:14	मंगल	शनि	केतु	चंद्र
शनि	व	मेष	16:38:48	मंगल	शुक्र	चंद्र	गुरु
राहु	व	कर्क	10:12:36	चंद्र	शनि	शुक्र	केतु
केतु	व	मक	10:12:36	शनि	चंद्र	चंद्र	राहु
हर्ष		मक	21:02:49	शनि	चंद्र	शुक्र	चंद्र
नेप		मक	09:26:01	शनि	सूर्य	शुक्र	शनि
प्लूटो		वृश्चि	17:41:43	मंगल	बुध	बुध	मंगल

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मेष	04:28:31	मंगल	केतु	चंद्र	केतु
2	वृष	06:21:21	शुक्र	सूर्य	बुध	राहु
3	मिथु	01:26:26	बुध	मंगल	बुध	गुरु
4	मिथु	24:55:11	बुध	गुरु	बुध	मंगल
5	कर्क	20:54:55	चंद्र	बुध	शुक्र	शनि
6	सिंह	23:38:23	सूर्य	शुक्र	शनि	राहु
7	तुला	04:28:31	शुक्र	मंगल	शुक्र	बुध
8	वृश्चि	06:21:21	मंगल	शनि	बुध	चंद्र
9	धनु	01:26:26	गुरु	केतु	शुक्र	चंद्र
10	धनु	24:55:11	गुरु	शुक्र	बुध	चंद्र
11	मक	20:54:55	शनि	चंद्र	शुक्र	सूर्य
12	कुंभ	23:38:23	शनि	गुरु	शनि	गुरु

भाव कुंडली

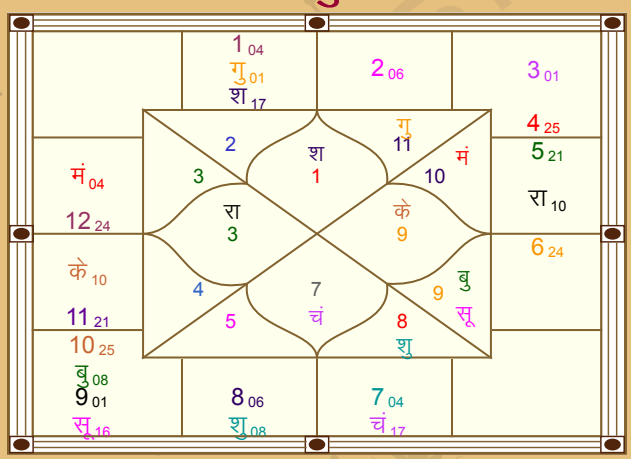

Duastro Sample Duastro Sample

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र– मंगल, केतु–
2	सूर्य– शुक्र–
3	चंद्र, बुध, राहु–
4	बुध, राहु–
5	चंद्र– राहु,
6	सूर्य– चंद्र, मंगल+ शुक्र– केतु,
7	सूर्य– शुक्र–
8	चंद्र– मंगल, बुध+ राहु, केतु–
9	सूर्य, गुरु, शुक्र,
10	सूर्य, गुरु, शुक्र,
11	शनि+ केतु,
12	गुरु+ शनि,

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल, शुक्र, शनि, राहु,
2	सूर्य– शुक्र– शनि–
3	बुध–
4	चंद्र, बुध– राहु,
5	चंद्र– केतु–
6	सूर्य–
7	सूर्य– चंद्र, शुक्र– शनि– केतु,
8	सूर्य, मंगल, शुक्र, शनि,
9	सूर्य, बुध, गुरु–
10	बुध, गुरु+ केतु,
11	मंगल+ शुक्र– शनि– राहु–
12	गुरु, शुक्र– शनि– राहु–

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2- 6- 7- 9, 10,
चंद्र	1- 3, 5- 6, 8-
मंगल	1, 6+ 8,
बुध	3, 4, 8+
गुरु	9, 10, 12+
शुक्र	2- 6- 7- 9, 10,
शनि	11+ 12,
राहु	3- 4- 5, 8,
केतु	1- 6, 8- 11,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2- 6- 7- 8, 9,
चंद्र	4, 5- 7,
मंगल	1, 8, 11+
बुध	3- 4- 9, 10,
गुरु	9- 10+ 12,
शुक्र	1, 2- 7- 8, 11- 12-
शनि	1, 2- 7- 8, 11- 12-
राहु	1, 4, 11- 12-
केतु	5- 7, 10,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	केतु
लग्न राशि स्वामी	मंगल
राशि नक्षत्र स्वामी	मंगल
राशि स्वामी	बुध
वार स्वामी	शुक्र
लग्न अन्तर स्वामी	मंगल
राशि अन्तर स्वामी	चन्द्र

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	केतु
लग्न राशि स्वामी	मंगल
राशि नक्षत्र स्वामी	राहु
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	शनि
लग्न अन्तर स्वामी	चन्द्र
राशि अन्तर स्वामी	शुक्र

Email: info@duastro.com | www.duastro.com | Contact: +91-9891911557

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

लग्न कुंडली

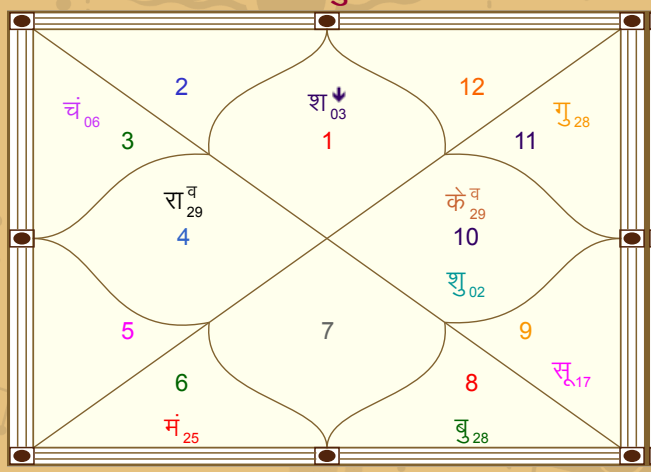

देह विचारः

लग्न कुंडली

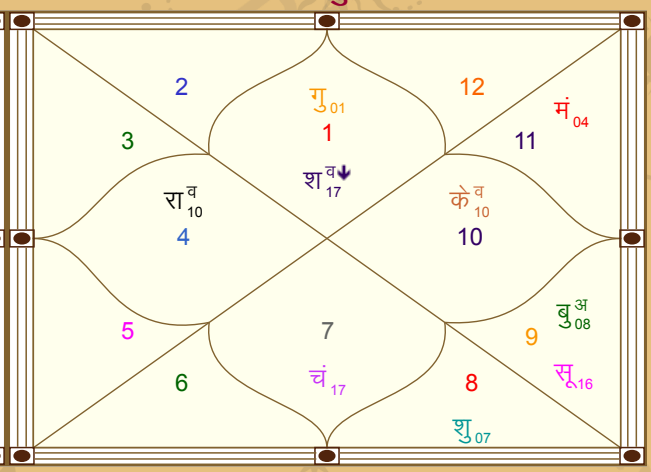

देह विचारः

होरा कुंडली

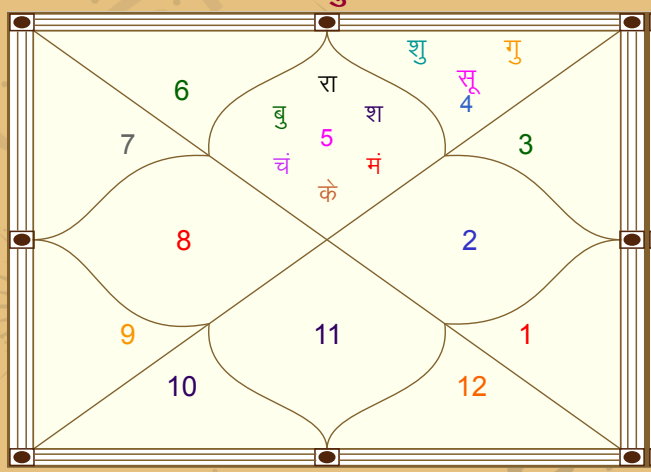

सम्पदाविचारः

होरा कुंडली

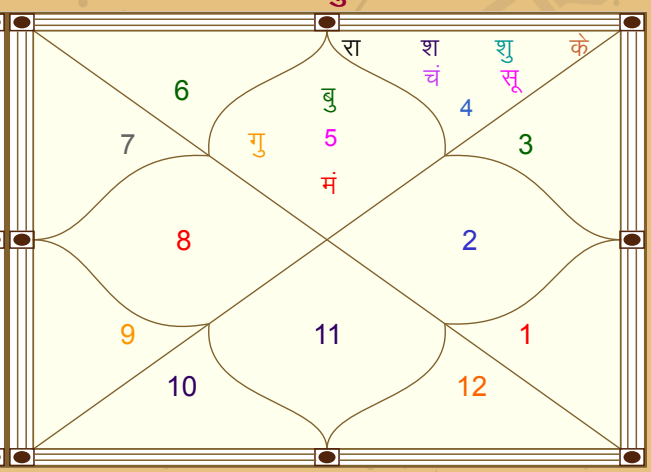

सम्पदाविचारः

Duastro Sample Duastro Sample

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

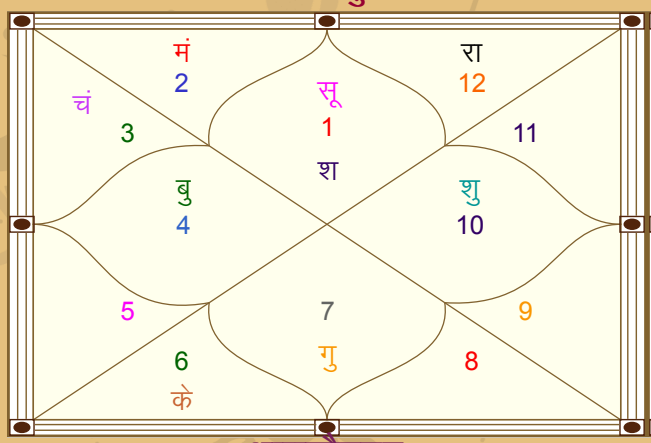

द्रेष्काण कुंडली

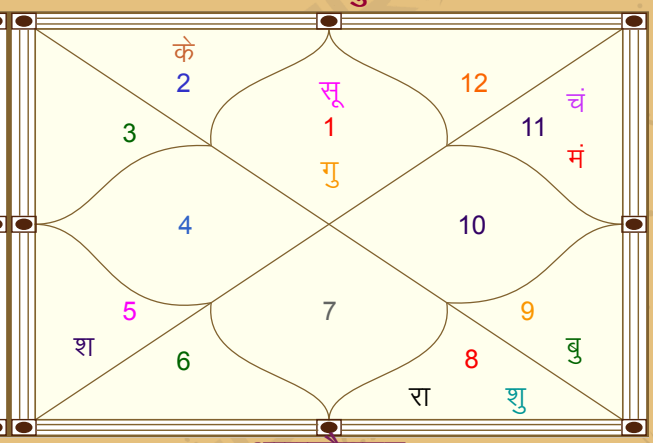

भ्रातृसौख्यम चतुर्थांश कुंडली

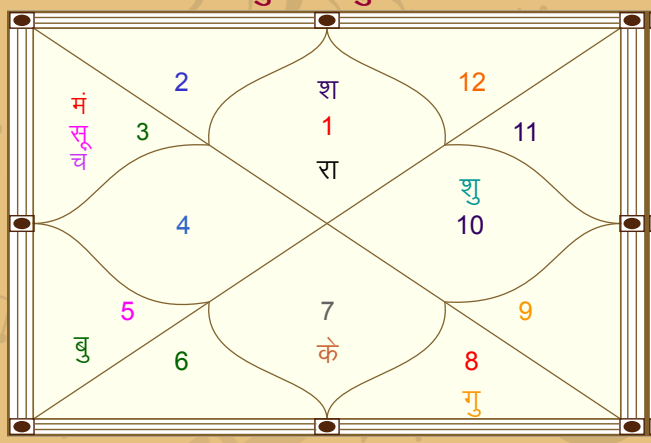

भ्रातृसौख्यम चतुर्थांश कुंडली

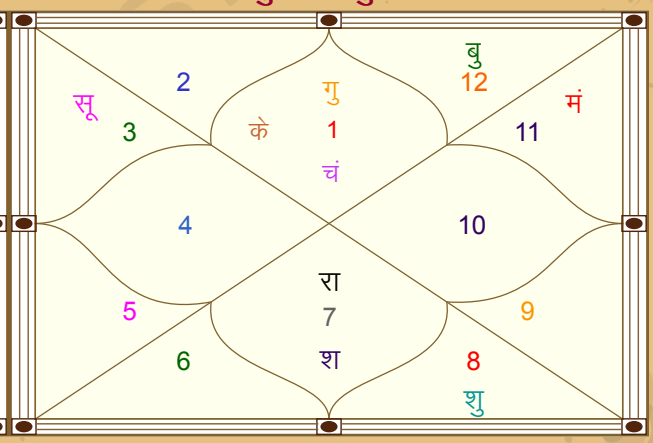

भाग्यविचारः सप्तमांश कुंडली

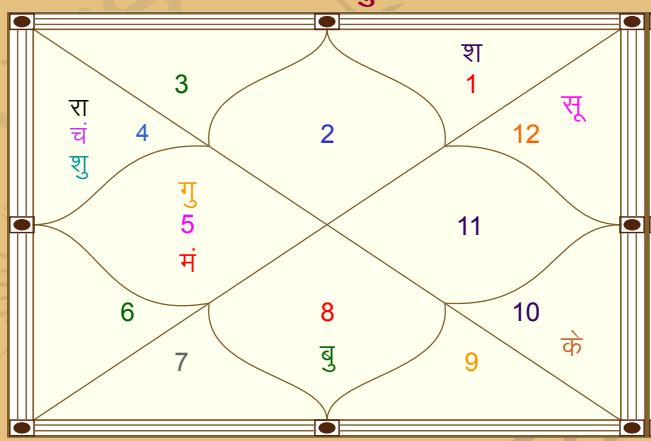

भाग्यविचारः सप्तमांश कुंडली

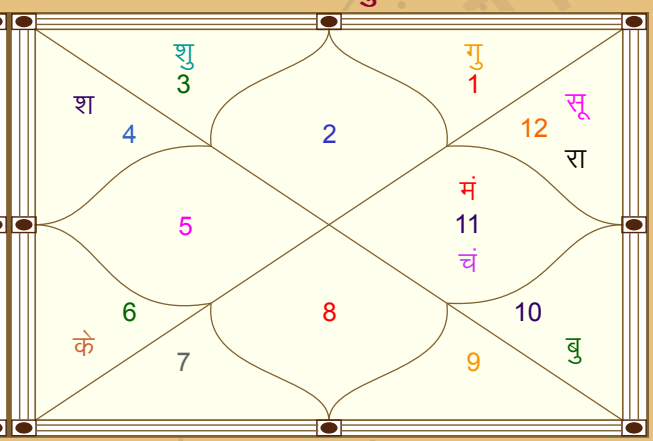

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

Email: info@duastro.com | www.duastro.com | Contact: +91-9891911557

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

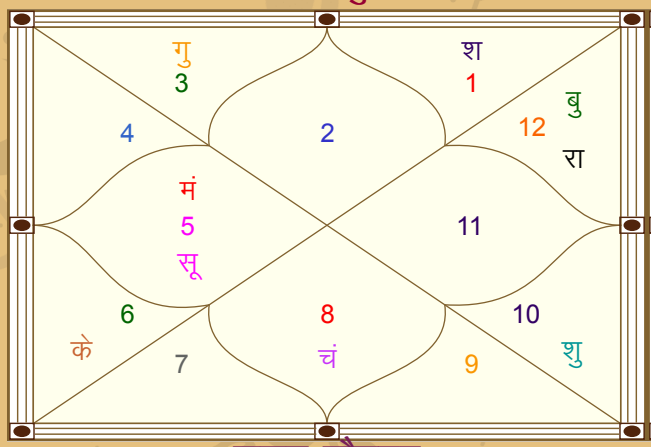

नवमांश कुंडली

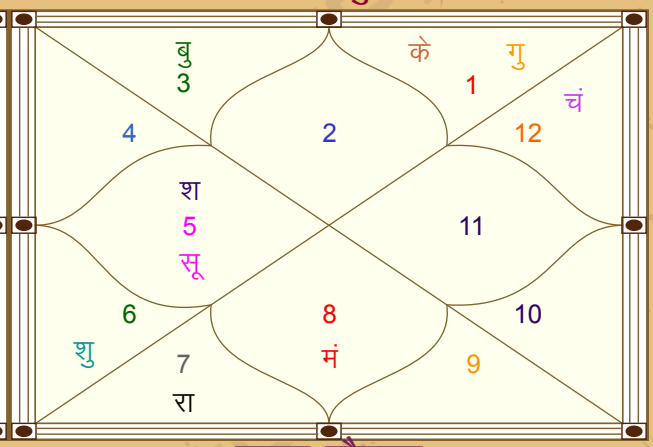

कलत्र सौख्यम दशमांश कुंडली

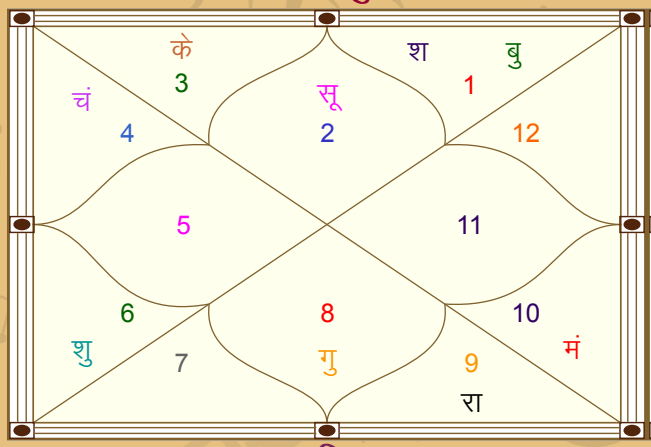

कलत्र सौख्यम दशमांश कुंडली

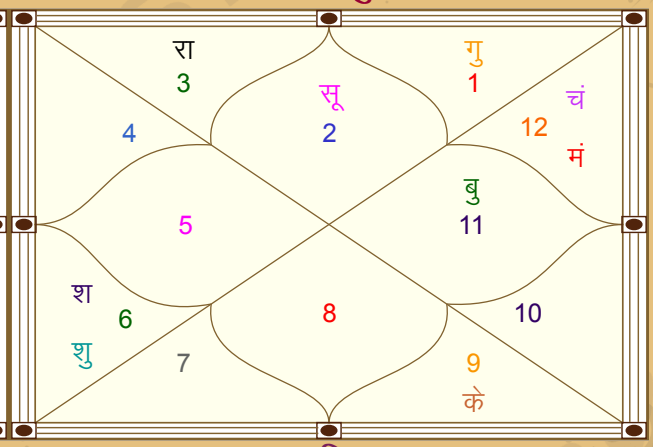

राज्यविचारः द्वादशांश कुंडली

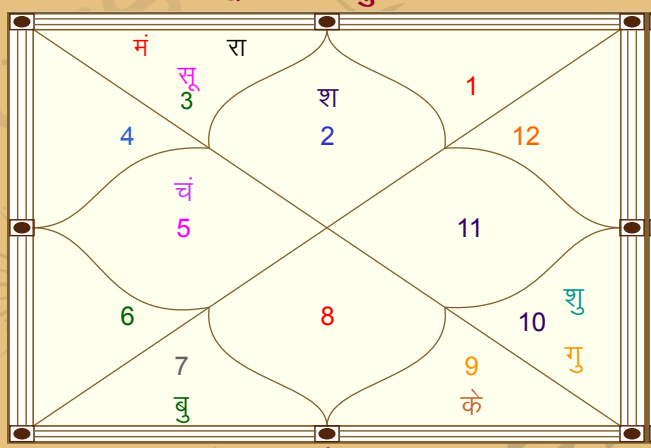

राज्यविचारः द्वादशांश कुंडली

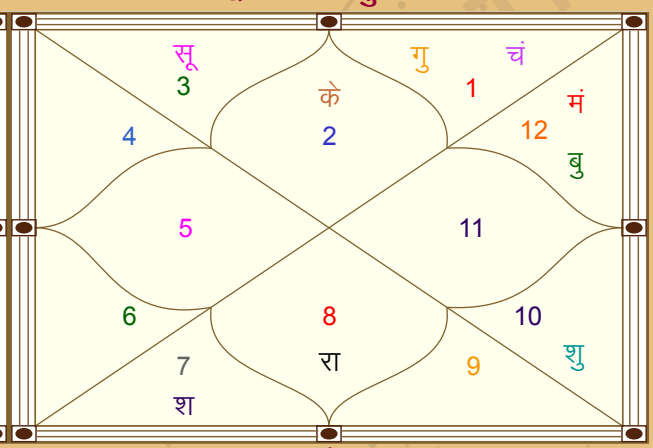

पितृसौख्यम

पितृसौख्यम

Duastro Sample Duastro Sample

षोडशवर्ग चक्र

षोडशांश कुंडली

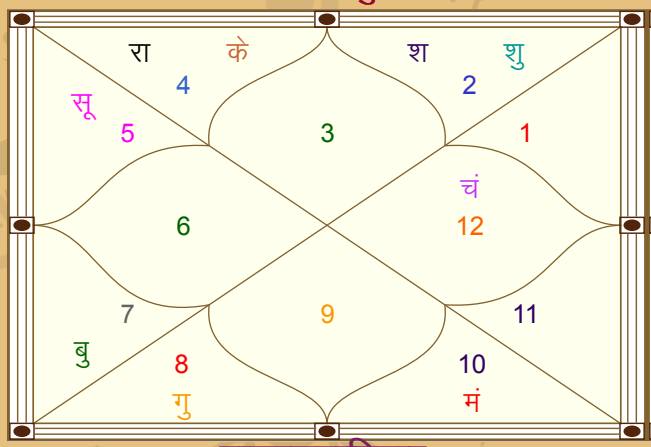

षोडशांश कुंडली

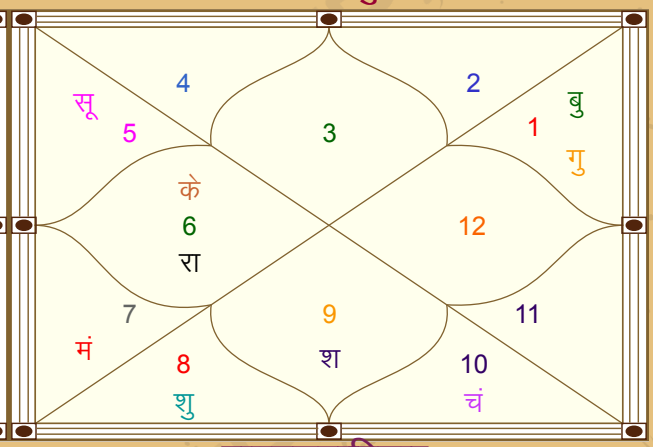

वाहनसुखविचारः त्रिंशांश कुंडली

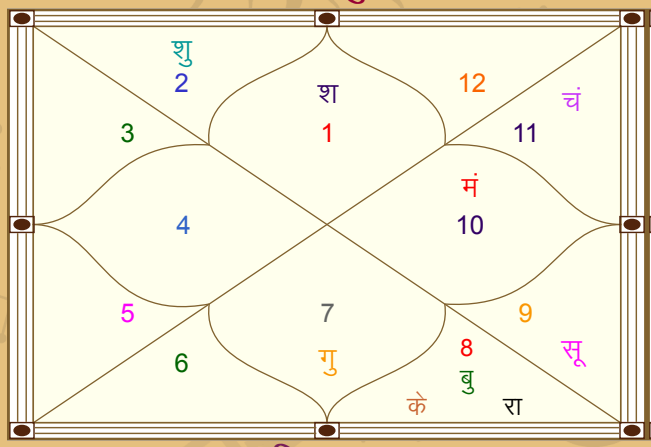

वाहनसुखविचारः त्रिंशांश कुंडली

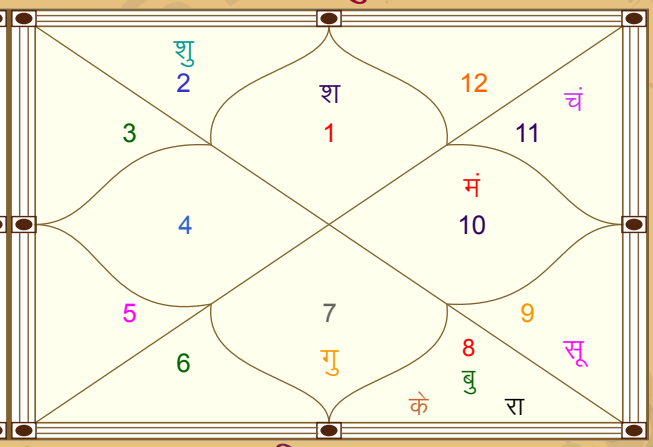

अरिष्टज्ञानम् षष्ट्यंश कुंडली

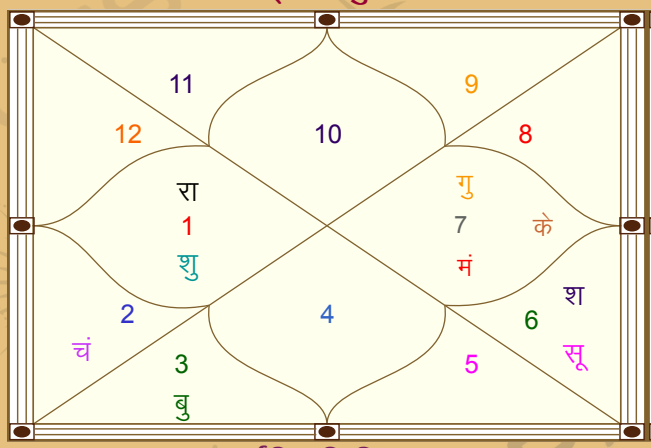

अरिष्टज्ञानम् षष्ट्यंश कुंडली

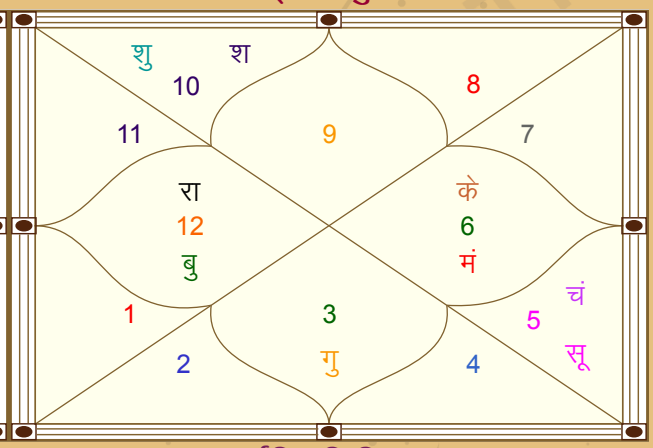

सर्वास्थितिविचारः

सर्वास्थितिविचारः

Email: info@duastro.com | www.duastro.com | Contact: +91-9891911557

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	–––	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	–––	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	–––	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	–––	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	–––	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	–––	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	–––	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	–––	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	–––

पंचधा मैत्री - Duastro Sample

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	–––	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम
चंद्र	सम	–––	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	–––	सम	सम	शत्रु	शत्रु	सम	सम
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	मित्र	–––	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	अतिमित्र	सम	सम	सम	–––	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	अधिशत्रु	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	–––	अतिमित्र	सम	सम
शनि	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	अतिमित्र	–––	अतिमित्र	सम
राहु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	शत्रु	सम	अतिमित्र	–––	अधिशत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	मित्र	सम	सम	अधिशत्रु	–––

पंचधा मैत्री - Duastro Sample

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	–––	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम
चंद्र	अतिमित्र	–––	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	सम
मंगल	अतिमित्र	सम	–––	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	सम	मित्र	–––	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	सम	सम	अतिमित्र	अधिशत्रु	–––	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	–––	सम	सम	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	सम	–––	अतिमित्र	सम
राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	सम	अतिमित्र	–––	अधिशत्रु
केतु	सम	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	–––

Duastro Sample Duastro Sample

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	4
मंगल	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
चंद्र	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	4
लग्न	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	6
कुल	**5**	**4**	**2**	**5**	**4**	**2**	**5**	**7**	**3**	**4**	**5**	**2**	**48**

सूर्य का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
गुरु	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	4
लग्न	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	6
कुल	**5**	**3**	**5**	**4**	**3**	**4**	**2**	**4**	**5**	**5**	**5**	**3**	**48**

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
गुरु	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
मंगल	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	0	6
सूर्य	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	6
शुक्र	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	7
बुध	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	4
कुल	**6**	**3**	**4**	**6**	**3**	**5**	**2**	**3**	**7**	**4**	**2**	**4**	**49**

चंद्र का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
गुरु	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
मंगल	0	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	6
शुक्र	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	4
कुल	**4**	**2**	**3**	**3**	**6**	**4**	**4**	**3**	**6**	**6**	**3**	**5**	**49**

मंगल का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कुल
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	7
गुरु	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	5
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	4
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
चंद्र	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	3
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	5
कुल	**4**	**3**	**4**	**4**	**4**	**3**	**2**	**6**	**1**	**3**	**3**	**2**	**39**

मंगल का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	7
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	5
शुक्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
बुध	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
चंद्र	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	3
लग्न	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
कुल	**6**	**3**	**5**	**3**	**2**	**1**	**2**	**5**	**4**	**2**	**3**	**3**	**39**

बुध का अष्टकवर्ग

	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	8
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
मंगल	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
सूर्य	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	5
शुक्र	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	6
लग्न	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	7
कुल	**6**	**3**	**6**	**3**	**4**	**7**	**5**	**1**	**6**	**3**	**6**	**4**	**54**

बुध का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
गुरु	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	4
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	6
लग्न	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	7
कुल	**4**	**4**	**6**	**4**	**4**	**6**	**1**	**4**	**4**	**5**	**4**	**8**	**54**

Email: info@duastro.com | www.duastro.com | Contact: +91-9891911557

Duastro Sample Duastro Sample

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

गुरू का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
सूर्य	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	9
शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	6
बुध	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	5
लग्न	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	9
कुल	**6**	**5**	**5**	**3**	**4**	**5**	**5**	**7**	**5**	**3**	**6**	**2**	**56**

गुरू का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
सूर्य	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	9
शुक्र	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	6
बुध	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	5
लग्न	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9
कुल	**5**	**4**	**4**	**4**	**7**	**6**	**4**	**3**	**5**	**4**	**5**	**5**	**56**

शुक्र का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	7
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	5
मंगल	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	5
चंद्र	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	9
लग्न	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	8
कुल	**4**	**5**	**2**	**4**	**4**	**4**	**6**	**5**	**4**	**4**	**6**	**4**	**52**

शुक्र का अष्टकवर्ग

	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	कुल
शनि	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	7
गुरु	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	5
मंगल	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चंद्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	9
लग्न	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	8
कुल	**6**	**6**	**5**	**6**	**1**	**3**	**4**	**4**	**5**	**6**	**2**	**4**	**52**

शनि का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
शुक्र	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	3
बुध	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	6
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	3
लग्न	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	6
कुल	**3**	**0**	**7**	**5**	**4**	**4**	**2**	**3**	**3**	**4**	**3**	**1**	**39**

शनि का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	6
सूर्य	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
शुक्र	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	3
बुध	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	6
चंद्र	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	3
लग्न	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	6
कुल	**3**	**1**	**4**	**4**	**4**	**6**	**3**	**2**	**3**	**3**	**3**	**3**	**39**

लग्न का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	6
गुरु	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	9
मंगल	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
सूर्य	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
चंद्र	1	1	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	**4**	**4**	**5**	**3**	**4**	**6**	**2**	**5**	**2**	**3**	**7**	**4**	**49**

लग्न का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	6
गुरु	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9
मंगल	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	5
सूर्य	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	7
बुध	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	**3**	**3**	**3**	**6**	**2**	**6**	**3**	**3**	**5**	**5**	**6**	**4**	**49**

Email: info@duastro.com | www.duastro.com | Contact: +91-9891911557

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

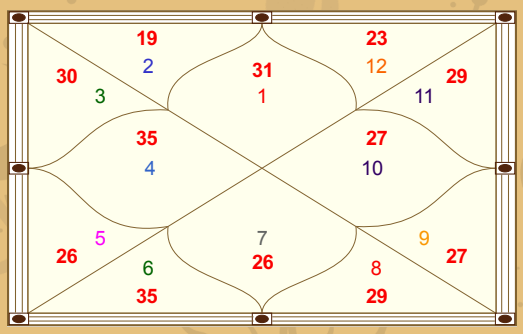

सर्वाष्टकवर्ग

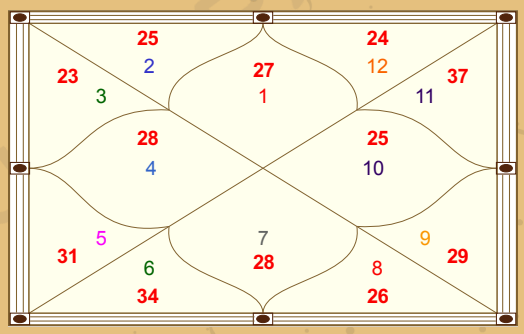

Duastro Sample

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	0	7	5	4	4	2	3	3	4	3	1	39
गुरु	5	3	4	5	5	7	5	3	6	2	6	5	56
मंगल	6	1	3	3	2	4	3	4	4	4	3	2	39
सूर्य	4	2	5	7	3	4	5	2	5	4	2	5	48
शुक्र	4	4	4	6	5	4	4	6	4	4	5	2	52
बुध	7	5	1	6	3	6	4	6	3	6	3	4	54
चंद्र	2	4	6	3	4	6	3	5	2	3	7	4	49
बिन्दु	**31**	**19**	**30**	**35**	**26**	**35**	**26**	**29**	**27**	**27**	**29**	**23**	**337**
रेखा	**25**	**37**	**26**	**21**	**30**	**21**	**30**	**27**	**29**	**29**	**27**	**33**	**335**

Duastro Sample

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	1	4	4	4	6	3	2	3	3	3	3	39
गुरु	5	4	4	4	7	6	4	3	5	4	5	5	56
मंगल	5	3	2	1	2	5	4	2	3	3	6	3	39
सूर्य	3	4	2	4	5	5	5	3	5	3	5	4	48
शुक्र	3	4	4	5	6	2	4	6	6	5	6	1	52
बुध	4	6	1	4	4	5	4	8	4	4	6	4	54
चंद्र	4	3	6	6	3	5	4	2	3	3	6	4	49
बिन्दु	**27**	**25**	**23**	**28**	**31**	**34**	**28**	**26**	**29**	**25**	**37**	**24**	**337**
रेखा	**29**	**31**	**33**	**28**	**25**	**22**	**28**	**30**	**27**	**31**	**19**	**32**	**335**

शोध्य पिंड - Duastro Sample

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	122	141	96	105	76	69	133
ग्रह पिंड	60	89	85	65	65	30	105
शोध्य पिंड	182	230	181	170	141	99	238

शोध्य पिंड - Duastro Sample

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	106	69	118	113	69	160	68
ग्रह पिंड	59	31	104	83	8	81	0
शोध्य पिंड	165	100	222	196	77	241	68

Duastro Sample Duastro Sample

विंशोत्तरी दशा

मंगल 0 वर्ष 5 मास 30 दिन

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
01/01/1999		02/07/1999		02/07/2017	
02/07/1999		02/07/2017		02/07/2033	
	00/00/0000	राहु	15/03/2002	गुरु	20/08/2019
	00/00/0000	गुरु	07/08/2004	शनि	02/03/2022
	00/00/0000	शनि	14/06/2007	बुध	07/06/2024
	00/00/0000	बुध	01/01/2010	केतु	14/05/2025
	00/00/0000	केतु	19/01/2011	शुक्र	13/01/2028
	00/00/0000	शुक्र	19/01/2014	सूर्य	31/10/2028
	00/00/0000	सूर्य	14/12/2014	चंद्र	02/03/2030
	01/01/1999	चंद्र	13/06/2016	मंगल	06/02/2031
चंद्र	02/07/1999	मंगल	02/07/2017	राहु	02/07/2033

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
02/07/2033		02/07/2052		02/07/2069	
02/07/2052		02/07/2069		02/07/2076	
शनि	05/07/2036	बुध	28/11/2054	केतु	28/11/2069
बुध	15/03/2039	केतु	26/11/2055	शुक्र	28/01/2071
केतु	23/04/2040	शुक्र	25/09/2058	सूर्य	05/06/2071
शुक्र	23/06/2043	सूर्य	02/08/2059	चंद्र	04/01/2072
सूर्य	04/06/2044	चंद्र	31/12/2060	मंगल	01/06/2072
चंद्र	04/01/2046	मंगल	29/12/2061	राहु	20/06/2073
मंगल	12/02/2047	राहु	17/07/2064	गुरु	27/05/2074
राहु	19/12/2049	गुरु	23/10/2066	शनि	05/07/2075
गुरु	02/07/2052	शनि	02/07/2069	बुध	02/07/2076

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
02/07/2076		02/07/2096		03/07/2102	
02/07/2096		03/07/2102		03/07/2112	
शुक्र	01/11/2079	सूर्य	19/10/2096	चंद्र	04/05/2103
सूर्य	31/10/2080	चंद्र	20/04/2097	मंगल	03/12/2103
चंद्र	02/07/2082	मंगल	26/08/2097	राहु	02/06/2105
मंगल	01/09/2083	राहु	20/07/2098	गुरु	02/10/2106
राहु	01/09/2086	गुरु	09/05/2099	शनि	03/05/2108
गुरु	02/05/2089	शनि	21/04/2100	बुध	02/10/2109
शनि	02/07/2092	बुध	25/02/2101	केतु	03/05/2110
बुध	03/05/2095	केतु	03/07/2101	शुक्र	02/01/2112
केतु	02/07/2096	शुक्र	03/07/2102	सूर्य	03/07/2112

राहु 3 वर्ष 8 मास 30 दिन

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
01/01/2000		02/10/2003		02/10/2019	
02/10/2003		02/10/2019		01/10/2038	
	00/00/0000	गुरु	19/11/2005	शनि	04/10/2022
	00/00/0000	शनि	01/06/2008	बुध	14/06/2025
	00/00/0000	बुध	07/09/2010	केतु	23/07/2026
	00/00/0000	केतु	14/08/2011	शुक्र	22/09/2029
	01/01/2000	शुक्र	14/04/2014	सूर्य	04/09/2030
शुक्र	20/04/2000	सूर्य	31/01/2015	चंद्र	04/04/2032
सूर्य	14/03/2001	चंद्र	01/06/2016	मंगल	14/05/2033
चंद्र	13/09/2002	मंगल	08/05/2017	राहु	20/03/2036
मंगल	02/10/2003	राहु	02/10/2019	गुरु	01/10/2038

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
01/10/2038		02/10/2055		01/10/2062	
02/10/2055		01/10/2062		01/10/2082	
बुध	27/02/2041	केतु	28/02/2056	शुक्र	31/01/2066
केतु	24/02/2042	शुक्र	29/04/2057	सूर्य	31/01/2067
शुक्र	25/12/2044	सूर्य	04/09/2057	चंद्र	01/10/2068
सूर्य	01/11/2045	चंद्र	05/04/2058	मंगल	01/12/2069
चंद्र	02/04/2047	मंगल	01/09/2058	राहु	01/12/2072
मंगल	29/03/2048	राहु	19/09/2059	गुरु	02/08/2075
राहु	17/10/2050	गुरु	25/08/2060	शनि	01/10/2078
गुरु	22/01/2053	शनि	04/10/2061	बुध	01/08/2081
शनि	02/10/2055	बुध	01/10/2062	केतु	01/10/2082

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
01/10/2082		01/10/2088		01/10/2098	
01/10/2088		01/10/2098		02/10/2105	
सूर्य	19/01/2083	चंद्र	01/08/2089	मंगल	28/02/2099
चंद्र	21/07/2083	मंगल	02/03/2090	राहु	18/03/2100
मंगल	25/11/2083	राहु	01/09/2091	गुरु	22/02/2101
राहु	19/10/2084	गुरु	31/12/2092	शनि	03/04/2102
गुरु	07/08/2085	शनि	02/08/2094	बुध	31/03/2103
शनि	20/07/2086	बुध	01/01/2096	केतु	27/08/2103
बुध	27/05/2087	केतु	01/08/2096	शुक्र	26/10/2104
केतु	02/10/2087	शुक्र	02/04/2098	सूर्य	03/03/2105
शुक्र	01/10/2088	सूर्य	01/10/2098	चंद्र	02/10/2105

Email: info@duastro.com | www.duastro.com | Contact: +91-9891911557

Duastro Sample Duastro Sample

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
07/06/2024		14/05/2025		13/01/2028	
14/05/2025		13/01/2028		31/10/2028	
केतु	27/06/2024	शुक्र	24/10/2025	सूर्य	28/01/2028
शुक्र	23/08/2024	सूर्य	11/12/2025	चंद्र	21/02/2028
सूर्य	09/09/2024	चंद्र	02/03/2026	मंगल	09/03/2028
चंद्र	07/10/2024	मंगल	28/04/2026	राहु	22/04/2028
मंगल	27/10/2024	राहु	21/09/2026	गुरु	31/05/2028
राहु	17/12/2024	गुरु	29/01/2027	शनि	16/07/2028
गुरु	01/02/2025	शनि	02/07/2027	बुध	27/08/2028
शनि	27/03/2025	बुध	17/11/2027	केतु	13/09/2028
बुध	14/05/2025	केतु	13/01/2028	शुक्र	31/10/2028

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र	
04/10/2022		14/06/2025		23/07/2026	
14/06/2025		23/07/2026		22/09/2029	
बुध	21/02/2023	केतु	07/07/2025	शुक्र	01/02/2027
केतु	19/04/2023	शुक्र	13/09/2025	सूर्य	31/03/2027
शुक्र	30/09/2023	सूर्य	03/10/2025	चंद्र	05/07/2027
सूर्य	18/11/2023	चंद्र	06/11/2025	मंगल	11/09/2027
चंद्र	08/02/2024	मंगल	29/11/2025	राहु	02/03/2028
मंगल	05/04/2024	राहु	29/01/2026	गुरु	04/08/2028
राहु	31/08/2024	गुरु	24/03/2026	शनि	03/02/2029
गुरु	09/01/2025	शनि	27/05/2026	बुध	17/07/2029
शनि	14/06/2025	बुध	23/07/2026	केतु	22/09/2029

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
31/10/2028		02/03/2030		06/02/2031	
02/03/2030		06/02/2031		02/07/2033	
चंद्र	11/12/2028	मंगल	22/03/2030	राहु	18/06/2031
मंगल	08/01/2029	राहु	12/05/2030	गुरु	13/10/2031
राहु	22/03/2029	गुरु	27/06/2030	शनि	28/02/2032
गुरु	26/05/2029	शनि	20/08/2030	बुध	02/07/2032
शनि	12/08/2029	बुध	07/10/2030	केतु	22/08/2032
बुध	19/10/2029	केतु	27/10/2030	शुक्र	15/01/2033
केतु	17/11/2029	शुक्र	23/12/2030	सूर्य	28/02/2033
शुक्र	06/02/2030	सूर्य	09/01/2031	चंद्र	12/05/2033
सूर्य	02/03/2030	चंद्र	06/02/2031	मंगल	02/07/2033

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
22/09/2029		04/09/2030		04/04/2032	
04/09/2030		04/04/2032		14/05/2033	
सूर्य	09/10/2029	चंद्र	22/10/2030	मंगल	28/04/2032
चंद्र	07/11/2029	मंगल	25/11/2030	राहु	28/06/2032
मंगल	28/11/2029	राहु	20/02/2031	गुरु	21/08/2032
राहु	19/01/2030	गुरु	08/05/2031	शनि	24/10/2032
गुरु	06/03/2030	शनि	07/08/2031	बुध	20/12/2032
शनि	30/04/2030	बुध	28/10/2031	केतु	13/01/2033
बुध	18/06/2030	केतु	01/12/2031	शुक्र	21/03/2033
केतु	08/07/2030	शुक्र	06/03/2032	सूर्य	10/04/2033
शुक्र	04/09/2030	सूर्य	04/04/2032	चंद्र	14/05/2033

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
02/07/2033		05/07/2036		15/03/2039	
05/07/2036		15/03/2039		23/04/2040	
शनि	23/12/2033	बुध	21/11/2036	केतु	07/04/2039
बुध	28/05/2034	केतु	17/01/2037	शुक्र	14/06/2039
केतु	31/07/2034	शुक्र	30/06/2037	सूर्य	04/07/2039
शुक्र	30/01/2035	सूर्य	18/08/2037	चंद्र	07/08/2039
सूर्य	26/03/2035	चंद्र	08/11/2037	मंगल	31/08/2039
चंद्र	25/06/2035	मंगल	05/01/2038	राहु	30/10/2039
मंगल	28/08/2035	राहु	01/06/2038	गुरु	23/12/2039
राहु	09/02/2036	गुरु	10/10/2038	शनि	25/02/2040
गुरु	05/07/2036	शनि	15/03/2039	बुध	23/04/2040

शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
14/05/2033		20/03/2036		01/10/2038	
20/03/2036		01/10/2038		27/02/2041	
राहु	17/10/2033	गुरु	21/07/2036	बुध	03/02/2039
गुरु	05/03/2034	शनि	15/12/2036	केतु	26/03/2039
शनि	17/08/2034	बुध	25/04/2037	शुक्र	20/08/2039
बुध	11/01/2035	केतु	18/06/2037	सूर्य	03/10/2039
केतु	13/03/2035	शुक्र	19/11/2037	चंद्र	15/12/2039
शुक्र	03/09/2035	सूर्य	05/01/2038	मंगल	05/02/2040
सूर्य	25/10/2035	चंद्र	23/03/2038	राहु	16/06/2040
चंद्र	19/01/2036	मंगल	16/05/2038	गुरु	11/10/2040
मंगल	20/03/2036	राहु	01/10/2038	शनि	27/02/2041

Email: info@duastro.com | www.duastro.com | Contact: +91-9891911557

Duastro Sample Duastro Sample

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
23/04/2040		23/06/2043		04/06/2044	
23/06/2043		04/06/2044		04/01/2046	
शुक्र	01/11/2040	सूर्य	11/07/2043	चंद्र	22/07/2044
सूर्य	29/12/2040	चंद्र	09/08/2043	मंगल	25/08/2044
चंद्र	05/04/2041	मंगल	29/08/2043	राहु	20/11/2044
मंगल	11/06/2041	राहु	20/10/2043	गुरु	05/02/2045
राहु	02/12/2041	गुरु	05/12/2043	शनि	08/05/2045
गुरु	05/05/2042	शनि	29/01/2044	बुध	29/07/2045
शनि	04/11/2042	बुध	18/03/2044	केतु	31/08/2045
बुध	17/04/2043	केतु	07/04/2044	शुक्र	06/12/2045
केतु	23/06/2043	शुक्र	04/06/2044	सूर्य	04/01/2046

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
27/02/2041		24/02/2042		25/12/2044	
24/02/2042		25/12/2044		01/11/2045	
केतु	20/03/2041	शुक्र	16/08/2042	सूर्य	10/01/2045
शुक्र	20/05/2041	सूर्य	06/10/2042	चंद्र	05/02/2045
सूर्य	07/06/2041	चंद्र	01/01/2043	मंगल	23/02/2045
चंद्र	07/07/2041	मंगल	02/03/2043	राहु	10/04/2045
मंगल	28/07/2041	राहु	04/08/2043	गुरु	22/05/2045
राहु	20/09/2041	गुरु	20/12/2043	शनि	10/07/2045
गुरु	08/11/2041	शनि	01/06/2044	बुध	23/08/2045
शनि	04/01/2042	बुध	26/10/2044	केतु	10/09/2045
बुध	24/02/2042	केतु	25/12/2044	शुक्र	01/11/2045

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु	
04/01/2046		12/02/2047		19/12/2049	
12/02/2047		19/12/2049		02/07/2052	
मंगल	27/01/2046	राहु	19/07/2047	गुरु	22/04/2050
राहु	29/03/2046	गुरु	04/12/2047	शनि	15/09/2050
गुरु	22/05/2046	शनि	17/05/2048	बुध	24/01/2051
शनि	25/07/2046	बुध	12/10/2048	केतु	19/03/2051
बुध	20/09/2046	केतु	11/12/2048	शुक्र	21/08/2051
केतु	14/10/2046	शुक्र	03/06/2049	सूर्य	06/10/2051
शुक्र	20/12/2046	सूर्य	25/07/2049	चंद्र	22/12/2051
सूर्य	10/01/2047	चंद्र	20/10/2049	मंगल	14/02/2052
चंद्र	12/02/2047	मंगल	19/12/2049	राहु	02/07/2052

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
01/11/2045		02/04/2047		29/03/2048	
02/04/2047		29/03/2048		17/10/2050	
चंद्र	14/12/2045	मंगल	23/04/2047	राहु	16/08/2048
मंगल	13/01/2046	राहु	17/06/2047	गुरु	18/12/2048
राहु	01/04/2046	गुरु	04/08/2047	शनि	15/05/2049
गुरु	09/06/2046	शनि	30/09/2047	बुध	24/09/2049
शनि	29/08/2046	बुध	20/11/2047	केतु	17/11/2049
बुध	11/11/2046	केतु	12/12/2047	शुक्र	21/04/2050
केतु	11/12/2046	शुक्र	10/02/2048	सूर्य	07/06/2050
शुक्र	07/03/2047	सूर्य	28/02/2048	चंद्र	23/08/2050
सूर्य	02/04/2047	चंद्र	29/03/2048	मंगल	17/10/2050

बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र	
02/07/2052		28/11/2054		26/11/2055	
28/11/2054		26/11/2055		25/09/2058	
बुध	03/11/2052	केतु	19/12/2054	शुक्र	16/05/2056
केतु	25/12/2052	शुक्र	18/02/2055	सूर्य	07/07/2056
शुक्र	20/05/2053	सूर्य	08/03/2055	चंद्र	01/10/2056
सूर्य	03/07/2053	चंद्र	07/04/2055	मंगल	30/11/2056
चंद्र	14/09/2053	मंगल	28/04/2055	राहु	05/05/2057
मंगल	05/11/2053	राहु	22/06/2055	गुरु	20/09/2057
राहु	17/03/2054	गुरु	09/08/2055	शनि	02/03/2058
गुरु	12/07/2054	शनि	05/10/2055	बुध	27/07/2058
शनि	28/11/2054	बुध	26/11/2055	केतु	25/09/2058

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु	
17/10/2050		22/01/2053		02/10/2055	
22/01/2053		02/10/2055		28/02/2056	
गुरु	04/02/2051	शनि	26/06/2053	केतु	10/10/2055
शनि	15/06/2051	बुध	12/11/2053	शुक्र	04/11/2055
बुध	10/10/2051	केतु	09/01/2054	सूर्य	12/11/2055
केतु	28/11/2051	शुक्र	22/06/2054	चंद्र	24/11/2055
शुक्र	14/04/2052	सूर्य	10/08/2054	मंगल	03/12/2055
सूर्य	25/05/2052	चंद्र	31/10/2054	राहु	25/12/2055
चंद्र	02/08/2052	मंगल	27/12/2054	गुरु	14/01/2056
मंगल	19/09/2052	राहु	24/05/2055	शनि	07/02/2056
राहु	22/01/2053	गुरु	02/10/2055	बुध	28/02/2056

Email: info@duastro.com | www.duastro.com | Contact: +91-9891911557

योगिनी दशा

संकटा 0 वर्ष 6 मास 25 दिन

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
01/01/1999		28/07/1999		28/07/2000	
28/07/1999		28/07/2000		28/07/2002	
	00/00/0000	मंग	08/08/1999	पिंग	06/09/2000
	00/00/0000	पिंग	28/08/1999	धांय	06/11/2000
	00/00/0000	धांय	27/09/1999	भ्राम	26/01/2001
	00/00/0000	भ्राम	07/11/1999	भद्रि	08/05/2001
	00/00/0000	भद्रि	28/12/1999	उल्क	07/09/2001
	00/00/0000	उल्क	27/02/2000	सिद्ध	27/01/2002
	01/01/1999	सिद्ध	08/05/2000	संक	08/07/2002
सिद्ध	28/07/1999	संक	28/07/2000	मंग	28/07/2002

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
28/07/2002		28/07/2005		28/07/2009	
28/07/2005		28/07/2009		28/07/2014	
धांय	28/10/2002	भ्राम	06/01/2006	भद्रि	08/04/2010
भ्राम	26/02/2003	भद्रि	28/07/2006	उल्क	06/02/2011
भद्रि	28/07/2003	उल्क	29/03/2007	सिद्ध	27/01/2012
उल्क	27/01/2004	सिद्ध	07/01/2008	संक	08/03/2013
सिद्ध	27/08/2004	संक	26/11/2008	मंग	28/04/2013
संक	28/04/2005	मंग	06/01/2009	पिंग	07/08/2013
मंग	28/05/2005	पिंग	28/03/2009	धांय	06/01/2014
पिंग	28/07/2005	धांय	28/07/2009	भ्राम	28/07/2014

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
28/07/2014		28/07/2020		28/07/2027	
28/07/2020		28/07/2027		28/07/2035	
उल्क	28/07/2015	सिद्ध	07/12/2021	संक	08/05/2029
सिद्ध	27/09/2016	संक	28/06/2023	मंग	28/07/2029
संक	27/01/2018	मंग	07/09/2023	पिंग	06/01/2030
मंग	28/03/2018	पिंग	27/01/2024	धांय	07/09/2030
पिंग	28/07/2018	धांय	27/08/2024	भ्राम	28/07/2031
धांय	27/01/2019	भ्राम	07/06/2025	भद्रि	06/09/2032
भ्राम	27/09/2019	भद्रि	28/05/2026	उल्क	06/01/2034
भद्रि	28/07/2020	उल्क	28/07/2027	सिद्ध	28/07/2035

पिंगला 0 वर्ष 4 मास 30 दिन

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
01/01/2000		01/06/2000		02/06/2003	
01/06/2000		02/06/2003		02/06/2007	
	00/00/0000	धांय	01/09/2000	भ्राम	11/11/2003
	00/00/0000	भ्राम	31/12/2000	भद्रि	01/06/2004
	00/00/0000	भद्रि	01/06/2001	उल्क	31/01/2005
	00/00/0000	उल्क	01/12/2001	सिद्ध	11/11/2005
	00/00/0000	सिद्ध	02/07/2002	संक	01/10/2006
	01/01/2000	संक	03/03/2003	मंग	11/11/2006
संक	12/05/2000	मंग	02/04/2003	पिंग	31/01/2007
मंग	01/06/2000	पिंग	02/06/2003	धांय	02/06/2007

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
02/06/2007		01/06/2012		02/06/2018	
01/06/2012		02/06/2018		01/06/2025	
भद्रि	11/02/2008	उल्क	01/06/2013	सिद्ध	12/10/2019
उल्क	11/12/2008	सिद्ध	02/08/2014	संक	02/05/2021
सिद्ध	01/12/2009	संक	02/12/2015	मंग	12/07/2021
संक	11/01/2011	मंग	31/01/2016	पिंग	01/12/2021
मंग	03/03/2011	पिंग	01/06/2016	धांय	02/07/2022
पिंग	12/06/2011	धांय	01/12/2016	भ्राम	12/04/2023
धांय	11/11/2011	भ्राम	01/08/2017	भद्रि	01/04/2024
भ्राम	01/06/2012	भद्रि	02/06/2018	उल्क	01/06/2025

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
01/06/2025		01/06/2033		02/06/2034	
01/06/2033		02/06/2034		01/06/2036	
संक	13/03/2027	मंग	12/06/2033	पिंग	12/07/2034
मंग	02/06/2027	पिंग	02/07/2033	धांय	11/09/2034
पिंग	11/11/2027	धांय	01/08/2033	भ्राम	01/12/2034
धांय	12/07/2028	भ्राम	11/09/2033	भद्रि	13/03/2035
भ्राम	01/06/2029	भद्रि	01/11/2033	उल्क	13/07/2035
भद्रि	12/07/2030	उल्क	01/01/2034	सिद्ध	02/12/2035
उल्क	11/11/2031	सिद्ध	13/03/2034	संक	12/05/2036
सिद्ध	01/06/2033	संक	02/06/2034	मंग	01/06/2036

योगिनी दशा

संकटा 0 वर्ष 6 मास 25 दिन

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
28/07/2035		28/07/2036		28/07/2038	
28/07/2036		28/07/2038		28/07/2041	
मंग	08/08/2035	पिंग	06/09/2036	धांय	28/10/2038
पिंग	28/08/2035	धांय	06/11/2036	भ्राम	26/02/2039
धांय	27/09/2035	भ्राम	26/01/2037	भद्रि	28/07/2039
भ्राम	07/11/2035	भद्रि	08/05/2037	उल्क	27/01/2040
भद्रि	28/12/2035	उल्क	07/09/2037	सिद्ध	27/08/2040
उल्क	27/02/2036	सिद्ध	27/01/2038	संक	28/04/2041
सिद्ध	08/05/2036	संक	08/07/2038	मंग	28/05/2041
संक	28/07/2036	मंग	28/07/2038	पिंग	28/07/2041

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
28/07/2041		28/07/2045		28/07/2050	
28/07/2045		28/07/2050		28/07/2056	
भ्राम	06/01/2042	भद्रि	08/04/2046	उल्क	28/07/2051
भद्रि	28/07/2042	उल्क	06/02/2047	सिद्ध	27/09/2052
उल्क	29/03/2043	सिद्ध	27/01/2048	संक	27/01/2054
सिद्ध	07/01/2044	संक	08/03/2049	मंग	28/03/2054
संक	26/11/2044	मंग	28/04/2049	पिंग	28/07/2054
मंग	06/01/2045	पिंग	07/08/2049	धांय	27/01/2055
पिंग	28/03/2045	धांय	06/01/2050	भ्राम	27/09/2055
धांय	28/07/2045	भ्राम	28/07/2050	भद्रि	28/07/2056

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
28/07/2056		28/07/2063		28/07/2071	
28/07/2063		28/07/2071		28/07/2072	
सिद्ध	07/12/2057	संक	08/05/2065	मंग	08/08/2071
संक	28/06/2059	मंग	28/07/2065	पिंग	28/08/2071
मंग	07/09/2059	पिंग	06/01/2066	धांय	27/09/2071
पिंग	27/01/2060	धांय	07/09/2066	भ्राम	07/11/2071
धांय	27/08/2060	भ्राम	28/07/2067	भद्रि	28/12/2071
भ्राम	07/06/2061	भद्रि	06/09/2068	उल्क	27/02/2072
भद्रि	28/05/2062	उल्क	06/01/2070	सिद्ध	08/05/2072
उल्क	28/07/2063	सिद्ध	28/07/2071	संक	28/07/2072

पिंगला 0 वर्ष 4 मास 30 दिन

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
01/06/2036		02/06/2039		02/06/2043	
02/06/2039		02/06/2043		01/06/2048	
धांय	01/09/2036	भ्राम	11/11/2039	भद्रि	11/02/2044
भ्राम	31/12/2036	भद्रि	01/06/2040	उल्क	11/12/2044
भद्रि	01/06/2037	उल्क	31/01/2041	सिद्ध	01/12/2045
उल्क	01/12/2037	सिद्ध	11/11/2041	संक	11/01/2047
सिद्ध	02/07/2038	संक	01/10/2042	मंग	03/03/2047
संक	03/03/2039	मंग	11/11/2042	पिंग	12/06/2047
मंग	02/04/2039	पिंग	31/01/2043	धांय	11/11/2047
पिंग	02/06/2039	धांय	02/06/2043	भ्राम	01/06/2048

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
01/06/2048		02/06/2054		01/06/2061	
02/06/2054		01/06/2061		01/06/2069	
उल्क	01/06/2049	सिद्ध	12/10/2055	संक	13/03/2063
सिद्ध	02/08/2050	संक	02/05/2057	मंग	02/06/2063
संक	02/12/2051	मंग	12/07/2057	पिंग	11/11/2063
मंग	31/01/2052	पिंग	01/12/2057	धांय	12/07/2064
पिंग	01/06/2052	धांय	02/07/2058	भ्राम	01/06/2065
धांय	01/12/2052	भ्राम	12/04/2059	भद्रि	12/07/2066
भ्राम	01/08/2053	भद्रि	01/04/2060	उल्क	11/11/2067
भद्रि	02/06/2054	उल्क	01/06/2061	सिद्ध	01/06/2069

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
01/06/2069		02/06/2070		01/06/2072	
02/06/2070		01/06/2072		02/06/2075	
मंग	12/06/2069	पिंग	12/07/2070	धांय	01/09/2072
पिंग	02/07/2069	धांय	11/09/2070	भ्राम	31/12/2072
धांय	01/08/2069	भ्राम	01/12/2070	भद्रि	01/06/2073
भ्राम	11/09/2069	भद्रि	13/03/2071	उल्क	01/12/2073
भद्रि	01/11/2069	उल्क	13/07/2071	सिद्ध	02/07/2074
उल्क	01/01/2070	सिद्ध	02/12/2071	संक	03/03/2075
सिद्ध	13/03/2070	संक	12/05/2072	मंग	02/04/2075
संक	02/06/2070	मंग	01/06/2072	पिंग	02/06/2075

Duastro Sample Duastro Sample

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

1	मूलांक	1
3	भाग्यांक	4
1, 4, 8, 9, 3	मित्र अंक	1, 4, 8, 9
5, 6	शत्रु अंक	3, 5, 6
19,28,37,46,55	शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
गुरु, रवि, मंगल	शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
गुरु, सूर्य, मंगल	शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
कन्या, कुम्भ	मित्र राशि	मकर, मिथुन
कर्क, धनु, कुम्भ	मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
गणेश	अनुकूल देवता	लक्ष्मी
मूंगा	शुभ रत्न	मूंगा
संगमूंगी	शुभ उपरत्न	संगमूंगी
पुखराज	भाग्य रत्न	पुखराज
ताम्र	शुभ धातु	ताम्र
रक्त	शुभ रंग	रक्त
दक्षिण	शुभ दिशा	दक्षिण
सूर्योदय के बाद	शुभ समय	सूर्योदय के बाद
केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन	दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
मल्का	दान अन्न	मल्का
घी	दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन–तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

Duastro Sample

जीवन रत्नः	मूंगा	शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
भाग्य रत्नः	पुखराज	धनार्जन, भाग्योदय, कम खर्च
कारक रत्नः	माणिक्य	भाग्योदय, सन्तति सुख

Duastro Sample

जीवन रत्नः	मूंगा	धनार्जन, स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
भाग्य रत्नः	पुखराज	स्वास्थ्य, भाग्योदय, कम खर्च
कारक रत्नः	माणिक्य	भाग्योदय, सन्तति सुख

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

Duastro Sample Duastro Sample

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता–पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	05/06/2000-22/07/2002
साढेसाती द्वितीय ढैया	22/07/2002-05/09/2004
साढेसाती तृतीय ढैया	05/09/2004-01/11/2006
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	09/09/2009-15/11/2011
अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/01/2020-21/07/2022

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/06/2000-22/07/2002
साढेसाती प्रथम ढैया	09/09/2009-15/11/2011
साढेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-02/11/2014
साढेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-19/01/2017
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	18/01/2020-21/07/2022

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	11/04/2030-25/05/2032
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/05/2032-06/07/2034
साढेसाती तृतीय ढैया	06/07/2034-20/08/2036
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/06/2039-06/03/2041
अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/07/2049-17/02/2052

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/04/2030-25/05/2032
साढेसाती प्रथम ढैया	29/06/2039-06/03/2041
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2041-02/12/2043
साढेसाती तृतीय ढैया	02/12/2043-29/11/2046
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/07/2049-17/02/2052

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	22/05/2059-05/07/2061
साढेसाती द्वितीय ढैया	05/07/2061-15/02/2064
साढेसाती तृतीय ढैया	15/02/2064-03/10/2065
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/08/2068-25/10/2070
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/01/2079-18/08/2081

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/05/2059-05/07/2061
साढेसाती प्रथम ढैया	21/08/2068-25/10/2070
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/10/2070-20/04/2073
साढेसाती तृतीय ढैया	20/04/2073-04/08/2076
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/01/2079-18/08/2081

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	धन
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	पराक्रम
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	सुख हानि
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	शत्रु व रोग
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	धन
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	शत्रु व रोग
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	दम्पति
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	दुर्घटना
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं–

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु–केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु–केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

द्य ए ए ए

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब–जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु–केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

Duastro Sample

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

Duastro Sample

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	शूद्र	1	1.00	––	जातीय कर्म
वश्य	मानव	मानव	2	2.00	––	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	––	भाग्य
योनि	सर्प	महिष	4	2.00	––	यौन विचार
मैत्री	बुध	शुक्र	5	5.00	––	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	––	सामाजिकता
भकूट	मिथुन	तुला	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	––	स्वास्थ्य / संतान
कुल :			**36**	**27.00**		

कुल : **27 / 36**

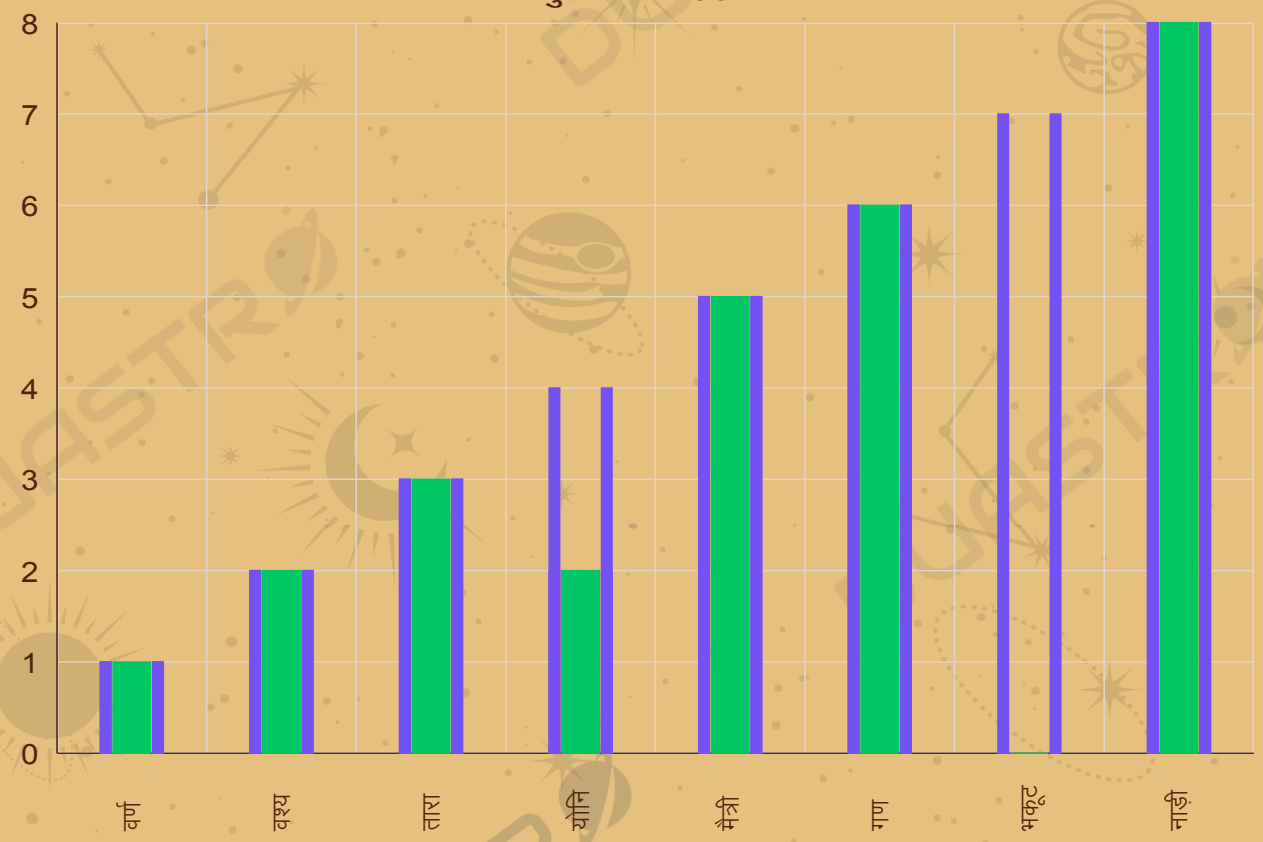

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

Duastro Sample का वर्ग मार्जार है तथा Duastro Sample का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Duastro Sample और Duastro Sample का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Duastro Sample मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है।

Duastro Sample मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

Duastro Sample तथा Duastro Sample में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

मेलापक फलित

स्वभाव

Duastro Sample की जन्म राशि वायुतत्व युक्त मिथुन राशि है तथा Duastro Sample की राशि वायु तत्व युक्त तुला राशि है। वायुतत्व की वायु तत्व से मित्रता एवं समानता नैसर्गिक रूप से होती है। अतः Duastro Sample और Duastro Sample में स्वभावगत समानताएं रहेंगी। अतः इनके संबधों में प्रगाढ़ता होगी जिससे Duastro Sample और Duastro Sample का दाम्पत्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। इस प्रकार यह मिलान उत्तम रहेगा

Duastro Sample का राशि स्वामी बुध तथा Duastro Sample का राशि स्वामी शुक्र परस्पर मित्र हैं। अतः Duastro Sample और Duastro Sample के प्रति परस्पर मतभेदों तथा विवादों की न्यूनता रहेगी तथा परस्पर गुणों की प्रशंसा करेंगे एवं दोषों की उपेक्षा करेंगें इस प्रकार से दोनों एक दूसरे को पूर्ण सुख, सहयोग एवं सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही समर्पण की भावना भी विद्यमान रहेगी जिससे दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

Duastro Sample और Duastro Sample की राशि एक दूसरे से पंचम एवं नवम भाव में पड़ती है। शास्त्रानुसार यह भकूट दोष है। अतः इसके प्रभाव से Duastro Sample ओर Duastro Sample के मध्य मतभेद उत्पन होगें तथा दोनों की स्वाभिमानी प्रवृति के कारण संबंधों में अल्प समय के लिए तनाव उत्पन हो सकता है परन्तु बुद्धिमता से ऐसी परिस्थितियों का सामना करके ये मतभेदों को दूर करने में समर्थ रहेंगे।

Duastro Sample एवं Duastro Sample दोनों का वश्य मानव है। अतः आपकी परस्पर अभिरूचियों में समानता रहेगी। साथ ही शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी समान आवश्यकताए होंगी जिससे कामसबंधों मे एक दूसरे को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रखने मे समर्थ रहेगें इससे Duastro Sample और Duastro Sample का दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा एवं संबधों मे मधुरता रहेगी।

Duastro Sample और Duastro Sample दोनों का वर्ण शुद्र है अतः दोनों की रूचि एवं कार्यक्षमता समान रहेगी फलतः कार्यक्षेत्र में यथोचित उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करेगें ।

धन

Duastro Sample का जन्म अतिमित्र तथा Duastro Sample का सम्पत नामक तारा में हुआ है। इसके प्रभाव से Duastro Sample एक धनवान तथा भाग्यशाली महिला होंगी तथा Duastro Sample के शुभ प्रभाव से उनकी आर्थिक स्थिति में नित्य वृद्धि होती रहेगी। भकूट का प्रभाव इनकी आर्थिक स्थिति पर सम रहेगा। अतः स्वपरिश्रम से ही इच्छित धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही मंगल का भी कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार क्नेंजतव

द्य ए ए ए

ँउचसम और Duastro Sample आरामदायक जीवन व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

Duastro Sample और Duastro Sample को लाटरी, सट्टे या अन्य स्रोतों से अनायास धन प्राप्ति की संभावना होगी। साथ ही विभिन्न प्रकार के भौतिक संसाधनों का वे उपभोग करने में सफलता प्राप्त करेंगे। इसके अतिरक्त वे जायदाद तथा आभूषण आदि को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे।

स्वास्थ्य

Duastro Sample की नाड़ी मध्य तथा Duastro Sample की नाड़ी अंत्य है। अतः दोनों की अलग अलग नाड़ियां होने के कारण ये नाड़ी दोष से मुक्त रहेंगे। इसके प्रभाव से Duastro Sample और Duastro Sample दोनों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा परिश्रम एवं पराक्रम से वे अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को यथा समय सम्पन्न करने में समर्थ रहेंगे। इससे दाम्पत्य जीवन में खुशहाली तथा सन्तुष्टि बनी रहेगी। साथ ही मंगल का भी किसी के स्वास्थ्य पर कोई दुष्प्रभाव नहीं रहेगा। अतः उत्तम दाम्पत्य जीवन को व्यतीत करने की दृष्टि से यह मिलान अनुकूल रहेगा तथा Duastro Sample और Duastro Sample सुख एवं आनंद पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से Duastro Sample और Duastro Sample का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त Duastro Sample और Duastro Sample के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में Duastro Sample के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन Duastro Sample को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में Duastro Sample को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से Duastro Sample और Duastro Sample सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्व वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार Duastro Sample और Duastro Sample का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल–सुश्री

Duastro Sample के अपने सास से संबध सामान्य ही रहेंगे तथा विशिष्ट मधुरता के भाव की समय समय पर न्यूनता का आभास होगा परन्तु आपसी सामंजस्य से किंचित अनुकूलता इसमें बनाए रखने में दोनों समर्थ रहेंगे। यदा कदा इनके मध्य मतभेद तथा तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह क्षणिक होगा एवं गंभीर नहीं होगा। साथ ही Duastro Sample सास को अपने माता के समान सेवा तथा सम्मान प्रदान करेंगी।

अपने विनम्र स्वभाव सामंजस्य की प्रवृति तथा सेवा भाव के कारण ससुर की प्रसन्नता एवं सन्तुष्टि अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। लेकिन देवर एवं ननदों से संबधों में तनाव रहेगा तथा आपस में आलोचना तथा प्रतिद्वन्दिता का भाव विद्यमान रहेगा परन्तु यदि Duastro Sample किंचित धैर्य एवं सामंजस्य से कार्य ले तो इनसे संबधों में मधुरता उत्पन्न हो सकती है तथा वे भी Duastro Sample को यथोचित सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे।

इस प्रकार सास ससुर का दृष्टि कोण Duastro Sample के प्रति सामान्यतया अच्छा रहेगा एवं परिवार के सदस्य के रूप में वे उसे स्वीकार करेंगे ।

ससुराल–श्री

Duastro Sample तथा सास के संबधों में विशेष मधुरता का भाव नहीं रहेगा तथा आयु में काफी अंतर होने के कारण दोनों के मध्य वैचारिक मतभेद रहेंगे लेकिन इनमें अधिक गंभीरता नहीं रहेगी। यदि Duastro Sample तथा इनकी सास आपसी सामंजस्य तथा बुद्धिमता से व्यवहार करें तो संबधों की मधुरता में वृद्धि हो सकती है।

लेकिन ससुर के साथ में Duastro Sample के संबध मधुर रहेंगे तथा उनके प्रति मान सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा। साथ ही उनसे पिता के समान ही व्यवहार करेंगे। साथ ही वे भी Duastro Sample को पुत्रवत स्नेह तथा वात्सल्य प्रदान करेंगे। Duastro Sample समय समय पर अपने ससुर से आवश्यक तथा बहुमूल्य सलाह तथा निर्देश भी प्राप्त करते रहेंगे परन्तु साले तथा सालियों के साथ में संबधों में तनाव तथा मतभेद रहेंगे तथा एक दूसरे के प्रति आलोचना तथा प्रतिद्वन्दिता का भाव रहेगा जिससे आपस में स्नेह सहयोग तथा सहानुभूति के भाव में न्यूनता रहेगी।

इस प्रकार सामान्य रूप से ससुरालवालों का दृष्टिकोण Duastro Sample के प्रति अनुकूल ही रहेगा।

अंक ज्योतिष फल

Duastro Sample

आपका जन्म दिनांक एक होने से आपका मूलांक एक होता है। मूलांक एक के प्रभाववश आप एक स्थिर विचारधारा के व्यक्ति होंगे। अपने निश्चय पर दृढ़ रहेंगे। जीवन में आप जब भी किसी को वचन इत्यादि देंगे उन्हें निभाने की पूर्ण कोशिश करेंगे। इच्छा शक्ति आपकी दृढ़ रहेगी एवं आप अपने मन संबंधों में, मित्रता के संबंधों में स्थायित्व रहेगा। लम्बे समय तक जो भी विचार बना लेंगे उनका पालन करने की निरंतर कोशिश करेंगे। आपके प्रेमएवं स्थायी बनें रहेंगे। यदि किसी कारणवश आपका किसी से विवाद या शत्रुता होती है तो ऐसी स्थिति में शत्रु या विवादित व्यक्ति से भी आपका मन मुटाव दीर्घकाल तक बना रहेगा।

मानसिक स्थिति आपकी स्वतंत्र विचारधारा की होने से आप पराधीन रहकर कार्य करने में असुविधा महसूस करेंगे। आप किसी के अनुशासन में कार्य करने की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से कार्य करना अधिक पसंद करेंगे। आपकी निरंतर कोशिश एवं महत्वाकांक्षा रहेगी कि आप जो भी कार्य करें वह निष्पक्ष एवं स्वतंत्र हो, उस कार्य में किसी का भी हस्तक्षेप आपको मंजूर नहीं होगा।

मूलांक एक का स्वामी सूर्य ग्रह होने के कारण सूर्य से संबंधित गुण कमोवेश मात्रा में आपके अंदर मौजूद रहेंगे। इसके प्रभावश दूसरों का उपकार, उपचार करने की प्रवृत्ति आपके अंदर प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहेगी। सामाजिक क्षेत्र में आप सूर्य के समान ही प्रकाशित होना पसंद करेंगे। सामाजिक संगठनों में मुखिया का पद पाने की आपकी चाहत बनी रहेगी। जोकि आप अपनी मेहनत एवं लगन से प्राप्त करेंगे।

Duastro Sample

आपका जन्म दिनांक एक होने से आपका मूलांक एक होता है। मूलांक एक के प्रभाववश आप एक स्थिर विचारधारा की महिला होंगी। अपने निश्चय पर दृढ़ रहेंगी। जीवन में आप जब भी किसी को वचन इत्यादि देंगी उन्हें निभाने की पूर्ण कोशिश करेंगी। इच्छा शक्ति आपकी दृढ़ रहेगी एवं आप अपने मन में जो भी विचार बना लेंगी उनका पालन करने की निरंतर कोशिश करेंगी। आपके प्रेम संबंधों में, मित्रता के संबंधों में स्थायित्व रहेगा तथा लंम्बें समय तक आपके संबंध मधुर एवं स्थायी बनें रहेंगे। यदि किसी कारणवश आपका किसी से विवाद या शत्रुता होती है तो ऐसी स्थिति में शत्रु या विवादित व्यक्ति से भी आपका मन मुटाव दीर्घकाल तक बना रहेगा।

मानसिक स्थिति आपकी स्वतंत्र विचारधारा की होने से आप पराधीन रहकर कार्य करने में असुविधा महसूस करेंगी। आप किसी के अनुशासन में कार्य करने की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से कार्य करना अधिक पसंद करेंगी। आपकी निरंतर कोशिश एवं महत्वाकांक्षा रहेगी कि आप जो

भी कार्य करें वह निष्पक्ष एवं स्वतंत्र हो, उस कार्य में किसी का भी हस्तक्षेप बीच में आपको मंजूर नहीं होगा।

मूलांक एक का स्वामी सूर्य ग्रह होने के कारण सूर्य से संबंधित गुण कमोवेश मात्रा में आपके अंदर मौजूद रहेंगे। इसके प्रभावश दूसरों का उपकार, उपचार करने की प्रवृत्ति आपके अंदर प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहेगी। सामाजिक क्षेत्र में आप सूर्य के समान ही प्रकाशित होना पसंद करेंगी। सामाजिक संगठनों में मुखिया का पद पाने की आपकी चाहत बनी रहेगी। जोकि आप अपनी मेहनत एवं लगन से प्राप्त करेंगी।

Duastro Sample

भाग्यांक तीन का अधिष्ठाता बृहस्पति ग्रह को माना गया है। इसको गुरु भी कहते हैं। गुरु ग्रह के प्रभाववश आप धार्मिक, दानी, उदार, सच्चरित्र, ज्ञानी, विद्वान, परोपकारी, शान्त स्वभाव, सत्य पर आचरण करने वाले व्यक्ति के रूप में ख्याति प्राप्त करेंगे। अनुशासन में रहना एवं दूसरों से अनुशासन की अपेक्षा करना आपका प्रमुख गुण रहेगा। आप अपने अधिनस्थों से अधिकांश कार्य अपने बुद्धि कौशल से निकलवाने में सिद्धहस्त होंगे।

सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्रों में आपकी रुचि रहेगी एवं आवश्यकता के समय समाज सेवा के कार्य से पीछे नहीं हटेंगे। धर्म–कर्म के कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। गुरु धन–सम्पदा का दाता ग्रह है। अतः गुरु के प्रभाव से अपने कर्मक्षेत्र, रोजगार के क्षेत्र में अच्छी सम्पदा एकत्रित करेंगे। भूमि, वाहन, सम्पत्ति का अच्छा सुख प्राप्त करेंगे। ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में रुचि लेंगे और ऐसा कार्य करना पसन्द करेंगे जिनमें आपके अनुभव, ज्ञान का भरपूर उपयोग होता है। और आपको पूर्ण सम्मान, यश धन इत्यादि मिले।

Duastro Sample

भाग्यांक चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु एवं पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह को माना गया है। हर्षलग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय अचानक होगा। आपके जीवन में कई कार्य ऐसे होंगे जिनमें अथक परिश्रम के बाद चाही गई अवधि में सफलता न मिले और कार्य रुक जायें। लेकिन एक दिन अचानक ही ऐसे कार्य बन भी जाया करेंगे। आप अपने कार्यक्षेत्र में परिवर्तन की हिमायती होंगी एवं पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन करते रहना आपकी आदत में शुमार होगा। आप रूढ़ि वादिता से थोड़ी दूर तथा आधुनिक होंगी।

ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में आपका रूझान रहेगा एवं ऐसे कार्यों को संपादन करने में आनन्द आयेगा जिन्हें अन्य जन दुष्कर समझेंगे। आपके कार्यों में विस्फोटकता रहेगी तथा आप अचानक चर्चित होंगी। लेकिन यह स्थायित्व नहीं ले सकेगा। बार–बार का परिवर्तन आपकी उन्नति में बाधक रहेगा। अचानक सफलता या असफलता से आपको सबक लेना होगा कि भाग्य आपका परिवर्तनशील है। अतः आपको अधिक विस्फोटक, जोखिम युक्त कार्यों से दूर रहना या सोच–समझकर कार्य करना भाग्य वृद्धि कारक रहेगा।

लग्न फल

Duastro Sample

ज्योतिषीय गणना के अनुसार यह स्पष्ट होता है कि जिस समय आपका जन्म हुआ था उस समय मेदिनीय क्षितिज पर मेष लग्न का उदय काल एवं वृषभ नवांश तथा मेष राशि का द्रेष्काण का प्रवेश काल विद्यमान था। अश्विनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में आपके जन्म प्रभाव से यह संकेत प्राप्त होता है कि आप स्वतंत्रप्रिय, तेजस्वी, उत्साही, समझौते में विश्वास रखने वाले, किसी के समक्ष नतमस्तक नही होने वाले और किसी भी प्रकार से हार नहीं मानने वाले लगनशील तथा जिद्दी प्रवृत्ति के प्राणी हैं।

वास्तविकता तो यह है कि आप तथाकथित रूप से हर क्षण नेतृत्व प्रदान करना पसंद करते हैं। इसके अतिरिक्त खेल कूद भी आपके लिए प्रिय है। आप अपने विचारों के समक्ष किसी अन्य व्यक्ति का विचार को स्वीकार नहीं करते हैं। आप व्यक्तिगत रूप से अपना न्यायपक्ष ही प्रस्तुत करते हैं। आप स्वाभाविक रूप से नेतृत्व प्रदान करने वाले हैं। तथा शीघ्रता पूर्वक किसी भी विषय को कार्यरूप दे देते हैं। आप सुगमता से अपने अधिकारी या सहायक के विचारों को नही मानते हैं। अर्थात् किसी अन्य की सत्ता स्वीकार नही करते।

आप अपनी अति महत्वकांक्षा के प्रति पूर्ण रूपेण अपनी शक्ति का दुरुपयोग करके आनंद प्राप्त करते तथा शीघ्रता पूर्वक अपनी सम्मति प्रस्तुत कर देते हैं। आप पूर्ण रूपेण आश्वस्त हो जाते है कि आपके विचार और कार्य कलाप अकाट्य है। आप सदैव सभी विषयों में अपनी प्रधानता एवं सशक्त रूप से प्रेरणा प्रदान करते हैं। संयोगवश यदि असफलता हाथ लगती है तो आप पश्चाताप का श्रेय दूसरो पर देते तथा पुनः अपनी पूरी शक्ति प्रदर्शन एवं अपने नियंत्रण से पुनः कार्यारंभ कर देते हैं।

आप सभी शंकाओं से रहित एक विश्वासी व्यक्ति हैं। आप व्यक्तिगत रूप से निष्कपट प्राणी है। यदि कोई व्यक्ति अनैतिक आचरण अथवा दाव पेंच से आपके साथ चालाकी या चतुरता से आप पर भारी दबाव डालना चाहता है तो आप उसके साथ विषमता पूर्ण रूख अपना कर निष्ठुर व्यवहार करने पर तत्पर हो जाते हैं। परंतु यदि कोई व्यक्ति इसके अतिरिक्त आपके विरुद्ध किसी को उकसाता है। या आप पर दबाव डालना चाहता है तो इस प्रकार के आचरण को उलझन पूर्ण व्यवहार समझकर सतर्क रहते हैं। कोई पिछली बातों को भुलाकर, विश्वास पूर्वक समझौता करना चाहता है तो आप इमानदारी पूर्वक, क्रोध और निष्ठुरता को त्याग कर अंततोगत्वा आगे आकर अर्थात् मित्रता का हाथ बढ़ा कर एवं संकीर्णता से उपर उठ कर सफलता एवं विजय प्राप्त कर लेते हैं। आप अपने परिवार की समस्याओं पर ध्यान देते तथा पूर्ण सतर्क रह कर अंत में सभी समस्याओं का समाधान करते हैं। आप अपने पारिवारिक समस्याओं को बिना समय नष्ट किए शीघ्रता पूर्वक अर्थात् मनोयोग पूर्वक बिना किसी उपेक्षित भावनाओं से संपादन कर लेते हैं।

आपके परिवार के सभी सदस्य एवं आप स्वयं अपनी माता से पूर्ण रूपेण संबद्ध रहा करते हैं। आपकी पत्नी आपको अपने प्रभाव में रखने का पूर्ण प्रयास करती हैं। ऐसा संभव है कि आप अपनी पत्नी की विशेषताओं पर अमल करने लगें।

आप पूर्ण रूपेण स्वस्थ्य एवं शारीरिक शक्ति से मजबूत रहकर आनंद प्राप्त करेंगे। लेकिन यदि आप पूर्ण सतर्कता से वाहन नही चलाएगें या वाहन चलाते समय कोई नादानी (बचपना) की तो यह संभव है कि आप किसी भी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं तथा आपके सिर में कोई चोट लग सकती है। अतः आपको पूर्ण सर्तकता से कोई भी वाहन चलाना चाहिए अन्यथा कोई (छोटी) साधारण दुर्घटना आपके संपूर्ण जीवन में कभी भी संभाव्य है। अतः आपके लिए यह चेतावनी है कि आप अच्छी तरह नियमित रूप से सुरक्षित गति से वाहन चलाएं।

यदि आप अपने दैनिकचर्या के अनुकूल आचरण नही किए तो यह संभव है कि आप मस्तिष्क रोग के अथवा पक्षाघात के शिकार हो सकते हैं। अतः आप समय–समय पर अपना स्वास्थ्य परीक्षण कराते रहें, ऐसी ज्योतिषीय राय है। आप अपने उत्तम स्वास्थ्य के प्रति सुधार करते रहें। आपके स्वास्थ्य के लिए मांसाहार सर्वथा वर्जित है। सदैव ही शाकाहार भोजन ग्रहण करें।

स्वास्थ्य की तुलना में धन क्या। यह तो कुछ भी नही है। स्वास्थ्य पर सदैव ध्यान देना अनुकूल है। यदि आप नीति पूर्ण ढंग से उचित खर्च करने में मनमानी करेंगे अथवा अपनी क्षमता से अधिक खर्च करेंगे तो आपका संचित धन पर कुप्रभाव पड़ेगा जिस कारण आपकी वार्षिक आय–व्यय का सिलसिला बिगड़ जाएगा। और आपकी कोई भी योजना प्रारंभ होने के समय आर्थिक तंगी के कारण प्रभावित हो जाएगी। यदि आप आनंद प्राप्त करने के लिए किसी बिंदु पर आसक्त हो जाएंगे तो आप शीघ्रता पूर्वक लाभ प्राप्त नही कर सकेंगे और आपकी योजना हानिप्रद प्रमाणित होगी। अर्थात् आपको काम–धंधे से नुकसान उठाना पड़ सकता है। अतः आप सुरक्षित ढंग से धन का बचत नियमित करें जो आपके संवेदनशील परिस्थिति में सहायक हो सके।

यदि आप किसी भी, परिस्थिति या मौसम के प्रारंभिक काल अर्थात् कोई भी कार्य प्रारंभ करने के पहले निम्नलिखित निर्देशों का पालन करें तो यह आपके लिए लाभजनक सिद्ध होगा।

आप काले रंग के वस्त्रों एवं धातुओं का त्याग कर पीले, लाल एवं ताम्रवर्ण रंग को अपनाएं जो आपके लिए सर्वथा अनुकूल है।

आपके लिए मंगलवार, गुरुवार, रविवार एवं सोमवार उपयुक्त एवं भाग्यशाली दिन है। शुक्रवार, शनिवार एवं बुधवार तीन दिन आपके लिए प्रतिकूल एवं व्ययकारी होंगे।

आपके लिए अंक 9 और 1 अंक अनुकूल, अंक 4 एवं 8 अंक प्रभावक परंतु अंक 6 एवं 7 अंक आपके लिए प्रतिकूल फलदायक अंक हैं।

Duastro Sample

ज्योतिषीय गणना के अनुसार यह स्पष्ट होता है कि जिस समय आपका जन्म हुआ था। उस समय मेदिनीय क्षितिज पर मेष लग्न का उदय काल एवं बृषभ नवांश तथा मेष राशि का द्रेष्काण का प्रवेश काल विद्यमान था। अश्विनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में आपके जन्म प्रभाव से यह संकेत प्राप्त होता है कि आप स्वतंत्रप्रिय, तेजस्वी उत्साही, समझौते में विश्वास रखने वाली, किसी के समक्ष नतमस्तक नही होने वाली और किसी भी प्रकार से हार नहीं मानने वाली लगनशील तथा जिद्दी प्रवृत्ति की प्राणी है।

वास्तविकता तो यह है कि आप तथाकथित रूप से हर क्षण नेतृत्व प्रदान करना पसंद करती हैं। इसके अतिरिक्त खेल कूद भी आपके लिए प्रिय है। आप अपने विचारों के समक्ष किसी अन्य व्यक्ति को विचार को स्वीकार नहीं करती हैं। आप व्यक्तिगत रूप से अपना न्यायपक्ष ही प्रस्तुत करती हैं। आप स्वाभाविक रूप से नेतृत्व प्रदान करने वाली हैं। तथा शीघ्रता पूर्वक किसी भी विषय को कार्यरूप दे देते हैं। आप सुगमता से अपने अधिकारी या सहायक के विचारों को नही मानती हैं। अर्थात् किसी अन्य की सत्ता स्वीकार नही करती।

आप अपनी अति महत्वकांक्षा के प्रति पूर्ण रूपेण अपनी शक्ति का दुरुपयोग करके आनंद प्राप्त करती तथा शीघ्रता पूर्वक अपनी सम्मति प्रस्तुत कर देती हैं। आप पूर्ण रूपेण आश्वस्त हो जाती है कि आपके विचार और कार्य कलाप अकाट्य है। आप सदैव सभी विषयों में अपनी प्रधानता एवं सशक्त रूप से प्रेरणा प्रदान करती हैं। संयोगवश यदि असफलता हाथ लगती है तो आप पश्चात्ताप का श्रेय दूसरो पर देती तथा पुनः अपनी पूरी शक्ति प्रदर्शन एवं अपने नियंत्रण से पुनः कार्यारंभ कर देती हैं।

आप सभी शंकाओं से रहित एक विश्वासी प्राणी हैं। आप व्यक्तिगत रूप से निष्कपट प्राणी है। यदि कोई व्यक्ति अनैतिक आचरण अथवा दाव पेंच से आपके साथ चालाकी या चतुरता से आप पर भारी दबाव डालना चाहता है तो आप उसके साथ विषमता पूर्ण रूख अपना कर निष्ठुर व्यवहार करने पर तत्पर हो जाती हैं। परंतु यदि कोई व्यक्ति इसके अतिरिक्त आपके विरुद्ध किसी को उकसाता है। या आप पर दबाव डालना चाहता है तो इस प्रकार के आचरण को उलझन पूर्ण व्यवहार समझकर सतर्क रहती हैं। कोई पिछली बातों को भुलाकर, विश्वास पूर्वक समझौता करना चाहता है तो आप ईमानदारी पूर्वक, क्रोध और निष्ठुरता को त्याग कर अंततोगत्वा आगे आकर अर्थात् मित्रता का हाथ बढ़ा कर एवं संकीर्णता से उपर उठ कर सफलता एवं विजय प्राप्त कर लेती हैं। आप अपने परिवार की समस्याओं पर ध्यान देती है तथा पूर्ण सतर्क रह कर अंत में सभी समस्याओं का समाधान करती हैं। आप अपने पारिवारिक समस्याओं को बिना समय नष्ट किए शीघ्रता पूर्वक अर्थात् मनोयोग पूर्वक बिना किसी उपेक्षित भावनाओं से संपादन कर लेती हैं।

आपके परिवार के सभी सदस्य एवं आप स्वयं अपनी माता से पूर्ण रूपेण संबद्ध रहा करते हैं। यद्यपि आपके पति आपको अपने प्रभाव में रखने का पूर्ण प्रयास करते है। ऐसा संभाव्य

है कि आप अपने पति की विशेषताओं पर अमल करने लगे।

आप पूर्ण रूपेण स्वस्थ्य एवं शारीरिक शक्ति से मजबूत रहकर आनंद प्राप्त करेंगी। यह दृष्टिगोचर हो रहा है कि यदि आप पूर्ण सर्तकता से वाहन नही चलाए या वाहन चलाते समय कोई नादानी (बचपना) की तो यह संभव है कि आप किसी भी दुर्घटना की शिकार हो सकती हैं तथा आपके सिर में कोई चोट लग सकती है। अतः आपको पूर्ण सर्तकता से कोई भी वाहन चलाना चाहिए अन्यथा कोई (छोटी) साधारण दुर्घटना आपके संपूर्ण जीवन में कभी भी संभाव्य है अतः आपके लिए यह चेतावनी है कि आप अच्छी तरह नियमित रूप से सुरक्षित गति से वाहन चलाएं।

यदि आपने अपने दैनिकचर्या के अनुकूल आचरण नही किया तो यह संभव है कि आप मस्तिष्क रोग की अथवा पक्षाघात की शिकार हो सकती हैं। अतः आप समय–समय पर अपना स्वास्थ्य परीक्षण कराती रहें, ऐसी ज्योतिषीय राय है। आप अपने उत्तम स्वास्थ्य के प्रति सुधार करती रहें। आपके स्वास्थ्य के लिए मांसाहार सर्वथा वर्जित है। सदैव ही शाकाहारी भोजन ग्रहण करें।

स्वास्थ्य की तुलना में धन क्या। यह तो कुछ भी नही है। स्वास्थ्य पर सदैव ध्यान देना अनुकूल है। यदि आप नीति पूर्ण ढंग से उचित खर्च करने में मनमानी करेंगी अथवा अपनी क्षमता से अधिक खर्च करेंगी तो आपके संचित धन पर कुप्रभाव पड़ेगा जिस कारण आपकी वार्षिक आय–व्यय का सिलसिला बिगड़ जाएगा। और आपकी कोई भी योजना प्रारंभ होने के समय आर्थिक तंगी के कारण प्रभावित हो जाएगी। यदि आप आनंद प्राप्त करने के लिए किसी बिंदु पर आसक्त हो जाएंगी तो आप शीघ्रता पूर्वक लाभ प्राप्त नही कर सकेंगी और आपकी योजना हानिप्रद प्रमाणित होगी। अर्थात् आपको काम–धंधे से नुकसान उठाना पड़ सकता है। अतः आप सुरक्षित ढंग से धन की बचत नियमित करें जो आपकी संवेदनशील परिस्थिति में सहायक हो सके।

यदि आप किसी भी, परिस्थिति या मौसम के प्रारंभिक काल अर्थात् कोई भी कार्य प्रारंभ करने के पहले निम्नलिखित निर्देशों का पालन करें तो यह आपके लिए लाभजनक सिद्ध होगा।

आप काले रंग के वस्त्रों एवं धातुओं का त्याग कर पीले, लाल एवं ताम्रवर्ण रंग को अपनाएं जो आपके लिए सर्वथा अनुकूल है।

आपके लिए मंगलवार, गुरुवार, रविवार एवं सोमवार उपयुक्त एवं भाग्यशाली दिन है। शुक्रवार, शनिवार एवं बुधवार तीन दिन आपके लिए प्रतिकूल एवं व्ययकारी होंगे।

आपके लिए अंक 9 और 1 अंक अनुकूल, अंक 4 एवं 8 अंक प्रभावक परंतु अंक 6 एवं 7 आपके लिए प्रतिकूल फलदायक अंक हैं।

नक्षत्रफल

Duastro Sample

आप मृगशिरा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग मार्जार, नाड़ी मध्य, गण देव तथा योनि सर्प होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "कि" या "की" अक्षर से होगा। यथा–किशोर, कीर्ति आदि।

आप में नैसर्गिक रूप से चंचलता तथा चतुरता का भाव विद्यमान रहेगा। आपके समस्त कार्य चतुराई तथा धैर्यपूर्वक प्रारम्भ होंगे तथा अन्त में इसी प्रकार सम्पन्न भी होंगे। आपको जीवन में कई बार व्यस्तता या अन्य कारणों से भूख से भी व्याकुल होना पड़ेगा। अहंकार के भाव की भी अनावश्यक अधिकता कभी कभी आप में उत्पन्न होगी। जिसके परिणाम स्वरूप आप अपने समक्ष दूसरे व्यक्ति को महत्वहीन समझेंगे।

चतुरश्चपलो धीरः कूरकर्मा क्षुधातुरः।
अहंकारी परद्वेषी मृगशीर्णि भवेन्नरः।।
जातकदीपिका

किसी भी वस्तु की प्रतिलिपि या नकली रूप बनाने में आप अत्यन्त कुशल हो सकते हैं। साथ ही अपने समस्त सांसारिक कार्यों को आप अपने परिश्रम तथा बुद्धि बल से ही सम्पन्न करेंगे।

चपलश्चतुरो धीरः कूटकर्मस्वकर्मकृत।
अहंकारी परद्वेषी मृगे भवति मानवः।।
मानसागर

आप स्वभाव से ही डरपोक रहेंगे। आप चतुर एवं विद्वान भी होंगे। आप हमेशा उत्साह युक्त रहेंगे तथा अपनी इसी उत्साही प्रवृति के कारण जीवन में उन्नति मार्ग पर अग्रसर होंगे। आप अपने जीवन में समस्त भौतिक सुखों तथा धन एवं वैभव का आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे।

चपलश्चतुरोभीरूः पटुरूत्साही धनी मृगे भोगी।
बृहज्जातकम्

अस्त्र–शस्त्रों के प्रयोग में आपको प्रवीणता प्राप्त होगी तथा इनके बारे में आपका ज्ञान भी विषद रहेगा। विनयशीलता आपके स्वभाव का अंग होगी तथा सामान्य रूप से सब के साथ नम्रता का व्यवहार करेंगे। गुण तथा गुणवान व्यक्तियों में आप विशेष रूप से अनुरक्त रहेंगे। धन का पर्याप्तार्जन होने के कारण विलासिता के प्रति आपका आकर्षण बढेगा। मंत्री वर्ग या उच्चाधिकारी वर्ग के भी आप प्रिय होंगे तथा इनसे पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्राप्त

करेंगे। आप जीवन में अच्छे मार्ग पर चलने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे।

शरासनाभ्यासरतो विनीतः सदानुरक्तो गुणिनां गणेषु।
भोक्तानृपस्नेहभरेण पूर्णः सन्मार्गवृतो मृगजात जन्मा।
जातकाभरणम्

आप मन से हमेशा शान्त रहेंगे तथा भ्रमण एवं यात्रा के लिए अधिक उत्सुक रहेंगे। अतः आपका काफी समय भ्रमण तथा यात्राओं में व्यतीत होगा।

चान्द्रे सौम्यमनोळटनः कुटिलदृक् कामातुरो रोगवान।
जातकपरिजातः

Duastro Sample

आप स्वाती नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि तुला तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपकी नाड़ी अन्त्य, वर्ग सर्प, वर्ण शूद्र, गण देव तथा योनि महिष होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "त" से प्रारम्भ होगा।

आपकी प्रवृति हमेशा सहनशीलता के भाव से युक्त रहेगी तथा सुख दुःख को समान रूप से सहन करने में आप समर्थ रहेंगी। आपकी व्यापारिक कार्यों में गहन रूचि रहेगी तथा जीवन यापन के लिए भी आप अपने मुख्य व्यवसाय के रूप में व्यापार कार्य को वरीयता प्रदान कर सकती हैं। आपका हृदय दया तथा करूणा से युक्त रहेगा तथा दीन दुखियों तथा जरूरतमन्द लोगों की आप यथा शक्ति सेवा तथा सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर रहेगी जो श्रोता को अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर लगेगी अतः सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे तथा आपको आदरणीय दृष्टि से देखेंगे। साथ ही धार्मिक प्रवृतियों का भी आप अनुपालन करेंगे तथा निष्ठापूर्वक इनका अनुसरण करेंगे।

दान्तो वणिक्कृपालु प्रियवाग्धर्माश्रितः स्वातौ।
बृहज्जातकम्

आप अपने जीवन काल में ब्राहमण तथा देवताओं के प्रिय कार्य को सम्पन्न करने वाली होंगी अर्थात धार्मिक कृत्यों को करेंगी तथा इनके प्रति आपके मन में गहन श्रद्धा तथा भक्ति भावना रहेगी। आपका जीवन विभिन्न प्रकार के धनैश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर व्यतीत होगा। साथ ही आर्थिक स्थिति भी सामान्यतया दृढता को प्राप्त रहेगी तथा अभाव की अनुभूति नहीं होगी परन्तु बुद्धि मध्यम ही रहेगी।

स्वात्यां देवमहीसुरप्रियकरो भोगी धनी मन्द धीः।
जातकपरिजातः

आप देखने में अत्यन्त ही सुन्दर रहेंगी तथा अपने सौन्दर्य के द्वारा सभी लोगों को

आकर्षित तथा प्रभावित करने में सफल रहेंगी। आपका मुख मंडल भी तेज से सर्वथा देदीप्यमान रहेगा। समाज में अन्य लोगों से आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध भी रहेंगे तथा उनसे पूर्ण आदर एवं सहयोग को प्राप्त करेंगी। इस सबसे आपका चित्त हमेशा प्रसन्न रहेगा। साथ ही आप राज्य या सरकार से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से धन की प्राप्ति करेंगी तथा आजीवन प्रसन्नतापूर्वक उसका उपभोग करेंगी।

कन्दर्परूपः प्रभयासमेतः कान्तापरप्रीति रतिप्रसन्नः।
स्वाती प्रसूतौ मनुजस्य यस्य महीपति प्राप्त विभूतियुक्तः।।
जातकाभरणम्

विविध प्रकार के शास्त्रों का ज्ञानार्जन करने में आप रूचिशील रहेंगी तथा यत्नपूर्वक इनका ज्ञान प्राप्त करेंगी। साथ ही समाज में एक सम्मानीय विदुषी के रूप में आपकी ख्याति रहेगी। धर्म के प्रति आप अत्यन्त ही निष्ठावान रहेंगी तथा समस्त धार्मिक कार्यकलापो को श्रद्धा से सम्पन्न करेंगी। आपका स्वभाव सुशील रहेगा परन्तु प्रवृति कृपणता रहेगी।

विदग्धो धार्मिकश्चैव कृपणः प्रियवल्लभः।
सुशीलो देवभक्तश्च स्वातौ जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

राशिफल

Duastro Sample

आप मिथुन राशि में उत्पन्न हुए हैं अतः आप के नेत्र अल्प लालिमा युक्त तथा काले होंगे तथा नासिका भी उन्नत होगी। नाना प्रकार के शास्त्रों के आप ज्ञाता होंगे। आप दूत या सन्देशवाहक के कार्य को भी करने वाले हो सकते हैं। सिर के बाल आपके घुघंराले होंगे। आप अत्यन्त ही तीव्र बुद्धि के पुरूष होंगे तथा समाज में लोगों के साथ आपका व्यवहार विनयपूर्ण तथा विनम्र रहेगा। अपनी इस तीक्ष्ण बुद्धि के द्वारा आप दूसरे लोगों की मन की बातों को शीघ्र ही जानने में सफल होंगे। आपके समस्त शारीरिक अंग स्वस्थ, सुडौल एवं पुष्ट रहेंगे। वाणी आपकी अत्यन्त मधुर होगी तथा हंसने हंसाने में भी आप कुशल होंगे। अधिक भोजन करना आपको अच्छा लगेगा। संगीत तथा नृत्यशास्त्र के आप अच्छे जानकार होंगे।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।
दूतः कुञ्चिद् मूर्धजः पटुमति हास्योङ्गित द्यूतवित्।।
चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रूचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।
क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।
बृहज्जातकम्

काव्य लेखन की प्रतिभा स्वाभाविक रूप से आपके मन में व्याप्त रहेगी अतः आप कवि या लेखक भी बन सकते हैं। अपने जीवन में आप समस्त प्रकार के सुखों का उपभोग करने वाले होंगे। आपका अधिकांश समय विषय वासनाओं के सुख में व्यतीत होगा। आपकी नसें भी शरीर से बाहर दृष्टिगोचर होंगी। देखने में अत्यन्त ही सुन्दर होंगे। आप सौभाग्य से युक्त सौभाग्यशाली पुरूष होंगे। आप प्रिय एवं मधुर वाणी बोलेंगे जो सबको सुनने में अच्छी लगेगी। आपकी आकृति लम्बाई में अधिक होगी। आप हमेशा स्त्री जाति के वश में रहेंगे तथा एक प्रकार से पराजित रहेंगे।

उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।
हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।
कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।
याति क्लीबैश्च रतिकर्मं संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।
सारावली

आयु आपकी पूर्ण रहेगी तथा आजीवन आप हास्य प्रिय रहेंगे। साथ ही आपकी प्रवृति भ्रमणशील भी रहेगी तथा घर में रहकर भी आप आनन्द तथा सन्तोष प्राप्त करेंगे।

दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।
जातकपरिजातः

द्य ण ण ण

समाज में आपकी मित्रताक्षेत्र अति विस्तृत होगा। बहुत से लोग आपके मित्र होंगे। आपकी हथेली में मत्स्य रेखा होने का भी योग बनता है। स्त्री जाति के आप अत्यन्त प्रिय रहेंगे तथा पूर्ण रूप से उनके वश में होंगे। अपनी सज्जनता एवं बहुमुखी योग्यता से आप समाज में मान, सम्मान तथा गौरव प्राप्त करेंगे।

प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।
मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।
जातकाभरणम्

आपका शरीर कोमलता लिए हुए पूर्णरूपेण स्वस्थ एवं पुष्ट रहेगा। आप यद्यपि श्लिष्ट भाषा या शब्दों का प्रयोग करेंगे। फिर भी स्पष्ट अर्थ वाले होंगे। आप अपने लोगों तथा समाज के अन्य लोगों की सेवा तथा सहायता में हमेशा व्यस्त रहेंगे। आप पितकफ युक्त प्रकृति से युक्त होकर हमेशा श्रेष्ठ आचरण का प्रदर्शन करेंगे।

मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।
परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।
प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।
भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।
जातक दीपिका

आपकी वाणी हमेशा अन्य लोगों को प्रसन्नता प्रदान करने वाली होगी। आखों में आपकी चंचलता विद्यमान रहेगी। आपको नृत्य तथा संगीत अत्यन्त ही प्रिय लगेगा तथा इसके आप ज्ञाता भी होंगे। अपने धनैश्वर्य, दयालुता, तथा सद्व्यवहार के कारण आपका यश दूर दूर तक फैलेगा। आप दीर्घाकृति के गौरवर्ण के पुरूष होंगे। आप भाषण देने की कला में भी निपुण रहेंगे तथा एक बार जिस बात का दिमाग में निश्चय कर लेंगे उसे पूर्ण करके ही छोड़ेंगें साथ ही न्याय में भी आपका विश्वास रहेगा।

मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।
गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।
गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।
मानसागरी

आपके लिए आषाढ़ मास, द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी तिथियां, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग, सोमवार, तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ रहेंगे। अतः आप 15 जून से 14 जुलाई के मध्य, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग में कोई भी शुभकार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही सोमवार तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें।इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

द्य ए ए ए

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको नियमित रूप से प्रातः तथा सायं काल गणेश जी के दर्शन करने चाहिए तथा बुधवार के व्रत रखने चाहिए। साथ ही हरा वस्त्र, पन्ना, घी, गुड़, गेहूँ, मिश्री इत्यादि पदार्थो को दान करना चाहिए। इससे आपके अशुभ फलों में कमी होगी तथा मानसिक शान्ति भी प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप किसी विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र– ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।

Duastro Sample

तुला राशि में जन्म लेने के कारण आप शरीर तथा मुख से सुन्दर रहेंगी तथा आँखें बड़ी बड़ी होंगी। आपकी नाक भी ऊँची होगी। आप अपने जीवन में विविध प्रकार के वाहन साधनों से सर्वथा सुसम्पन्न रहेंगी तथा सुखपूर्वक इनाका उपभोग करेंगी। सामाजिक संबंधो की विस्नतता के कारण आप के अन्य जनों से मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध स्थापित रहेंगे। साथ ही वाहन तथा जायदाद से भी आप सुसम्पन्न होकर इनसे धनार्जन करती रहेंगी। आप एक प्रभावशाली महिला होंगी तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा। समाज के सभी वर्गों के लोगों से आप पूर्ण मान तथा सम्मान प्राप्त करेंगी। धनैश्वर्य तथा वैभव से भी आप हमेशा सुशोभित रहेंगी। पति को आप पूर्ण रूप से अपने वश में रखेंगी। तथा वे भी आपके निर्देश तथा सलाह पर ही समस्त कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे। किसी भी कार्य को आप चतुराई पूर्ण तरीके से सम्पन्न करने में हमेशा सक्षम रहेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में सर्वथा भक्तिभाव रहेगा। धन धान्यादि को संग्रह करने की ओर भी आपकी प्रवृति रहेगी तथा बन्धु वर्ग के कल्याण कार्यों में आप सर्वथा तत्पर रहेंगे।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप हमेशा ब्राहमण देवता तथा भद्र पुरूषो की सेवा में तत्पर रहेंगी तथा इनके प्रति आपके मन में श्रद्धा तथा सम्मान का भाव रहेगा। आप विविध शास्त्रों का अध्ययन करके ज्ञानार्जन करेंगी तथा एक श्रेष्ठ विदुषी के रूप में समाज में ख्याति प्राप्त करेंगी। आपका शरीर भी सुगन्धित रहेगा। घूमने फिरने का आपको बहुत शौक रहेगा तथा अधिकाँश समय यात्रादि में व्यतीत करेंगी। क्रय विक्रय संबंधी कार्यों में आप अत्यन्त दक्षता को प्राप्त करेंगी। बन्धु तथा सम्बन्धियों की आप प्रबल हितकारिणी होंगी तथा यत्न पूर्वक उनके हित कार्य को करेंगी। परन्तु

बाद में इन्हीं लोगों से आपको उपेक्षित भी होना पड़ेगा साथ ही धन से भी आप युक्त रहेंगी।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरूक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप अत्यन्त ही न्याय प्रिय रहेंगी तथा अपनी जो भी बात करेंगी सभी लोग उससे सहमत रहेंगे अतः आपसी झगड़ों तथा विवादों को समाप्त करने के लिए लोग आपसे मध्यस्थ या पंच बनने का अनुरोध करेंगे। इस कार्य को आप निष्पक्ष तथा ईमानदारी से पूर्ण करेंगी जिससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी। आपकी सन्ततियां अल्प मात्रा में ही उत्पन्न होंगी तथा भाग्योदय भी विलम्ब से ही होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

देखने में आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा। सरकार के उच्चाधिकारियों तथा पदाधिकारियों को प्रसन्न करने की कला में आप निपुण रहेंगी तथा इनसे पूर्ण सहयोग तथा आदर प्राप्त करेंगी। कभी कभी आप बहुत बोलेंगी। इससे लोग आपसे दूर रहने की कोशिश करेंगे फलतः आपके सामाजिक प्रभाव में न्यूनता आएगी। ज्योतिष शास्त्र अथवा ग्रहनक्षत्रादि के ज्ञान देने वाले शास्त्र के भी आप ज्ञाता रहेंगी। आपका अपने बन्धुओं तथा सेवकों के प्रति भी स्नेहशील व्यवहार रहेगा।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

आप कभी कभी सुअवसर पर अपने क्रोध को प्रदर्शित करेंगी फलतः बाद में इस के प्रति आपके मन में दुःख की अनुभूति होगी। आप अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुरवाणी का अपने सम्भाषण में प्रयोग करेंगी जिससे सभी लोग आपसे पूर्ण रूपेण प्रसन्न रहेंगे साथ ही आपका हृदय दयालुता की भावना से भी युक्त रहेगा तथा दीन दुःखियों की आप यत्नपूर्वक सेवा एवं सहायता करती रहेंगी। आपके नेत्रो में भी हमेशा चंचलता की बहुलता रहेगी जीवन में आपकी आर्थिक स्थिति अस्थिर रहेगी कभी आपके पास अत्याधिक मात्रा में धनागम होगा तो कभी अत्यल्प मात्रा में। घर में आप बलवती तथा बाहर अत्यन्त दुर्बलता को प्राप्त होंगी। आप मित्रों के मध्य अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी तथा विदेश में निवास कर सकेंगी। इसके साथ ही बन्धुवर्ग को आप

हमेशा सहयोग करती रहेंगी।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येळति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप विभिन्न प्रकार के वाहनादि से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी तथा दानशीलता की प्रवृति भी आपके अर्न्तमन में सर्वथा व्याप्त रहेगी। पति की आप हमेशा अति प्रिया रहेंगी तथा उनसे पूर्ण सहयोग प्राप्त करने में आप सफल रहेंगी। साथ सम्पूर्ण जीवन में आप धनैश्वर्य एवं वैभव से सम्पन्न रहकर आनन्दपूर्वक उसका उपभोग करेंगी।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिलकरण, गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शतमिषा नक्षत्र, शुक्ल योग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवग्रहनिर्माण, क्रय विक्रयादि शुभ कार्यों को सम्पन्न न करे अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा का भी विशेष ध्यान रखे।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति प्राप्त करने में बाधाएं तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी जी की उपासना करनी चाहिए एवं शुक्रवार के भी उपवास करने चाहिए। साथ ही हीरा, पन्ना, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, श्वेत चन्दन चावल, दूध आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक सुपात्र को दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य अशुभ फलों के प्रभाव में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 2000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र– ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

पाया विचार

Duastro Sample

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ है। अतः जीवन में आप धन वैभव से प्रायः सुसम्पन्न ही रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। काव्यशास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप परिश्रमपूर्वक ख्याति भी अर्जित करेंगे। भाइयों के प्रति आपके मन में पूर्ण स्नेह रहेगा तथा उनको आप हमेशा अपने ओर से प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करते रहेंगे। सुन्दर वस्त्रों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा तथा इनको पहनने एवं संग्रह करने में आपकी पूर्ण रूचि रहेगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा आप एक बलशाली पुरूष होंगे। साथ ही आप पराक्रम से भी युक्त रहेंगे एवं शौर्योचित कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत तथा तत्पर रहेंगे। आप सामान्यतया प्रसन्नचित रहेंगे। परन्तु आपका स्वभाव कृपण होगा। इसके अतिरिक्त आप एक विद्वान एवं सौभाग्यशाली पुरूष भी रहेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

Duastro Sample

आप ताम्रपाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप आजीवन धन धान्य से सुसम्पन्न रहेंगी। आप पति के रूप में श्रेष्ठ एवं गुणवान पुरूष को प्राप्त करेंगी। साथ ही कई प्रकार के बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं तथा सोना, चांदी आदि से भी आप सुशोभित रहेंगी। आपका शारीरिक सौन्दर्य सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा तथा स्वास्थ्य भी अच्छा होगा। आप एक विदुषी महिला होंगी तथा विविध प्रकार से चल अचल जायदाद या सम्पति की स्वामिनी बनेंगी। आप विविध प्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगी एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग कर सकेंगी। आप की समस्त पुत्र तथा कन्या सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी एवं जीवन में आप संतति सुख अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इस प्रकार आपका परिवारिक जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथा अन्य जनों से आपके हमेशा मधुर व्यवहार रहेगा।

गण फलादेश

Duastro Sample

देवगण में पैदा होने के कारण आप श्रेष्ठ एवं मधुरवाणी से युक्त होंगे। सभी लोग आपकी वाणी की प्रशंसा करेंगे। सत्य का आप हमेशा पालन करेंगे तथा सदैव सत्य भाषण ही करेंगे। आप सुगमता से अपने विचारों को व्यक्त करने में समर्थ होंगे तथा उतनी ही सुगमता से अन्य के विचारों को ग्रहण करने की क्षमता आप में होगी। शुद्ध तथा सात्विक भोजन आपका प्रिय भोजन होगा। आप गुणों से युक्त गुणज्ञाता होंगे। विद्वानों द्वारा कहे गये समस्त सद्गुणों से आप युक्त रहेंगे। धन एवं वैभव का अतुल भण्डार आपके पास हमेशा रहेगा जिससे धन धान्य का अभाव नहीं होगा।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

आप सुन्दर दर्शनीय एवं स्वस्थ शरीर के स्वामी होंगे। दान देने की प्रवृति नैसर्गिक रूप से आप के अन्दर विद्यमान रहेगी तथा समयानुसार यथाशक्ति आप इस प्रवृति का पालन करते रहेंगे। आप सरल ह्दय से युक्त होंगे तथा छल या दिखावे से हमेशा दूर रहेंगे। आप समाज में एक विद्वान के समान पूजनीय भी समझे जाएंगे।

सुन्दरो दानशीलश्च कान्तिमान सरलः सदा।
अल्प भोगी महाप्रज्ञो नरो देवगणो भवेत।।
मानसागरी

Duastro Sample

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त मधुर एवं प्रिय रहेगी। आप अपने विचारों को सुगमता से प्रकट करेंगी तथा अन्यो के विचारों को भी सुगमता से ही ग्रहण करेंगी। यह आपकी एक स्वाभाविक प्रवृति होगी। अल्प मात्रा में शुद्ध तथा सात्विक भोजन करना आपका प्रिय कार्य होगा। आप गुणों की पूर्ण ज्ञाता होंगी तथा स्वयं भी महान लोगों द्वारा प्रतिपादित सद्गुणों से सर्वथा युक्त रहेंगी। इसके अतिरिक्त विविध प्रकार के धनधान्यों तथा ऐश्वर्य आदि से भी आप आजीवन सुसम्पन्न रहेंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

आपका सौन्दर्य देखने में अत्यन्त ही आकर्षक रहेगा तथा आपकी प्रवृति क्षमाशीलता से सुशोभित रहेगी। आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा हमेशा सादगी को ही पसन्द करेंगी।

Duastro Sample Duastro Sample

अनावश्यक भौतिकता की आप ह्दय से उपेक्षा करेंगी। इसके अतिरिक्त समाज में एक महान विदुषी के रूप में आप सम्मानित तथा पूजनीया रहेंगी।

सुन्दरो दानशीलश्च कान्तिमान सरलः सदा।
अल्प भोगी महाप्रज्ञो नरो देवगणो भवेत।।
मानसागरी

योनी फलादेश

Duastro Sample

आपका जन्म सर्प योनि में हुआ है। अतः आप कभी कभी अत्याधिक क्रोध करेंगे। साथ ही आप में चंचलता का बाहुल्य रहेगा अतः समस्त कार्य भी चपलता से ही होंगे। इसके अतिरिक्त आप जिहवा से भी स्वादलोलुप रहेंगे तथा विभिन्न प्रकार के स्वादों के आप प्रेमी होंगे।

दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।
चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।
मानसागरी

Duastro Sample

महिष योनि में उत्पन्न होने के कारण आप झगड़े तथा वाद विवाद में अधिकाँश रूप से सर्वदा विजयी ही रहेंगी हार का सामना कम ही करना पड़ेगा। आप स्वयं भी एक साहसी महिला होंगी तथा साहस युक्त कार्यों को करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगी। आपकी संतति अधिक सख्यां में होगी। आपकी प्रकृति वायु प्रधान होगी तथा यदा कदा वायु रोगों से भी आपको व्याकुल रहना पडेगा। इसके अतिरिक्त आपकी मध्यम बुद्धि रहेगी तथा तीक्ष्णता का इसमें अभाव रहेगा।

संग्रामे विजयी योद्धा सकामस्तु बहुप्रजः।
वाताधिको मन्दमतिर्नरो महिषयोनिजः।।
मानसागरी

ग्रह फल – सूर्य

Duastro Sample

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गरत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

Duastro Sample

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गरत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा। धन धान्य का वे पूर्ण लाभार्जन करेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार से आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी वे पूर्ण सहयोग एवं प्रेरणा आपको प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा किसी सैद्धान्तिक मतभेद पर इसमें कटुता या तनाव भी परिलक्षित होगा परन्तु कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही समाप्त हो

Duastro Sample Duastro Sample

जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका सुख दुःख में पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं उन्हें सर्वदा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी।

ग्रह फल – चन्द्र

Duastro Sample

तृतीय,भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान, एवं कंजूस होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे।

Duastro Sample

सप्तमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सभ्य, धैर्यवान् नेता, विचारक, प्रावासी, जलयात्रा करने वाला, व्यापारी, अभिमानी, वकील, कीर्तिमान, शीतल स्वभाववाला एवं स्फूर्तिवान् होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में प्यार एवं स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी शादी करने में भी उनका विशेष सहयोग रहेगा तथा आपको व्यापारादि कार्यों में भी पूर्ण आर्थिक या अन्य रूप से सहयोग तथा प्रोत्साहन देंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धालु रहेंगी एवं हमेशा उनका हार्दिक सम्मान करेंगी। उनकी बातों से आप प्रायः सहमत रहेंगी तथा उसका पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेदों की भी उत्पत्ति होगी जिसके कारण कभी कभी अप्रिय

Duastro Sample Duastro Sample

स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। परन्तु कुल मिलाकर आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा एक दूसरें का सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

ग्रह फल – मंगल

Duastro Sample

छठेभाव में मंगल हो तो जातक बलवान्, धैर्यशाली, प्रबल जठराग्नि, कुलवन्त, प्रचण्ड शक्ति, शत्रुहन्ता, ऋणी, दादरोगी, क्रोधी, पुलिस अफसर, व्रण और रक्तविकार युक्त एवं अधिकव्यय करने वाला होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नही रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

Duastro Sample

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

कुम्भ राशि में मंगल हो तो जातक व्यसनी, लोभी, सटटे से धननाशक, आचारहीन, मत्सरवृत्ति एवं बुद्धिहीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल एकादश में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगी एवं जीवन के शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनसे पूर्ण सहयोग तथा समयानुसार वांछित सहायता भी अर्जित करेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। आपके आय साधनों की वृद्धि में भी उनका प्रमुख योगदान रहेगा। धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सुख दुःख के समय आपकी यथा शक्ति सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे।

Duastro Sample Duastro Sample

आपके अर्न्तमन में उनके प्रति स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में यथाशक्ति उनकी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपनी ओर से वांछित आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें कटुता का भाव उत्पन्न होगा। परन्तु यह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में भी अपना योगदान प्रदान करेंगी।

ग्रह फल – बुध

Duastro Sample

अष्टमभाव में बुध हो तो जातक दीर्घायु, अभिमानी, राजमान्य, कृषक, लब्धप्रतिष्ठ, मानसिक दुखी, कवि, वक्ता, न्यायाधीश, मनस्वी, धनवान् एवं धर्मात्मा होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुर्ख, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

Duastro Sample

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्त्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

ग्रह फल – गुरु

Duastro Sample

ग्यारहवें भाव में गुरु हो तो जातक व्यवसायी, धनिक, सन्तोषी, सुन्दरनिरोगी, लाभवान्, पराक्रमी, सद्व्ययी, बहुस्त्रीयुक्त, विद्वान् राजपूज्य एवं अल्पसन्ततिवान् होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

Duastro Sample

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उस्वभाव, धनी, विद्वान, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

ग्रह फल – शुक्र

Duastro Sample

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, घ्दयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

Duastro Sample

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

वृश्चिक राशि में शुक्र हो तो जातक–नास्तिक, कुकर्मी, स्त्रीद्वेषी दरिद्री, गुह्य रोगी, ऋणी, क्रोधी, स्वतन्त्र एवं अन्यायी होता है।

ग्रह फल – शनि

Duastro Sample

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, क्रूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

Duastro Sample

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, क्रूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

ग्रह फल – राहु

Duastro Sample

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं क्रूर होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

Duastro Sample

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं क्रूर होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

ग्रह फल – केतु

Duastro Sample

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

Duastro Sample

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

Duastro Sample

आपके जन्म समय में लग्न में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। सामान्यतया मेष लग्न में उत्पन्न जातक साहसी पराक्रमी तेजस्वी तथा परिश्रमी होते है तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में वांछित मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ रहते हैं। ये अत्याधिक सक्रिय एवं क्रियाशील होते है तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में इच्छित उन्नति प्राप्त करते है।

अतः इस लग्न के प्रभाव से आप साहसी परिश्रमी तथा पराक्रमी पुरूष होंगे तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को परिश्रम एवं निर्भयता से सम्पन्न करेंगे। आप में स्वाभिमान का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा स्वपरिश्रम तथा योग्यता से जीवन में मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगे।

आपके स्वभाव में प्रारंभ से ही तेजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा फलतः यदा कदा आप अनावश्यक क्रोध एवं चंचलता का प्रदर्शन करेंगे। जीवन में आपको जन्म भूमि के अतिरिक्त अन्य स्थान में सफलता एवं उन्नति प्राप्त होगी तथा वहीं आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही सांसारिक सुखोपभोग के साधनों को भी आप परिश्रम पूर्वक अर्जित करके सुख पूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ होंगे।

लग्न में शनि की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा समय समय पर मानसिक व्याकुलता भी बनी रहेगी। यद्यपि आपको जीवन में काफी समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा परन्तु अपने परिश्रम एवं दृढ़ संकल्प शक्ति के द्वारा आप इनका सामना तथा समाधान करने में समर्थ होंगे। आपकी प्रवृति में उदारता तथा सहिष्णुता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल अन्य जनों को आप अपना सहयोग प्रदान करेंगे। जिससे आपके प्रति लोगों के मन में आदर का भाव उत्पन्न होगा।

आपके सांसारिक कार्य यद्यपि विलम्ब से सिद्ध होंगे परन्तु गौरव एवं सम्मान बना रहेगा। कार्य क्षेत्र में आपको परिश्रम से उन्नति प्राप्त होगी तथा सामाजिक जनों के मध्य भी समय समय पर मान सम्मान मिलता रहेगा। आपको अपनी प्रवृति का अन्य जनों के समक्ष सादगी पूर्ण प्रदर्शन करना चाहिए तथा इसमें अनावश्यक दिखावे का समावेश नहीं होना चाहिए। इस प्रकार से जीवन में आपको इच्छित सुखैश्वर्य एवं वैभव की प्राप्ति होगी।

इस प्रकार आप एक परिश्रमी, तेजस्वी, कार्य निकालने में चतुर परन्तु मन्द गति से कार्य करने वाले होंगे तथा जीवन में आवश्यक सुखों का उपभोग करने में समर्थ होंगे।

Duastro Sample

आपके जन्म समय में लग्न में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। मेष लग्न में उत्पन्न जातक सामान्यतया तेजस्वी पराक्रमी तथा साहसी होते है तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग उनसे शीघ्र ही प्रभावित हो जाते हैं । ये जातक जीवन में स्वपरिश्रम विद्वता एवं योग्यता के बल पर उन्नति तथा मान प्रतिष्ठा अर्जित करते है। साथ ही इनका स्वास्थ्य उत्तम रहता है तथा जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को कुशलता पूर्वक सम्पन्न करने में समर्थ रहते हैं।

अतः इस लग्न के प्रभाव से आप साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी तथा निर्भय होकर अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य कलापों को बुद्धिमत्ता से सम्पन्न करेंगी। अपने उत्कृष्ट कार्य कलापों से समाज में आप इच्छित मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगी। आप में स्वाभिमान का भाव भी विद्यमान होगा तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता के बल पर उच्च पद एवं प्रसिद्धि प्राप्त करेंगी। यदि आप नौकरी या कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे।

आप में तेजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा परन्तु इस पर नियंत्रण रखने में समर्थ होंगी। आपको जन्म स्थान के अतिरिक्त अन्यत्र इच्छित सम्मान प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि प्राप्त होगी तथा सभी सामाजिक लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। इसके साथ ही भौतिक संसाधनों एवं धनैश्वर्य से आप युक्त रहेंगी तथा आनंद पूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ होंगी।

लग्न में बृहस्पति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगी। आप एक स्पष्टवादी महिला होंगी तथा अन्य जनों के विषय में जो कुछ भी कहना हो स्पष्ट रूप से उसे कह देंगे। कर्तव्य परायणता का भाव भी आप में विद्यमान होगा तथा जीवन में अपने कर्तव्यों को ईमानदारी से पूर्ण करने में तत्पर रहेंगी। यद्यपि आप में तेजस्विता स्वभाव से ही रहेगी परन्तु विनम्रता से भी युक्त होंगी। धर्म के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा समय समय पर धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगी।

देखने में आप आकर्षक होंगी तथा सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे। जीवन में आप अपनी योग्यता एवं विद्वता से किसी उच्च पद या प्रतिष्ठित स्थान को प्राप्त करने में सफल होंगी जिससे आपके प्रसिद्धि भी दूर दूर तक फैलेगी। आपके प्रवृति उदार होगी तथा अवसरानुकूल अन्य जनों को सुख दुख में अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। जीवन में धनैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को भी आप अर्जित करेंगी तथा आनंद पूर्वक इनका उपभोग करके अपना समय व्ययतीत करेंगी।

इस प्रकार आप दीर्घायु, विदुषी, कर्तव्य–परायण, साहसी, तेजस्वी, बुद्धिमान तथा प्रसिद्ध महिला होंगी तथा जीवन में इच्छित सांसारिक सुखों का उपभोग करेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

Duastro Sample

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त सांसारिक सुखों तथा धनऐश्वर्य का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे साथ ही किसी संबंधी की सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त कर सकते है क्योंकि अपने नजदीक के संबंधियों के प्रति आपके मन में हमेशा सद्भावना रहेगी तथा सुख दुख में आप उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे। बागवानी के प्रति भी आपके मन में रूचि रहेगी तथा समय समय पर आप इस रूचि का प्रदर्शन करते रहेंगे।

आपका पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा तथा शान्ति एवं आनन्द पूर्वक परिवार के मध्य आपका समय व्यतीत होगा। सामाजिक जनों के मध्य भी आप एक सम्माननीय पुरूष रहेंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप स्वभाव से उदार तथा भावुक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा मिष्ठान भक्षण के प्रति आपकी तीव्र रूचि रहेगी। साथ ही अपने सम्भाषण में हमेशा मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगे। इसके अतिरिक्त वाहन तथा बहुमूल्य रत्नों को भी आप जीवन में प्राप्त करेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

Duastro Sample

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त भौतिक सांसारिक सुखों तथा धन ऐश्वर्य को अर्जित करेंगी तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। इस राशि के प्रभाव से जीवन में आपको किसी निकट संबंधी की धन सम्पति की प्राप्ति की भी संभावना रहेगी क्योंकि अपने निकट संबंधियों से आपका व्यवहार सद्भावना से परिपूर्ण रहेगा तथा उनकी सुख दुख में पूर्ण सेवा तथा सहायता करने में तत्पर रहेंगी। बागवानी के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा समय समय पर आप इसमें तत्पर रहेगी।

जीवन में आपका पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा तथा शान्ति एवं आनन्द पूर्वक पारिवारिक जनों के साथ समय व्यतीत करेंगी साथ ही समाज में भी एक आदरणीय महिला रहेंगी तथा अन्य लोग आपको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे। आप स्वभाव से उदार तथा भावुक भी रहेंगी तथा इस प्रवृति का समय समय पर प्रदर्शन भी करेंगी। मिष्ठान भक्षण के प्रति आप रूचिशील रहेंगी तथा इससे आपको प्रसन्नता प्राप्त होगी । अन्य जनों से सामान्यतया वार्तालाप में आप अत्यंत ही मधुर वाणी का उपयोग करेंगी जिससे लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। इसके अतिरिक्त वाहन आदि से भी युक्त रहेंगी तथा बहुमूल्य वस्तुओं तथा रत्नों को अर्जित करके सुखपूर्वक उनका उपभोग करेंगी।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

Duastro Sample

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति अच्छी रहेगी तथा किसी वस्तु को एक बार देखकर या सुनकर आप चिरकाल तक उसे नहीं भूलेंगे। साथ ही आप शीघ्र ही किसी कार्य प्रणाली को हृदयगम कर सकते है। आप उच्च शिक्षा, नीति, शास्त्र आदि में सफलता प्राप्त करने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे तथा लेखन आदि क्षेत्र में भी ख्याति प्राप्त कर सकते है। आपके भाई बहिनों से मधुर संबंध रहेंगे तथा उनको सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे।

आप एक बुद्धिजीवी प्राणी होंगे तथा शारीरिक बल की अपेक्षा बौद्धिक कार्य ही अधिक सम्पन्न करेंगे। अतः समाज में एक बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में आपकी पहचान बनी रहेगी। आप एक बहादुर एवं साहसी पुरूष होंगे तथा कलम की ताकत भी आपके पास रहेगी। अतः किसी उच्च अधिकारी या नेता के विरूद्ध आप साहस पूर्वक कुछ भी लिख सकते है। आप एक स्पष्टवादी पुरूष होंगे तथा स्पष्ट रूप से अपनी राय अन्य जनों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे। संचार के सभी साघनों से आप युक्त रहेंगे तथा सूचना केन्द्रों में आप कार्यरत भी हो सकते है। जैसे डाकखाना, दूर भाष केंद्र , दूर संचार विभाग। आप संगीत प्रिय होंगे तथा वाद्य यंत्रों के उपयोग से आपको आनन्द प्राप्त होगा। समीपस्थ यात्राओं से आपको लाभ होगा तथा ऐसी यात्राओं से आपको महत्वपूर्ण स्मृतियां भी प्राप्त हो सकती हैं। कला के क्षेत्र में भी आपकी इच्छा रहेगी परन्तु समाचार पत्र के संपादक या संवाद दाता के रूप में कार्य करना आपके लिए अधिक लाभदायक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप वाहन आदि से युक्त रहेंगे तथा पत्नी के प्रति आपके मन में निश्चल प्रेमभावना रहेगी। साथ ही हृदय में उदारता रहेगी एवं सत्य का आप पालन करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने कुल में प्रधान रहेंगे तथा सज्जन लोगों से सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

Duastro Sample

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति अच्छी रहेगी तथा किसी भी बात को समझने में दक्षता का परिचय देंगी। आप उच्च शिक्षा प्राप्त करने या दर्शन शास्त्र आदि के क्षेत्र में सर्वदा रूचिशील रहेंगी। साथ ही लेखन क्षेत्र में भी आपको सम्मान एवं ख्याति अर्जित होगी। चचेरे भाई बहिनों से मधुर संबंध रहेंगे तथा उनको इच्छित सुख एवं सहयोग प्रदान करने में तत्पर रहेंगी ।

आप एक बुद्धिजीवी महिला होंगी तथा शारीरिक बल की अपेक्षा बौद्धिक कार्य ही

अधिक मात्रा में सम्पन्न करेंगी। अतः समाज में बुद्धिमती महिला के रूप में जानी जाएंगी। आप एक निर्भीक तथा साहसी महिला होंगी साथ ही कलम की शक्ति भी आपके पास रहेगी। अतः समय के अनुसार आप उच्चाधिकारियों या नेताओं के विरूद्ध भी लिख सकती है। आप एक साहसी महिला होंगी तथा अपने विचारों को बिना किसी हिचकिचाहट के अन्य जनों के समक्ष प्रस्तुत करेंगी। आधुनिक संचार के उपकरणों यथा टेलीफोन, टेलीविजन, वाहन या अन्य साधनों से आप युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक उनका उपभोग करेंगी। साथ ही सूचना केंद्रों में कार्यरत भी हो सकती हैं। संगीत एवं कला के प्रति भी समय समय पर आप अपनी रूचि प्रदर्शित करेंगी तथा वाद्ययंत्रों के प्रयोग में आपको आनन्दानुभूति होगी। समीपस्थ यात्राओं से आपको लाभ श्रखयाति तथा मधुर स्मृतियों की प्राप्ति हो सकती है। साथ ही समाचार पत्र में संपादक या संवाददाता के रूप में भी कार्य कर सकती है। इसके अतिरिक्त आप पति एवं परिवार से प्रेम तथा उदारता के भाव से युक्त होकर सत्य के पालन में रूचिशील रहेंगी तथा कुल में श्रेष्ठ रहेंगी। इसके अतिरिक्त सज्जन पुरूषों से आपको हमेशा सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

Duastro Sample

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है तथा राहु भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में सुख संसाधनों से आप युक्त होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से इन्हें अर्जित करेंगे। यद्यपि इनको अर्जित करने में आपको कई बार समस्याओं एवं परेशानियों का भी सामना करना पड सकता है एवं इनकी प्राप्ति में विलम्ब भी हो सकता है क्योंकि सुख भाव में राहु लग्नेश की राशि में स्थिति है। अतः आधुनिक भौतिक सुख साधनों एवं ऐश्वर्य का आप अवश्य उपभोग करेंगे भले ही इसमें आपको विलम्ब का सामना करना पड़े।

राहु की स्थिति चन्द्रमा की राशि में चतुर्थ भाव में होने के कारण जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को आप अवश्य प्राप्त करेंगे परंतु इसमें न्यूनाधिक विलम्ब की संभावना होगी। लेकिन आप परिश्रमी व्यक्ति है। अतः स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। लेकिन आपको विवादित सम्पत्ति से हमेशा दूर ही रहना चाहिए क्योंकि इसके क्रय–विक्रय से आपका ऐसी सम्पत्ति से संबंधित होने पर अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

जीवन में आपका अपने घर विलम्ब से ही होगा परंतु सुख सामान्यता अच्छा रहेगा तथा अच्छे मकान में निवास करेगे चाहे वह किराये का ही क्यों न हो। आप किसी धनाढ्य क्षेत्र में मकान को निर्माण करेंगे तथा आपके पडोसी या कालोनी के लोग धनाढ्य एवं शिक्षित होंगे लेकिन आपसी संबंधों में औपचारिकता का भाव ही अधिक होगा। साथ ही वाहन सुख भी अवसरानुकूल प्राप्त होगा।

आपकी माता जी तेजस्वी स्वभाव की शिक्षित महिला होंगी तथा आधुनिक एवं पाश्चात्य संस्कृति की पक्षघर होंगी। पारिवारिक जनों के प्रति उनका दृष्टिकोण अनुकूल होगा तथा अपना नियंत्रण रखेगी। आपके प्रति भी उनका वात्सल्य पूर्ण दृष्टिकोण होगा एवं उनसे नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनके प्रति सम्मान एवं श्रद्धा का भाव रखेंगे तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे परंतु आप दोनो के मध्य वैचारिक भिन्नता रहेगी जिससे यदा कदा संबंधो में मधुरता में कमी आएगी। अतः ऐसी स्थिति की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

शिक्षा के क्षेत्र में परीक्षाएं आप परिश्रम से ही उतीर्ण करेंगे तथापि प्रारंभिक कक्षाओं में आपको अच्छी सफलता मिलेगी लेकिन अन्य कक्षाओं में प्रतिशत अंकमें कमी आ सकती है जिससे स्नातक परीक्षा आप अत्यधिक परिश्रम से उतीर्ण करेंगे लेकिन तकनीकी शिक्षा आपके लिए लाभदायक होगी। अतः स्नातक की अपेक्षा यदि आप तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में ही अध्ययन करें तो आपको इच्छित सफलता मिलेगी तथा आपका परिश्रम भी रंग लाएगा एवं मानसिक

असंतुष्टि से भी सुरक्षित होंगे।

चतुर्थभाव मनुष्य की कुंडली में हृदय का स्थान माना गया है। इस भाव में नैसर्गिक पाप ग्रह राहु की स्थिति के प्रभाव से आयु में वृद्धि के साथ साथ आपको हृदय संबंधी कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही रक्त चाप की भी संभावना है। अतः युवावस्था से ही आपको खान पान पर नियंत्रण रखना चाहिए जिससे भविष्य में आपको अनावश्यक परेशानियों का सामना न करना पड़े।

Duastro Sample

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है तथा राहु भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में सुख संसाधनों से आप युक्त होंगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से इन्हें अर्जित करेंगी। यद्यपि इनको अर्जित करने में आपको कई बार समस्याओं एवं परेशानियों का भी सामना करना पड सकता है एवं इनकी प्राप्ति में विलम्ब भी हो सकता है क्योंकि सुख भाव में राहु लग्नेश की राशि में स्थिति है। अतः आधुनिक भौतिक सुख साधनों एवं ऐश्वर्य का आप अवश्य उपभोग करेंगी भले ही इसमें आपको विलम्ब का सामना करना पड़े।

राहु की स्थिति चन्द्रमा की राशि में चतुर्थ भाव में होने के कारण जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को आप अवश्य प्राप्त करेंगी परंतु इसमें न्यूनाधिक विलम्ब की संभावना होगी। लेकिन आप परिश्रमी महिला है। अतः स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगी। लेकिन आपको विवादित सम्पत्ति से हमेशा दूर ही रहना चाहिए क्योंकि इसके क्रय–विक्रय से आपका ऐसी सम्पत्ति से संबंधित होने पर अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

जीवन में आपका अपने घर विलम्ब से ही होगा परंतु सुख सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा अच्छे मकान में निवास करेंगे चाहे वह किराये का ही क्यों न हो। आप किसी धनाढ्य क्षेत्र में मकान का निर्माण करेंगी तथा आपके पडोसी या कालोनी के लोग धनाढ्य एवं शिक्षित होंगे लेकिन आपसी संबंधों में औपचारिकता का भाव ही अधिक होगा। साथ ही वाहन सुख भी अवसरानुकूल प्राप्त होगा।

आपकी माता जी तेजस्वी स्वभाव की शिक्षित महिला होंगी तथा आधुनिक एवं पाश्चात्य संस्कृति की पक्षधर होंगी। पारिवारिक जनों के प्रति उनका दृष्टिकोण अनुकूल होगा तथा अपना नियंत्रण रखेंगी। आपके प्रति भी उनका वात्सल्य पूर्ण दृष्टिकोण होगा एवं उनसे नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनके प्रति सम्मान एवं श्रद्धा का भाव रहेंगी तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रहेंगी परंतु आप दोनो के मध्य वैचारिक भिन्नता रहेगी जिससे यदा कदा संबंधो में मधुरता में कमी आएगी। अतः ऐसी स्थिति की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

द्य ए ए ए

शिक्षा के क्षेत्र में परीक्षाएं आप परिश्रम से ही उतीर्ण करेंगी तथापि प्रारंभिक कक्षाओं में आपको अच्छी सफलता मिलेगी लेकिन उच्च कक्षाओं में प्रतिशत अंकमें कमी आ सकती है जिससे स्नातक परीक्षा आप अत्यधिक परिश्रम से उतीर्ण करेंगी लेकिन तकनीकी शिक्षा आपके लिए लाभदायक होगी। अतः स्नातक की अपेक्षा यदि आप तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में ही अध्ययन करें तो आपको इच्छित सफलता मिलेगी तथा आपका परिश्रम भी रंग लाएगा एवं मानसिक असंतुष्टि से भी सुरक्षित होंगी।

चतुर्थभाव मनुष्य की कुंडली में हृदय का स्थान माना गया है। इस भाव में नैसर्गिक पाप ग्रह राहु की स्थिति के प्रभाव से आयु में वृद्धि के साथ साथ आपको हृदय संबंधी कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही रक्त चाप की भी संभावना है। अतः युवावस्था से ही आपको खान पान पर नियंत्रण रखना चाहिए जिससे भविष्य में आपको अनावश्यक परेशानियों का सामना न करना पड़े।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

Duastro Sample

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपनी बुद्धिमता से समस्त सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। इससे आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर तो होंगे ही साथ ही सामाजिक जनो में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा वे आपकी बुद्धिमता का आदर करेंगे। आपकी बुद्धि व्यावहारिक होगी तथा शीघ्र एवं व्यावहारिक रूप से किसी भी समस्या का समाधान करने में समर्थ होंगे। वैदिक शास्त्रों एवं साहित्य में आपकी रूचि कम होगी परंतु आधुनिक शास्त्रों के प्रति विशेष लगाव होगा तथा इसके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे जिससे आपकी विद्वता समाज में दूर दूर तक व्याप्त होगी।

पंचमभाव में सिंह राशि के प्रभाव से आप एक व्यावहारिक व्यक्ति होंगे तथा भावुकता के भाव की आप में न्यूनता होगी। प्रेम प्रसंगों में आपकी विशेष रूचि कम ही होगी तथापि यदि कोई प्रसंग चला भी तो इसमें आप आदर्शवादिता एवं मर्यादा का पूर्ण ध्यान रखेंगे क्यों कि आप स्वाभिमानी एवं आदर्शवादी व्यक्ति है। इससे आपका प्रेम प्रसंग विवाह में भी परिवर्तित हो सकता है लेकिन प्रेम में भावुकता को कोई स्थान नहीं देंगे।

जीवन में आपको सन्तति का सुख अवश्य प्राप्त होगा तथा पुत्र की भी विलंब से परंतु निश्चित प्राप्ति होगी। आपकी संतति संख्या अल्प ही होगी तथा सभी योग्य कुशल परिश्रमी एवं बुद्धिमान होंगे। माता की अपेक्षा पिता से बच्चों का अधिक लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिए पिता पर अधिक निर्भर होंगे तथापि दोंनो को पूर्ण सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में माता पिता की अवश्य सलाह लेंगे। अतः बच्चों से आप सुखी एवं संतुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

अध्ययन के प्रति बच्चों की प्रारंभ से ही रूचि होगी तथा शिक्षा के क्षेत्र में वे वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे। वे तेजस्वी बुद्धिमान एवं व्यावहारिक होंगे तथा अन्य सामाजिक जनों, समीपरस्थ संबंधियों एवं मित्रवर्ग के मध्य अपना प्रभाव स्थापित करने में समर्थ होंगे जिससे वे सबके स्नेह एवं आदर के पात्र होंगे। बच्चों के इनगुणों से आप भी अभिभूत होंगे तथा स्वयं को गौरवान्वित महसूस करेंगे। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में बच्चे आपका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

Duastro Sample

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपनी बुद्धिमता से समस्त

सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी। इससे आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर तो होंगी ही साथ ही सामाजिक जनो में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा वे आपकी बुद्धिमता का आदर करेंगे। आपकी बुद्धि व्यावहारिक होगी तथा शीघ्र एवं व्यावहारिक रूप से किसी भी समस्या का समाधान करने में समर्थ होंगी। वैदिक शास्त्रों एवं साहित्य में आपकी रूचि कम होगी परंतु आधुनिक शास्त्रों के प्रति विशेष लगाव होगा तथा इसके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगी जिससे आपकी विद्वता समाज में दूर दूर तक व्याप्त होगी।

पंचमभाव में सिंह राशि की स्थिति के प्रभाव से आप एक व्यावहारिक महिला होंगी तथा भावुकता के भाव की आप में न्यूनता होगी। प्रेम प्रसंगों में आपकी विशेष रूचि कम ही होगी तथापि यदि कोई प्रसंग चला भी तो इसमें आप आदर्शवादिता एवं मर्यादा का पूर्ण ध्यान रखेंगी क्यों कि आप स्वाभिमानी एवं आदर्शवादी महिला है। इससे आपका प्रेम प्रसंग विवाह में भी परिवर्तित हो सकता है लेकिन प्रेम में भावुकता को कोई स्थान नहीं देंगी।

सिंह राशि की स्थिति पंचमभाव में होने के कारण आपको सन्तति का सुख अवश्य प्राप्त होगा तथा पुत्र की भी विलंब से परंतु निश्चित प्राप्ति होगी। आपकी संतति संख्या अल्प ही होगी तथा सभी योग्य कुशल परिश्रमी एवं बुद्धिमान होंगी। माता की अपेक्षा पिता से बच्चों का अधिक लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिए पिता पर अधिक निर्भर होंगे तथापि दोंनो को पूर्ण सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में माता पिता की अवश्य सलाह लेंगी। अतः बच्चों से आप सुखी एवं संतुष्ट रहेंगी तथा उनसे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

अध्ययन के प्रति बच्चों की प्रारंभ से ही रूचि होगी तथा शिक्षा के क्षेत्र में वे वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे। वे तेजस्वी बुद्धिमान एवं व्यावहारिक होंगे तथा अन्य सामाजिक जनों, समीपरस्थ संबंधियों एवं मित्रवर्ग के मध्य अपना प्रभाव स्थापित करने में समर्थ होंगे जिससे वे सबके स्नेह एवं आदर के पात्र होंगे। बच्चों के इनगुणों से आप भी अभिभूत होंगी तथा स्वयं को गौरवान्वित महसूस करेंगी। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में बच्चे आपका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

Duastro Sample

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी बुध है चूंकि यह भाव रोग का प्रतिनिधित्व करता है। अतः इसके प्रभाव से आप नाक कान तथा गले आदि के कष्ट से परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। साथ ही आप में सहन शक्ति के भाव की भी यदा कदा अल्पता रहेगी एवं चर्म रोगों से आपको परेशानी होगी ।

आपको क्रोध एवं उत्तेजना पर हमेशा नियंत्रण रखना चाहिए अन्यथा इसके दुष्प्रभाव से आपके मित्रों की संख्या में कमी आएगी तथा विरोधी पक्ष में वृद्धि होगी। साथ ही बन्धु वर्ग तथा अन्य संबन्धी आप के लिए छिपकर षडयंत्र भी कर सकते हैं। सरकार या पड़ोसियों से भी आपको शत्रुता का सामना करना पड़ सकता है। अतः आप अपने क्रोध पर नियंत्रण रखें तथा किसी अन्य की अनावश्यक आलोचना न करें एवं सहनशीलता बनाएं रखें। यदि आप ऐसा नही करेंगे तो आपको जीवन में अनावश्यक शत्रुओं एवं समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

आपके लिए धन सम्बन्धी झगड़े या मुकद्दमे अनुकूल नहीं रहेंगे। अतः ऐसे मामलों की यत्न पूर्वक उपेक्षा ही करें। सेवक वर्ग की आपको प्रबल आवश्यकता रहेगी लेकिन इनसे आपको समय समय पर धन एवं अन्य प्रकार से हानि होती रहेगी अतः नौकरों का अत्यधिक सावधानी से चयन करें। साथ ही ऋण आदि लेने की भी आपको उपेक्षा करनी चाहिए यदि आपकी प्रवृत्ति इस ओर रही तो आप काफी समय तक ऋण के भार से दबे रहेंगे। बचपन में मामा तथा मामी से आपको सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त खान पान में तेज मसालों आदि का भी परहेज रखना चाहिए अन्यथा इससे उदर या गुर्दे सम्बन्धी परेशानी उत्पन्न हो सकती है। इसके अतिरिक्त शत्रु वर्ग का आप दमन करेंगे परन्तु स्त्रियों के प्रति आसक्ति में आपका धन व्यय हो सकता है अतः सतर्क रहें।

Duastro Sample

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी। अतः इसके प्रभाव से आप यदा कदा नाक कान या गले से संबन्धित परेशानी की अनुभूति कर सकती हैं। आप में सहनशीलता के भाव की न्यूनता रहेगी तथा समय समय पर चर्म रोगों से भी आपके लिए समस्या उत्पन्न होगी। आपको क्रोध एवं उत्तेजना के भाव पर नियंत्रण रखना चाहिए अन्यथा इसके दुष्प्रभाव से आपके मित्रों की संख्या में न्यूनता आएगी तथा शत्रु पक्ष की वृद्धि होगी। आपके शत्रु या विरोधी पक्ष में बन्धु पड़ोसी एवं सरकारी प्रतिनिधि मुख्य रहेंगे तथा इनसे आपको समय समय पर परेशानी उत्पन्न होती रहेगी। अतः आप अपने क्रोधी स्वभाव पर नियंत्रण रखें तथा किसी भी व्यक्ति की अनावश्यक रूप से आलोचना न करें। इससे आपके शत्रु एवं विरोधियों की संख्या में न्यूनता आएगी ।

आपके लिए धन संबन्धी झगड़े या मुकद्दमे अनुकूल नहीं रहेंगे तथा इनसे आपको लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी अतः यत्न पूर्वक ऐसे मुकद्दमों की उपेक्षा करें। नौकर–चाकरों से आप युक्त रहेंगी तथा इनकी आपको आवश्यकता होगी परन्तु यदा कदा धन या अन्य प्रकार से इनके द्वारा हानि हो सकती है। अतः इनकी नियुक्ति के समय पूर्ण जानकारी के बाद ही उन्हें नौकरी पर रखें । ऋण आदि लेने की भी आपको यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए। यदि आप ऐसा नहीं करेंगी तो ऋण भार से आपको जीवन में काफी परेशानी का सामना करना पड़ेगा। मामा मामी का सुख एवं सहयोग भी आपको समय समय पर प्राप्त होता रहेगा तथा बाल्यावस्था में अधिक मिलेगा।

इसके अतिरिक्त खान पान आदि में तेज मसालों का उपयोग नहीं करना चाहिए अन्यथा इससे उदर या गुर्दे संबन्धी परेशानी हो सकती है। साथ ही शत्रु पक्ष का दमन करने में भी आप समर्थ रहेंगी परन्तु अनावश्यक व्यय की प्रवृत्ति का आपको त्याग करना चाहिए तभी जीवन में सुख एवं शान्ति प्राप्त हो सकेगी।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

Duastro Sample

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है सामान्यतया तुला राशि चंचल, भ्रमण प्रिय, प्रियवक्ता तथा माता पिता एवं गुरू जनों पर श्रद्धा रखने वाली होती है। यह वायुतत्व राशि है जिससे जातक सौम्य एवं गंभीर स्वभाव का होता है। लेकिन मंगल नैसर्गिक रूप से तेजस्वी पराक्रमी साहसी एवं अग्नितत्व ग्रह है तथा तुला राशि में स्थित होने के कारण जातक की प्रबल कामेच्छा रहती है।

अतः इनके प्रभाव से आपकी पत्नी का स्वभाव सौम्यता के साथ साथ तेजस्वी भी होगा तथा अवसरानुकूल वे इस भाव का प्रदर्शन करेंगी। साथ ही साहस एवं पराक्रम का भाव भी उनमें विद्यमान रहेगा। सांसारिक कार्यो में वह दक्ष होंगी एवं परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी। पाक शास्त्र के प्रति उनकी विशेष रूचि रहेगी तथा उनके द्वारा बनाए गए स्वादिष्ट व्यंजन सबको प्रिय लगेंगे।

आपकी पत्नी लालिमा लिए गौर वर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा तुला राशि के प्रभाव से उनके सौंदर्य में प्रबल आकर्षण रहेगा तथा इसमें वृद्धि करने के लिए वह आधुनिक सौंदर्य प्रसाधनों का भी उपयोग करेंगी। साथ ही शारीरिक स्वस्थता एवं अंगों की पुष्टता के लिए वे व्यायाम या यौगिक क्रियाएं भी सम्पन्न करेंगी। अग्नि तत्व ग्रह मंगल के प्रभाव से उनकी शारीरिक संरचना में पतलापन रहेगा परन्तु आकर्षण में कोई कमी नहीं आएगी।

सप्तम भाव में तुला राशि के प्रभाव से आपका विवाह यथा समय सम्पन्न होगा। आपका विवाह विज्ञापन या किसी समीपी संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा सुख दुख में एक दूसरे को पूर्ण सहयोग देंगे। इससे जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह समृद्ध परिवार में होगा तथा ससुराल पक्ष के लोग धनऐश्वर्य से सुसम्पन्न होंगे । तथा समय समय पर उनसे आर्थिक एवं नैतिक सहयोग मिलता रहेगा आपके आपसी संबंधों में विशेष मधुरता रहेगी ।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का विशेष सेवा एवं सम्मान का भाव होगा तथा बहू के रूप में जितनी सेवा या सुख उन्हें देना चाहिए देंगी जिससे उनसे संबंधों में मधुरता रहेगी साथ ही देवर एवं ननदों से भी मधुर स्वभाव के कारण मैत्री पूर्ण संबंध बनेंगे।

व्यापार या अन्य योजनाओं में साझेदारी की दृष्टि से आप के लिए स्थिति अनुकूल होगी तथा इससे आपको लाभ एवं उन्नति मिलेगी। अतः साझेदारी के कार्यो को आप सम्पन्न कर सकते है।

Duastro Sample

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है साथ ही चन्द्रमा की स्थिति सप्तम भाव में ही है अतः इसके प्रभाव से आपका जीवनसाथी सुशील विनम्र एवं शिक्षित पुरूष होंगे तथा अपने सद्व्यवहार से सभी जनों को प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। वह आकर्षक व्यक्तित्व के पुरूष होंगे तथा उनकी वाणी अत्यंत ही मधुर रहेगी जिससे सभी लोग उनसे प्रभावित रहेंगे। साथ ही सहिष्णुता का भाव भी उनमें विद्यमान रहेगा जिससे परिवार में सभी सदस्य उनसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। सुदंरता के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा तथा संगीत एवं कला में भी रूचिशील रहेंगे तथा इस क्षेत्र में कोई उपलब्धि भी अर्जित कर सकते है।

आपके पति का सौंदर्य दर्शनीय रहेगा वह गौरवर्ण के आकर्षक व्यक्ति होगे तथा कद भी सामान्य रहेगा। साथ ही शारीरिक रूप से बलिष्ठ होंगे जिससे उनके व्यक्तित्व में निखार आएगा। लेकिन सप्तम भावस्थ चन्द्रमा के प्रभाव से यदि शरीर की उचित देखभाल न की गई तो इसमें आयु के साथ साथ स्थूलता आ सकती है। अतः इससे सतर्क रहें।

आपका विवाह अपने किसी संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा तथा इसमें स्त्री संबंधी यथा भाभी मौसी बुआ आदि का विशेष योगदान हो सकता है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। साथ ही एक दूसरे का पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से किसी को कोई कष्ट नहीं देंगे।

आपका ससुराल मध्यम परिवार से होगा तथा उनका आर्थिक एवं सामाजिक स्तर सामान्य ही रहेगा लेकिन परिवार का माहौल अच्छा होगा। साथ ही चन्द्रमा जैसे शुभ ग्रह के प्रभाव से आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी तथा उनसे आपको हार्दिक स्नेह तथा सम्मान मिलेगा। साथ ही आप भी पितृवत उनको सम्मान प्रदान करेंगी।

आपके पति का सास ससुर के प्रति पूर्ण सेवा तथा श्रद्धा का भाव रहेगा तथा अपने माता पिता के समान उनकी इज्जत करेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे जिससे वे उनसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। साले एवं सालियों को भी वह अपने सद्व्यवहार से प्रभावित करेंगे तथा उनसे भी इच्छित सम्मान एवं सहयोग मिलेगा। एवं सभी लोग एक दूसरे के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए यह स्थिति अनुकूल रहेगी तथा उससे आपको वांछित लाभ प्राप्त होगा एवं मानसिक निश्चिन्तता का भाव भी बना रहेगा। यदि आप संबंधी या मित्र से साझेदारी में कोई भी व्यापार या योजना प्रारंभ करेंगी तो इससे आपको वांछित सफलता मिलेगी एवं प्रबल लाभ की भी संभावनाएं बनेंगी।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

Duastro Sample

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। इसके प्रभाव से आप एक व्यवहारिक व्यक्ति होंगे तथा ज्यौतिष या तंत्र मंत्र आदि पर आपका विश्वास अल्प ही रहेगा तथा भाग्य की अपेक्षा कर्म पर अधिक विश्वास करेंगे। आर्थिक क्षेत्र में आप भाग्यशाली रहेंगे तथा जमीन जायदाद मुकद्दमे या अन्य किसी भी प्रकार से आपको विशिष्ट लाभ होता रहेगा। साथ ही पैतृक सम्पत्ति या किसी समीपस्थ संबन्धी के द्वारा भी आपकी जायदाद में वृद्धि होने की संभावना रहेगी। साझेदार या पत्नी के द्वारा भी आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा। आप यद्यपि घर से पूर्ण सुसम्पन्न व्यक्ति होंगे तथापि शादी के समय भी आप दहेज नकदी या आभूषण आदि को भी प्राप्त करेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनेगी।

जीवन में आपके घर में चोरी आदि की संभावनाएं अल्प रहेंगी यदि कोई ऐसी घटना घटेगी तो यह सामान्य रहेगी अतः इसके विषय में आपको अधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथापि सावधानी वश आपको अपनी बहुमूल्य वस्तुओं को किसी सुरक्षित स्थान में रखना चाहिए। आपको अपने घर या कार आदि का बीमा अवश्य कराना चाहिए क्योंकि इनसे आपको पूर्ण लाभ होने की संभावना रहेगी। दीर्घावधि बीमा की अपेक्षा लधु अवधि बीमा कराने से अधिक लाभ होगा। सामान्यतया आप उत्तम स्वास्थ्य से युक्त रहेंगे परन्तु वाहन चलाते समय आपको गति पर पूर्ण नियंत्रण रखना चाहिए तथा ध्यान से सवारी चलानी चाहिए अन्यथा सामान्य दुर्घटना घट सकती है। इसके अतिरिक्त आप की आयु अच्छी रहेगी तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आप जीवन व्यतीत करेंगे।

Duastro Sample

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप एक व्यावहारिक महिला होंगी तथा आधायात्म या ज्यौतिष विषयों पर अधिक विश्वास नहीं करेंगी। आप भाग्य की अपेक्षा कर्म पर अधिक विश्वास करेंगी। आर्थिक क्षेत्र में आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा जमीन जायदाद मुकद्दमे तथा अन्य किसी भी प्रकार से आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होता रहेगा। साथ ही पैतृक सम्पत्ति या किसी संबन्धी आदि की जायदाद मिलने के योग भी बनते है। इससे आपकी खुशहाली तथा वैभव में वृद्धि होगी। पति के लिए भी आप भाग्यशाली रहेंगी तथा विवाह के बाद सर्वत्र उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे जिससे ससुराल से आपको पूर्ण मान सम्मान तथा स्नेह प्राप्त होगा।

जीवन में आपके घर में चोरी आदि की संभावनाएं अल्प मात्रा में ही होंगी तथा कोई ऐसी घटना होगी भी तो उसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। अतः इस विषय में आपको

Duastro Sample Duastro Sample

कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिए फिर भी सावधानी वश अपनी बहूमूल्य वस्तुओं तथा आभूषणों को उचित सुरक्षा में रखना चाहिए। आपका स्वयं का अथवा अन्य महत्वपूर्ण वस्तुओं का बीमा अवश्य कराना चाहिए क्योंकि बीमे आदि से आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा। साथ दीर्घावधि बीमा की अपेक्षा लधु अवधि के बीमों से आपको शीघ्र लाभ प्राप्त होगा। आप सामान्यतया स्वस्थ तथा दीर्घजीवी होंगी तथापि वाहन चालन आदि में आपको सावधानी रखनी चाहिए तथा शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखना चाहिए। इस प्रकार आप का सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

Duastro Sample

आपके जन्म समय में नवम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा समय समय पर धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करते रहंगे। साथ ही तीर्थ स्थानों की यात्रा करने की भी आपके मन में रूचि बनी रहेगी। आप प्रतिदिन न्यूनाधिक समय दैनिक पूजापाठ पर अवश्य व्यतीत करेंगे। समाज में धर्म के क्षेत्र में आप कई कार्यो को सम्पन्न करेंगे। साथ ही धर्मोपदेशक के रूप में भी कार्य कर सकते हैं। ईश्वर के प्रति आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा आपके विचार से बिना उसकी इच्छा के कुछ भी कार्य होना असम्भव सा है। साथ ही आप कर्म की अपेक्षा भाग्य पर अधिक विश्वास करने वाले व्यक्ति होंगे।

आपके पास अन्तर्प्रज्ञा शक्ति भी विद्यमान रहेगी। अतः अपने विषय में आपको पूर्वाभास हो सकता है। आप धार्मिक क्षेत्र में उच्च शिक्षा अर्जित करने के भी इच्छुक रहेंगे साथ ही लम्बी तीर्थ यात्राओं को भी जीवन में सम्पन्न करेंगे। अपने जीवन में आपको सामाजिक तथा कार्य क्षेत्र में इच्छित सफलता एवं ख्याति प्राप्त होगी तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगे तथा आपको इच्छित मान प्रदान करेंगे। आपके विचार से जीवन में मनुष्य को जो भी शुभ या अशुभ फल प्राप्त होते है वे सब पूर्व जन्म में किए गए कार्यो का फल है अतः आंतरिक रूप से आपकी सन्तुष्टि बनी रहेगी पौत्रों से आपको इच्छित सुख एवं आनन्द की प्राप्ति होगी। साथ ही ज्योतिष या तंत्र मंत्र में भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसका ज्ञान भी रहेगा। इसके अतिरिक्त आप धर्मानुपालन में तत्पर, देवता एवं ब्राह्मणों के सेवक महात्माओं की आज्ञा का पालन करने वाले तथा परम्परागत धर्म से समाज में प्रसिद्धि प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे।

Duastro Sample

आपके जन्म समय में नवम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी तथा समय समय पर धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करती रहेंगी। साथ ही तीर्थ स्थानों की यात्रा करने की भी इच्छुक रहेंगी। आप प्रतिदिन न्यूनाधिक समय दैनिक पूजापाठ में व्यतीत करेंगी। समाज में धर्म के क्षेत्र में आप कई कार्य सम्पन्न करेंगी तथा धर्म का आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा। ईश्वर के प्रति आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा आपके विचार से उसकी इच्छा से ही समस्त संसार संचालित होता है। इसके साथ ही कर्म की अपेक्षा भाग्य पर अधिक विश्वास करेंगी।

आप में अन्तर्प्रज्ञा शक्ति विद्यमान रहेगी अतः किसी भी विषय में पूर्वाभास के द्वारा आपको अनुभूति होगी साथ ही यदा कदा आपकी भविष्य वाणी भी सत्य सिद्ध हो सकती है। धर्म संबधी क्षेत्र में आप उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगी तथा लम्बी दूरी की तीर्थ यात्राएं भी सम्पन्न करेंगी।

Duastro Sample Duastro Sample

जीवन में आपको सामाजिक तथा कार्य क्षेत्र में इच्छित सफलता प्राप्त होगी तथा लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे साथ ही मान सम्मान में भी वृद्धि होगी। आपके विचार में वर्तमान काल में जो भी शुभ या अशुभ फल प्राप्त होते है वे सब पूर्व जन्म के अर्जित कार्यो पर आधारित होते है अतः मानसिक शान्ति आपकी बनी रहेगी। पौत्रों से आपको उचित सुख एवं आनंद की प्राप्ति होगी तथा आपकी वे पूर्ण सेवा करेंगे। साथ ही ज्यौतिष तथा तंत्र मंत्र का ज्ञान अथवा इनके प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा ।

इसके अतिरिक्त आप धर्मानुपालन में तत्पर देवता तथा ब्राह्मणों की सेविका, महात्माओं की आज्ञा का पालन करने वाली तथा परम्परागत धर्म से समाज में प्रसिद्धि प्राप्त करने वाली होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

Duastro Sample

आपके जन्मलग्न में दशम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। साथ ही शुक्र भी मित्र राशि में स्थित होकर दशमभाव में ही स्थित है। मकरराशि भूमितत्व युक्त तथा शुक्र जलतत्व युक्त ग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र श्रम साध्य होगा परंतु बौद्धिकता का भाव भी बना रहेगा। साथ ही आप व्यवसाय या कार्यक्षेत्र में काफी बदलाव की इच्छा रखेंगे। चूंकि आप एक बुद्धिमान व्यक्ति है अतः जो भी परिवर्तन करेंगे उससे आपको लाभ की ही प्राप्ति होगी।

द्वितीयेश एवं सप्तमेश शुक्र के दशमभाव में स्थिति के प्रभाव से आपकी आजीविका का क्षेत्र कला, संगीत, सिनेमा, दूरदर्शन–विभाग, इलैक्ट्रोनिक्स, न्याय विभाग यथा न्यायधीश वकील सचिव सलाहकार फिल्म निदेशक या कलाकार के रूप में प्रारम्भ कर सकते हैं। यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों या संबंधित विभागों में अपनी आजीविका क्षेत्र का चयन करेंगे तो इसमें आपको वांछित सफलता मिलेगी एवं उन्नति के मार्ग पर बिना किसी समस्या एवं व्यवधान के अग्रसर होंगे। शनि की राशि में शुक्र के प्रभाव से आप राजनीति के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त कर सकते है।

व्यापारिक क्षेत्र में अपना व्यवसाय प्रारम्भ करेने के लिए आपको चांदी सोना रत्न आदि का व्यापार दूध दही गुड़ आदि का व्यापार, चतुष्पद या वाहन संबंधी क्रय विक्रय आंलकारिक एवं मूल्यवान वस्त्र, सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री तथा आयात निर्यात संबंधी यथा वस्त्रों का कार्य, शराब का व्यापार आदि लाभ दायक रहेगा एवं यदि आप ऐसे क्षेत्रों में अपने कार्यक्षेत्र या व्यापार को प्रारम्भ करेंगे तो इससे आपको जीवन में इच्छित लाभ एवं धनार्जन होगा तथा अपने स्तर की वृद्धि करने में समर्थ होंगे।

शुक्र की मित्र राशि में दशम भावस्थ स्थिति के प्रभाव से आप जीवन में किसी उच्च एवं अधिकारिक पद को प्राप्त करने में समर्थ होंगे। साथ ही समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा भी बनी रहेगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। व्यापारिक क्षेत्र में आप अपना आदरणीय स्थान स्थापित करने में समर्थ होंगे। साथ ही आप किसी मान्यता प्राप्त संस्था के कोई पदाधिकारी भी बन सकते है तथा कई सम्मानीय एवं अधिकार प्राप्त लोगों से आपके सम्पर्क बनें रहेंगे।

आपके पिताजी एक बुद्धिमान एवं विनम्र स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा कलात्मकता के प्रति उनके मन में विशेष सम्मान होगा। साथ ही अपने आकर्षक व्यक्तित्व एवं अन्य कार्य कलापों से वे अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे तथा समाज में आदरणीय समझें जाएंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं आपकी उन्नति के लिए वे प्रारम्भ से ही प्रयत्नशील रहेंगे फलतः आपको इच्छित शिक्षा प्रदान करेंगे एवं शिक्षा के स्तर में वृद्धि करने के

लिए किसी भी प्रकार की कमी नहीं करेंगे। उनके प्रभाव से भी आपको समाज में मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त आप भी उन्हें पूर्ण सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी आज्ञा का पालन में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा किसी भी प्रकार की आपस में समस्याएं नहीं होंगी।

Duastro Sample

आपके जन्म समय में दशम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। साथ ही केतु भी दशम भाव में ही स्थित है। भूमि तत्व मकर राशि एवं वायुत्व केतु के प्रभाव से आपका व्यवसाय श्रमसाध्य होगा तथापि बौद्धिकता भी उसमें विद्यमान होगी। साथ ही वायुत्व केतु के प्रभाव से आप स्वंतत्र व्यवसाय को करना विशेष श्रेयकर समझेंगी तथा कार्यक्षेत्र में अवसरानुकूल परिवर्तन भी करती रहेंगी तथा ऐसे सामयिक परिवर्तनों से आपको लाभ होगा।

जीविका की दृष्टि से आपके लिए वायुसेना, एअर लाइन्स, एअर ट्रैवल एजेन्सी, खनिज एवं खान विभाग, रासायनिक क्षेत्र, राजनीति, उद्यमों में कार्य, फैक्टरी कर्मचारी, सन्देश वाहक (दूत) तथा पेट्रोलियम विभाग अनुकूल रहेगा। इन क्षेत्रों में यदि आप अपनी आजीविका क्षेत्र का चयन करेंगी तो जीवन में आपको प्रचुर मात्रा में धनार्जन होगा तथा इच्छित उन्नति एवं सफलता भी प्राप्त होगी एवं उन्नति में अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना भी करना पड़ेगा। अतः यत्नपूर्वक आपको इन्ही विभागों में कार्य करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति में एवं लाभ अर्जित करने के लिए आपको खनिज पदार्थ, ट्रैवल एजेन्सी, लोहे का उत्पादन, फैक्टरी, पेट्रोल पम्प, खेती बागवानी एवं भारी उद्योग का क्षेत्र अनुकूल रहेगा। यदि आप अपना व्यवसाय इन क्षेत्रों में करेंगी आपको इच्छित धन अर्जित होगा तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी। साथ ही प्रगति में किसी भी प्रकार की अनावश्यक परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको यत्नपूर्वक इन्हीं क्षेत्रों में व्यापारिक कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

मकर राशि में दशम भावस्थ केतु के प्रभाव से जीवन में आप उच्चपद एवं सम्मान अर्जित करने में समर्थ होंगी। साथ ही किसी सार्वजनिक संस्था या सामाजिक परोपकार संबंधी संस्थाओं के भी आप किसी सम्मानित पदाधिकारी के रूप में मनोनीत की जा सकती है। लेकिन उचित मान सम्मान एवं पद प्राप्त करने में आपको किंचित विलम्ब का सामना करना पड़ सकता है एवं इसमें अनावश्यक समस्याएं एवं व्यवधान भी उत्पन्न हो सकती हैं। परन्तु इससे आपको निराश नहीं होना चाहिए तथा ईमानदारी एवं परिश्रमपूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिता तेजस्वी पराक्रमी एवं उग्रस्वभाव के व्यक्ति होंगे परन्तु उनका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जन उनसे पूर्ण रूप से प्रभावित रहेंगे। साथ ही सभी लोग उनके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं शिक्षा के स्तर के प्रति

द्य ए ए ए

Duastro Sample Duastro Sample

पूर्ण सचेत दौरान आपकी– अध्ययन पर काफी व्यय करेंगे। आपका कार्यक्षेत्र भी उन्हीं के प्रभाव से प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होगा। आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन में तत्पर होंगी परन्तु नैसर्गिक पाप ग्रह केतु के प्रभाव से संबंधों में यदा कदा मतभेद एवं तनाव उत्पन्न होंगे। अतः यदि ऐसी स्थिति की यत्नपूर्वक उपेक्षा की जाए तो आपके परस्पर संबंधो में अनुकूलता आएगी तथा जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

Duastro Sample

आपके जन्म समय में एकादश भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है अतः इसके प्रभाव से आप सौभाग्य से युक्त रहेंगे तथा आपकी मनोकामनाएं शीघ्र ही पूर्ण होती रहेंगी। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा आपकी कई इच्छाएं मन में विद्यमान रहेंगी तथा अन्य जनों की अपेक्षा आप की महत्वाकांक्षाएं यथा समय पूर्ण होंगी। आपके आय स्रोतों में स्वतः वृद्धि होती रहेगी तथा इनमें आपको अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ेगा। अतिरिक्त आय स्रोतों के लिए आप मूल संबन्धी व्यापार लकड़ी या पेट्रोलियम पदार्थों के कार्य से इच्छित लाभ अर्जित कर सकते है।

आपकी मित्रता स्थाई रहेगी तथा मित्रों की संख्या भी अल्प ही रहेगी जिसमें आपको हार्दिक प्रसन्नता मिलेगी एवं उनसे भी यथा समय यथोचित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। अपने से अधिक आयु के लोगों से मित्रता आदि संबंध स्थापित करने से आपको इच्छित लाभ होगा क्योंकि अपनी आयु की अपेक्षा अधिक आयु के लोगों को समझना आपके लिए आसान रहेगा। प्रौढ़ या वृद्धावस्था में मित्रों के मध्य आपके सम्मान में वृद्धि होगी तथा वे सभी आपको अपना पथ प्रदर्शक समझेंगे।

आपके अंदर सामाजिकता की भावना हमेशा विद्यमान रहेगी तथा सामूहिक मनोरंजन में आपको मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त होगी। समाज में आप एक प्रतिष्ठित तथा आदरणीय पुरूष समझें जाएंगे तथा कोई भी व्यक्ति आपके विरूद्ध सत्य असत्य बात कहने के लिए तैयार नहीं होगा तथा आपके सभी आभारी रहेंगे। बड़े भाई बहिनों से आपको इच्छित सुख एवं सहयोग सामान्य मात्रा में ही प्राप्त होगा परन्तु बहिनों से यदा कदा विशिष्ट लाभ या सहयोग मिल सकता है। इसके अतिरिक्त यदा कदा आपके बाऐं कान में कोई परेशानी होगी परन्तु इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा।

Duastro Sample

आपके जन्म समय में एकादश भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप सौभाग्य से युक्त रहेंगी तथा अपनी अधिकाशं इच्छाओं एवं मनोकामनाओं को परिश्रम पूर्वक पूर्ण करने में समर्थ रहेंगी। आप एक महत्वाकांक्षी महिला होंगी तथा मन में कई उमंगे विद्यमान रहेंगी लेकिन अन्य जनों की अपेक्षा आपकी अधिकांश इच्छाएं सरलता से पूर्ण हो सकेंगी । अतिरिक्त आय स्रोतों में वृद्धि करने के लिए आप मूल संबन्धी व्यापार, लकड़ी या खनिज पदार्थो अथवा पेट्रोलियम आदि से इच्छित धनार्जन करने में समर्थ हो सकती है। यदि आप कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त साधनों से आपके पति की आय हो सकती है।

Duastro Sample Duastro Sample

आप स्थाई मित्रता की इच्छुक रहेंगी अतः आपका मित्र मंडल अधिक विस्तृत नहीं होगा। मित्रों के मध्य आपको हार्दिक प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। साथ ही उनसे इच्छित लाभ सहयोग एवं सम्मान भी प्राप्त होता रहेगा लेकिन आप अपनी आयु से अधिक आयु वाले लोगों से अधिक मित्रता करना पसंद करेंगी तथा इनसे आपको वांछित लाभ भी होगा। प्रौढ़ या वृद्धावस्था में मित्रों के मध्य आप अत्यंत ही आदरणीया रहेंगी तथा सभी को समय समय पर उचित सलाह या मार्ग निर्देशन प्रदान करेंगी।

सामाजिकता की भावना से आप हमेशा युक्त रहेंगी तथा सामूहिक उत्सव या मनोंरजन आपके लिए परमानन्द दायक रहेगा। समाज में आप एक प्रतिष्ठित तथा आदरणीया रहेंगी तथा सभी लोग आपको इच्छित आदर प्रदान करेंगे। बड़े भाइयों एवं बहिनों से आपको विशेष अपनत्व स्नेह तथा सहयोग की प्राप्ति होगी तथा आपका वे हर क्षेत्र में पूर्ण ध्यान रखेंगी। इसके अतिरिक्त यदा कदा बाएं कान संबन्धी परेशानी से कष्ट होगा परन्तु इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा तथा आपका सांसारिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

Duastro Sample

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक मामलों में प्रारंभ से ही भाग्यशाली रहेंगे लेकिन समय के साथ ही आप बिना सोचे समझे कई बार मुक्त हाथों से व्यय करेंगे इससे आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप बुद्धिमता पूर्वक योजना बनाकर व्यय करेंगे तो आप आर्थिक परेशानियों से सुरक्षित रह सकते है।

आप स्वभाव से ही धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे अतः धार्मिक कार्य कलापों तीर्थ यात्राओं मन्दिर निमार्ण आदि कार्यो या परोपकार संबंधी कार्यो पर समय समय पर व्यय करते रहेंगे। बच्चों की आप पूर्ण चिन्ता करेंगे तथा उनके रहन सहन पठन पाठन का विशेष ध्यान रखेंगे तथा उन पर यथोचित व्यय करने के लिए तत्पर रहेंगे। आप उन्हें अच्छे स्कूलों तथा कालेजों में प्रवेश दिलाने के परम इच्छुक रहेंगे। साथ ही आपके मित्र एवं संबंधी भी अधिक होंगे। अतः समय समय पर इन पर भी आपका व्यय होता रहेगा। साथ ही घर की साज सज्जा की वस्तुओं यथा फर्नीचर टेलीफोन आदि भौतिक उपकरणों पर भी आपका समय समय पर व्यय होता रहेगा लेकिन आप व्यय पहले करेंगे बाद में अपना आर्थिक बजट देखेंगे इससे यदा कदा व्ययाधिक्य के कारण आप कर्ज आदि ले सकते है लेकिन इससे कोई परेशानी नहीं होगी तथा आप आसानी से कर्ज वापस कर देंगे।

आप नवीन विचारों की खोज में हमेशा मननशील रहेंगे तथा जीवन में नवीन आयाम भी प्राप्त करेंगे। साथ ही यात्रादि से भी आपकी इस क्षेत्र में उन्नति होगी आप शिक्षा, सरकारी अथवा कम्पनी के कार्य से विदेश यात्रा भी कर सकते है तथा इन यात्राओं से आपको भविष्य में पूर्ण लाभ होगा। इसके अतिरिक्त आप विदेश में लम्बी अवधि तक प्रवास भी कर सकते है जो आर्थिक एवं सामाजिक स्तर बढ़ाने के लिए लाभदायक सिद्ध होगा। इससे आपके रहन–सहन, खान पान एवं अन्य क्षेत्रों में उन्नति कारक परिवर्तन दृष्टिगोचर होंगे।

Duastro Sample

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक मामलों में प्रारंभ से ही सौभाग्यशाली रहेंगी लेकिन यदा कदा बिना सोचे समझें उन्नमुक्त रूप से धन व्यय करेंगी इससे आपको ऐसे समय में आर्थिक परेशानी हो सकती है यदि आप बुद्धिमता पूर्वक योजना बनाकर व्यय करेंगी तो आर्थिक परेशानियों से आप सुरक्षित हो सकती हैं।

आप स्वभाव से ही धार्मिक प्रवृति की महिला होगी तथा धार्मिक कार्य कलापों, तीर्थ यात्राओं, मन्दिर निर्माण, परोपकार संबंधी कार्यो पर काफी व्यय करेंगी। बच्चों की आप पूर्ण

चिन्ता करेंगी तथा उनके रहन सहन, खान पान एवं पठन पाठन के प्रति विशेष ध्यान रखेंगी तथा उनका स्तर बढ़ाने के लिए उचित व्यय करेंगी। आप उन्हें अच्छे स्कूलों या कालेजों में प्रवेश दिलाने की इच्छुक रहेंगी। साथ ही आपके मित्र एवं संबंधी भी अधिक होंगे। अतः समय समय पर इन पर आपका व्यय होता रहेगा। घर की साज सज्जा की वस्तुओं फर्नीचर आदि तथा अन्य भौतिक उपकरणों पर भी समय समय पर व्यय करती रहेंगी। लेकिन आप व्यय के बाद बजट देखेंगी इससे आपको कर्ज आदि भी लेना पड़ सकता है लेकिन इससे विशेष परेशानी नहीं होगी तथा आसानी से कर्ज चुका देंगी ।

नवीन ज्ञान तथा विचारों को प्राप्त करने के लिए आप यात्रा आदि सम्पन्न करेंगी। आपकी यात्राएं सामान्यतया शिक्षा या व्यावसायिक होंगी तथा इन यात्राओं से आपको इच्छित लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। आप समयानुसार विदेश संबंधी यात्रा भी करेंगी एवं काफी समय तक वहां रह भी सकती हैं । इस प्रकार जीवन में आपका प्रत्येक स्तर पर क्षेत्र बढ़ता रहेगा।

दशा विश्लेषण

Duastro Sample

महादशा :– गुरु
(02/07/2017 - 02/07/2033)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा को 02/07/2017 शुरू तथा 02/07/2033 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्र, समुदाय, लक्ष्य, इच्छा और उसकी पूर्ति, आमदनी, लाभ, समृद्धि, स्वास्थ्य लाभ और भाग्योदय तथा टखनों का द्योतक है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है जिसकी स्थिति आपकी कुण्डली में एकादश भाव में है तथा तृतीय, पंचम एवं सप्तम भाव पर इसकी दृष्टि है और इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह साल की यह अवधि आपके लिए साहस एवं समृद्धि की होगी।

स्वास्थ्य :

महादशेश गुरु एकादश भाव में स्थित होकर तृतीय भाव को (पंचम एवं सप्तम भावों के अतिरिक्त) देख रहा है जिसके फल स्वरूप आप हिम्मत, बहादुरी तथा मजबूती के साथ सभी समस्याओं को झेल पाएंगे और कोई बड़ी घटना या दुर्घटना आपको या आपके स्वास्थ्य को प्रभावित नहीं कर पाएगी और आपको सामान्य कार्य करने में असुविधा नहीं होगी।

अर्थ–संपत्ति :

गुरु एकादश भाव अर्थात आय भाव में स्थित है तथा अपने ही भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है जिसके फलस्वरूप आप इस दशा काल में चल या अचल संपत्ति अर्जित नहीं कर पाएँगे और भोग विलास की वस्तुओं पर खर्च करते हुए एक सामान्य जीवन का आनन्द लेंगे।

व्यवसाय :

यदि आप नौकरी में हैं तो आपको उन्नति तथा आय एवं धन में वृद्धि मिलेगी। व्यवसाय के प्रति अनेक नये विचार आपके दिमाग में आएंगे जिससे आप अपने व्यवसाय में नाम और प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। अपके मित्र व्यवसाय में उन्नति करने की आपको प्रेरणा देंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे और आपके पारिवारिक जीवन को सुखमय तथा उत्साहपूर्ण बनाएँगे। गुरु की एकादश भाव से सप्तम अर्थात जीवन साथी के भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप आपके जीवन साथी हमेशा आपकी परेशानी में हाथ बँटाने के लिए तैयार रहेंगे। आपके बड़े भाई तथा मित्र भी आपके पारिवारिक जीवन को सुखमय बनाने में सहायक होंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

द्य ए ए ए

आप साहित्यिक तथा धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन जारी रखेंगे।

Duastro Sample

महादशा :– शनि
(02/10/2019 - 01/10/2038)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 02/10/2019 को आरम्भ और 01/10/2038 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रथम भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है जो जातक के दिमाग में भय उत्पन्न करता है। लक्ष्य प्राप्ति में यह बाधा और विलम्ब करता है। यह जातक की परीक्षा लेता है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसे कठिन परिश्रम करने को प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है। किन्तु जातक को अन्ततः लक्ष्य की प्राप्ति होती है।

जन्मकुण्डली में प्रथम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि तृतीय, सप्तम तथा दशम भाव पर है और यह इन भावों के 'कारकत्व' पर प्रभाव डाल रहा है। प्रथम भाव, जिसमें यह स्थित है, शरीर की लम्बाई, बनावट, स्वास्थ्य, जीवन–शक्ति, व्यक्तित्व, जीवन संघर्ष, प्रतिष्ठा, सामान्य तन्दुरुस्ती, और जीवन–संरचना के प्रति विचार का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शनि लग्न में स्थित होने के फलस्वरूप इस दशा के दौरान कोई गम्भीर बीमारी या दुर्घटना नहीं होगी। इस दशा में आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा और आप अपना कार्य नियमित रूप से करेंगे।

अर्थ–सम्पत्ति :

इस दशा के दौरान शनि के कारण आपको अर्थ–सम्पत्ति में वृद्धि करने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे। आपको धन अर्जन के अनेक अवसर मिलेंगे और इस दशा में आपके संसाधनों में वृद्धि और 'सुधार' होगा। आप आराम और विलास की वस्तुओं पर व्यय करने में सक्षम होंगे।

व्यवसाय :

व्यावसायिक स्तर पर आप सुदृढ़ होंगे और अपनी बुद्धिमत्ता तथा शिक्षा के बल पर स्वयं धनोपार्जन करेंगे। आपमे स्वनियोजित होने की संभावना है। आप उपदेशक या नेता भी हो सकते हैं। आपको पैतृक सम्पत्ति भी मिल सकती है।

पारिवारिक जीवन :

प्रथम भाव से सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि के फलस्वरूप आपको आपके जीवनसाभी से सहयोग मिलेगा और वह आपके परिवार को सुचारु रूप से चलाने में आपकी सहायता करेंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी तथा सहयोगी होंगे और आपके दैनिक जीवन में आपका सहयोग करेंगे। आपको उनसे संतोष मिलेगा।

द्य ण ण ण

Duastro Sample Duastro Sample

शिक्षा / प्रशिक्षण :

शिक्षा और साहित्यिक वृत्ति में वृद्धि की दृष्टि से यह दशा आपके अनुकूल होगी।

दशा विश्लेषण

Duastro Sample

महादशा :– शनि
(02/07/2033 - 02/07/2052)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 02/07/2033 को आरम्भ और 02/07/2052 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रथम भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है जो जातक के दिमाग में भय उत्पन्न करता है। लक्ष्य प्राप्ति में यह बाधा और विलम्ब करता है। यह जातक की परीक्षा लेता है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसे कठिन परिश्रम करने को प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है। किन्तु जातक को अन्ततः लक्ष्य की प्राप्ति होती है।

जन्मकुण्डली में प्रथम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि तृतीय, सप्तम तथा दशम भाव पर है और यह इन भावों के 'कारकत्व' पर प्रभाव डाल रहा है। प्रथम भाव, जिसमें यह स्थित है, शरीर की लम्बाई, बनावट, स्वास्थ्य, जीवन–शक्ति, व्यक्तित्व, जीवन संघर्ष, प्रतिष्ठा, सामान्य तन्दुरुस्ती, और जीवन–संरचना के प्रति विचार का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शनि लग्न में स्थित होने के फलस्वरूप इस दशा के दौरान कोई गम्भीर बीमारी या दुर्घटना नहीं होगी। इस दशा में आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा और आप अपना कार्य नियमित रूप से करेंगे।

अर्थ–सम्पत्ति :

इस दशा के दौरान शनि के कारण आपको अर्थ–सम्पत्ति में वृद्धि करने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे। आपको धन अर्जन के अनेक अवसर मिलेंगे और इस दशा में आपके संसाधनों में वृद्धि और 'सुधार' होगा। आप आराम और विलास की वस्तुओं पर व्यय करने में सक्षम होंगे।

व्यवसाय :

व्यावसायिक स्तर पर आप सुदृढ़ होंगे और अपनी बुद्धिमत्ता तथा शिक्षा के बल पर स्वयं धनोपार्जन करेंगे। आपमे स्वनियोजित होने की संभावना है। आप उपदेशक या नेता भी हो सकते हैं। आपको पैतृक सम्पत्ति भी मिल सकती है।

पारिवारिक जीवन :

प्रथम भाव से सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि के फलस्वरूप आपको आपके जीवनसाभी से सहयोग मिलेगा और वह आपके परिवार को सुचारु रूप से चलाने में आपकी सहायता करेंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी तथा सहयोगी होंगे और आपके दैनिक जीवन में आपका सहयोग करेंगे। आपको उनसे संतोष मिलेगा।

शिक्षा / प्रशिक्षण :

शिक्षा और साहित्यिक वृत्ति में वृद्धि की दृष्टि से यह दशा आपके अनुकूल होगी।

Duastro Sample

महादशा :– बुध
(01/10/2038 - 02/10/2055)

बुध की महादशा 01 / 10 / 2038 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 02 / 10 / 2055 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध नवम भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चला रही थी। शनि के कारण आपको जीवन का सुख और बच्चों से आनन्द मिला होगा और शिक्षा उत्तम हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपकी दूर की यात्रा तथा उच्च शिक्षा होगी और सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में शक्ति, स्फूर्ति और उत्साह रहेगा और आप हमेशा सक्रिय रहेंगे। आप खुश तथा आशावादी रहेंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण ज्वर, विषाणुजन्य संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, स्नायविक–थकावट तथा वात की हल्की शिकायत हो सकती है। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। व्यवसाय–व्यापार से उपार्जन में वृद्धि होगी। विदेश से लाभ हो सकता हैं। सट्टे से लाभ होगा, पिता से लाभ मिलेगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन–सामग्री, कम्प्यूटर या हाथ से बनी वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के जीविकोपार्जन में सफलता तथा आय में वृद्धि होगी और सहकर्मियों का अनुग्रह प्राप्त होता। आपको विदेश तथा ठेके से लाभ होगा। व्यवसाय–व्यापार से जुड़े लोगों को विरोधियों पर विजय और सभी कार्यों में सफलता मिलेगी तथा रोजगार और व्यापार में विस्तार के नये अवसर मिलेंगे। व्यापार या विदेश से कारोबार में वृद्धि होगी। अर्थ तथा व्यवसाय में स्थिरता और प्रगति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन–जायदाद :

इस दशा के दौरान आपको जीवन का सुख मिलेगा और आप भाग्यशाली होंगे। शनि की अन्तर्दशा के दौरान वाहन–सुख तथा सभी प्रकार का आराम मिलेगा। जमीन–जायदाद के सभी लेन–देन लाभदायक होंगे। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा और बुध की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी जो अति उत्तम तथा लाभदायक सिद्ध होगी। आप तीर्थाटन पर जाएंगे या धर्मस्थलों की यात्रा करेंगे।

शिक्षा :

द्य ए ए ए

इस दशा में आपकी शिक्षा अति उत्तम होगी। आप उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे और अपनी पसन्द की संस्था में शिक्षा ग्रहण करेंगे। आप अपनी सभी परीक्षाओं और साक्षात्कारों में सफल होंगे। आप विज्ञान, गणित तथा वाणिज्य में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा विदेश में हो सकती है। लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्म पत्रकारिता, मीडिया, जन संचार आदि में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक, तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है। आपका दिमाग विवेकपूर्ण तथा विश्लेषणात्मक है और सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी को संबंधियों से सहायता, शत्रुओं और विरोधियों पर विजय तथा सम्मान मिलेगा और उनकी यात्रा तथा प्रगति होगी। आपके पिता को यश, ख्याति तथा धन की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। आपके छोटे भाई–बहनों को साझेदारों से लाभ, यात्रा तथा व्यापार में सफलता मिलेगी जबकि बड़ों को हर प्रकार का लाभ मिलेगा, उनके मित्र प्रभावशाली होंगे और उनकी इच्छाओं की पूर्ति होगी। भाई–बहनों के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आप भाग्यशाली हैं। इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, धन तथा पिता से लाभ मिलेगा और अध्यात्म की ओर आपका झुकाव होगा।

अन्तर दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति तथा सुख मिलेगा। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में यश, ख्याति तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में जीवन–वृत्ति में उन्नति मिलेगी। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान व्यापार तथा साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि राहु की अन्तर्दशा में कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा तथा मामूली स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं जबकि शनि की अन्तर्दशा में शक्ति, अधिकार, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी।

दशा विश्लेषण

Duastro Sample

महादशा :– बुध
(02/07/2052 - 02/07/2069)

बुध की महादशा 02/07/2052 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 02/07/2069 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध अष्टम भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि द्वितीय भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। इस दशा में शनि आपकी छोटी यात्रा तथा जमीन–जायदाद में वृद्धि हुई होगी, संबंधियों से सहायता तथा जमीन तथा सम्पत्ति की प्राप्ति हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, शिक्षा उत्तम होगी और जमीन–जायदाद में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप स्फूर्तिवान और शक्तिशाली रहेंगे। आपको ज्वर, संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, फ्लू, बदहजमी, पेट दर्द आदि कुछ मौसमी बीमारियाँ हो सकती हैं। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आपको अवकाश ग्रहण से लाभ, बोनस और ग्रेच्युटी मिल सकती है। सट्टा लाभदायक होगा। अचानक लाभ भी हो सकता है। कुल मिलाकर अर्थ की दृष्टि से यह दशा आपके लिए उत्तम होगी क्योंकि इसमें आपका धन–संग्रह होगा। जीवन–वृत्ति और व्यवसाय के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा,रत्न, पुस्तक, लेखा–सामग्री, कम्प्यूटर तथा हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोग अच्छा करेंगे, उन्हें सफलता उच्च पद और अधिकार मिलेगा। व्यवसाय–व्यापार से जुड़े लोगों को सम्पत्ति की प्राप्ति, आय में वृद्धि तथा लाभ होगा। आपको सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा और आप आपना लक्ष्य प्राप्त करेंगे। आपको सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। आर्थिक तथा व्यावसायिक उपलब्धि के लिए यह दशा बहुत उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन–जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा में आपको जीवन का हर सुख प्राप्त होगा। आपको जमीन तथा अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपका पैतृक या विरासती सम्पत्ति मिल सकती है। आपको वाहन की प्राप्ति भी होगी। शनि की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा और शुक्र की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी। तीर्थ पर जा सकते हैं।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आपकी अनुसन्धान परियोजना में रुचि हो सकती है। आप सभी परीक्षाओं तथा प्रतियोगिताओं में बहुत अच्छा करेंगे। आप विज्ञान, गणित तथा वाणिज्य

में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्मक पत्रकारिता, समाचार माध्यम, जनसंचार आदि विषयों में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभावान, कूटनीतिक और बहुमुखी हैं तथा विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है। आपका दिमाग विवेकपूर्ण और विश्लेषणात्मक है और सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपका परिवार के सभी सदस्यों के साथ सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपको बच्चों से सुख तथा आनन्द मिलेगा। आपके जीवन साथी को लाभ, पारिवारिक सुख तथा अचानक धन की प्राप्ति होगी। आपका आपके जीवन साथी के साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता को सट्टे में लाभ और सुख मिलेगा जबकि आपके पिता का शुभ कार्यों में व्यय होगा, उनकी यात्रा होगी और आध्यात्मिक कार्यों के प्रति झुकाव होगा। आपके छोटे भाई–बहनों को विरोधियों पर विजय मिलेगी और कार्य–स्थान में स्थिति अनुकूल होगी जबकि बड़े भाई–बहनों को जीविकोपार्जन में सफलता, यश और ख्याति मिलेगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका धन संग्रह होगा तथा जमीन–जायदाद और आध्यात्मिक कार्यों में रुचि में वृद्धि होगी। केतु के फलस्वरूप कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा में यात्रा तथा साझेदारों से लाभ मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में जीविकोपार्जन में प्रगति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप यश, ख्याति और शत्रुओं पर विजय मिलेगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा जबकि राहु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा बच्चों से सुख की प्राप्ति होगी। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप छोटी यात्रा होगी और सुख तथा जमीन–जायदाद में वृद्धि होगी।

Duastro Sample

महादशा :– केतु
(02/10/2055 - 01/10/2062)

केतु की महादशा 02/10/2055 को आरम्भ और 01/10/2062 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु दशम भाव में स्थित है जहाँ से इसकी दृष्टि चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको सम्पत्ति, समृद्धि, विरोधियों पर विजय तथा कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको यश ओर ख्याति मिलेगी और जीवन में प्रगति तथा लाभ होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप खुश और आशावादी होंगे।

केतु के कारण आपको संक्रामक बीमारी तथा विषाणुजन्य बुखार, चर्मरोग, हृदय–पीड़ा, निचले अंगों में पीड़ा बुखार फोड़ा तथा अल्सर आदि हो सकते हैं। समय पर उपाय करने से इनसे बचाव हो सकता है।

अर्थ तथा व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। व्यवसाय–व्यापार में उपार्जन अच्छा होगा। शत्रुओं–विरोधियों पर विजय मिलेगी। सट्टा–कार्य कम करें। पिता से कुछ लाभ होगा। जीविका–व्यवसाय के लिए कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, परिष्कृत कला, इंजीनियरिंग, सम्पर्क अधिकारी का कार्य, न्यायिक सेवा, प्रबन्धन तथा भाषा के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। रत्न, विलासिता–सामग्री, कम्प्यूटर, चमड़े के सामान, कपड़े, रबड़ तथा प्लास्टिक आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को कार्य स्थान में अनुकूल परिवर्तन आय में वृद्धि तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। आपको वरिष्ठ कर्मचारियों का अनुग्रह तथा सहकर्मियों–सहयोगियों का सहयोग मिलेगा। व्यापार–व्यवसाय से जुड़े लोगों के जीवन में प्रगति, आय में वृद्धि तथा लाभ और व्यापार का विस्तार होगा। आर्थिक और व्यावसायिक उन्नति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

मंगल की अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन–सुख मिलेगा। आपकी जमीन–जायदाद में वृद्धि होगी और साझेदारी में लाभ होगा। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी और बड़ी दोनों यात्राएं होंगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपने अध्ययन में अच्छा करेंगे। आपको परीक्षा तथा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। भाषा, दवा, प्रबन्धन, इन्जीनियरिंग तथा विधि के विषयों में आपकी रुचि होगी। आप कूटनीतिक और स्नेही हैं और आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी। समाज सेवा में आपकी रुचि होगी।

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों की विरोधियों पर विजय और कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी। उन्हें आपकी सहायता की जरूरत हो सकती है। आपके जीवनसाथी को सुख, जमीन जायदाद में वृद्धि और कुछ परिवर्तन होगा। आपकी माता को साझेदारों से लाभ, यात्रा और व्यापार में वृद्धि होगी जबकि पिता की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी और उनके साथ अचानक कोई घटना घटेगी। आपके छोटे भाई–बहनों को अचानक लाभ और हानि और कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्या होगी जबकि बड़ों के आवास या व्यवसाय में परिवर्तन, यात्रा और व्यय होगा।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपको यश, ख्याति और जीवन में प्रगति होगी। शुक्र की दशा में बच्चों से सुख, शिशु का जन्म, सफलता तथा यश और ख्याति की

Duastro Sample Duastro Sample

प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान साझेदारों से लाभ, यात्रा और व्यवसाय में लाभ होगा। मंगल के कारण जमीन–जायदाद में वृद्धि होगी। राहु के कारण कुछ समस्या हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा और सगे–संबंधियों से सहायता मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा में यश और ख्याति की प्राप्ति होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सफलता मिलेगी। बुध की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और धन–समृद्धि, यश तथा सफलता मिलेगी।

Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2025

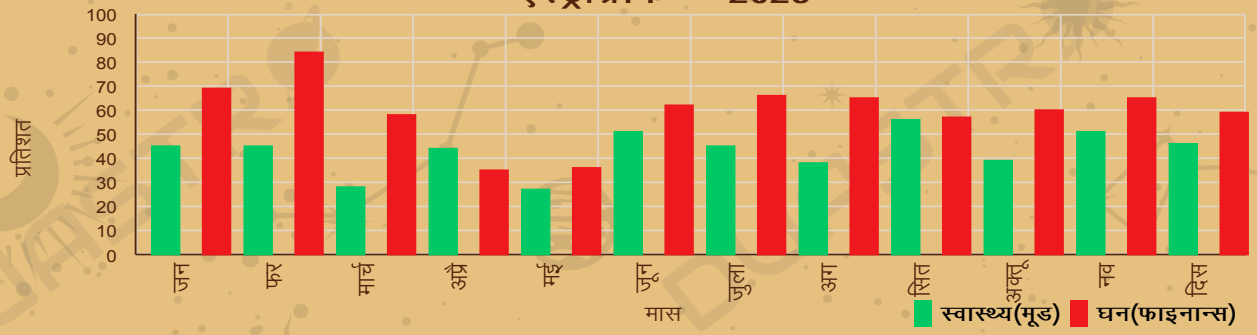

Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2025

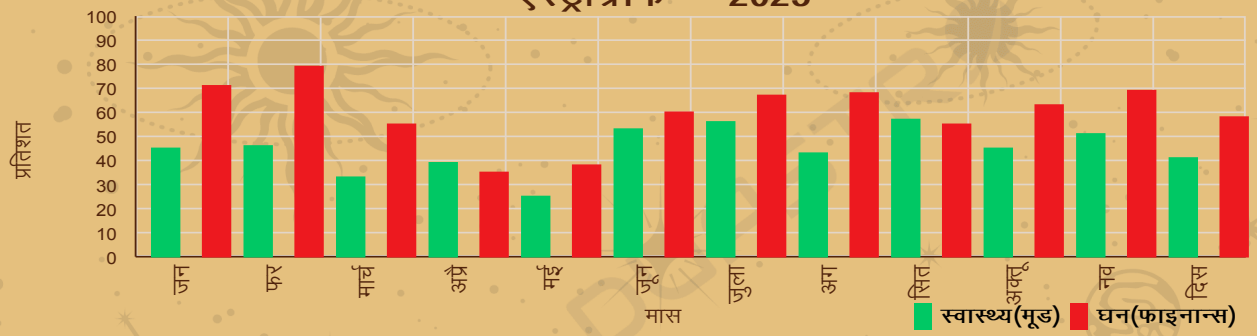

Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2026

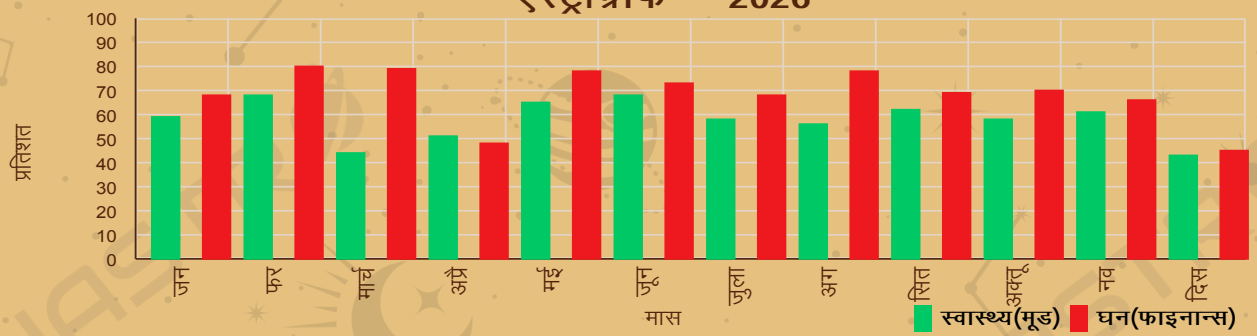

Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2026

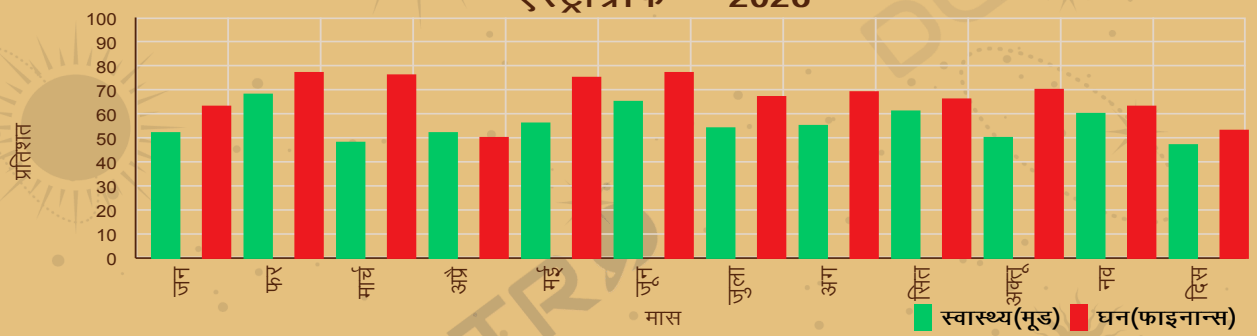

Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2027

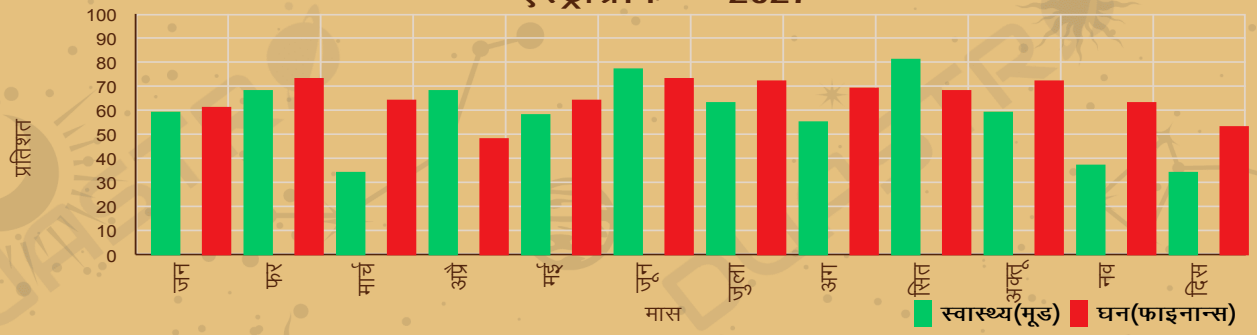

Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2027

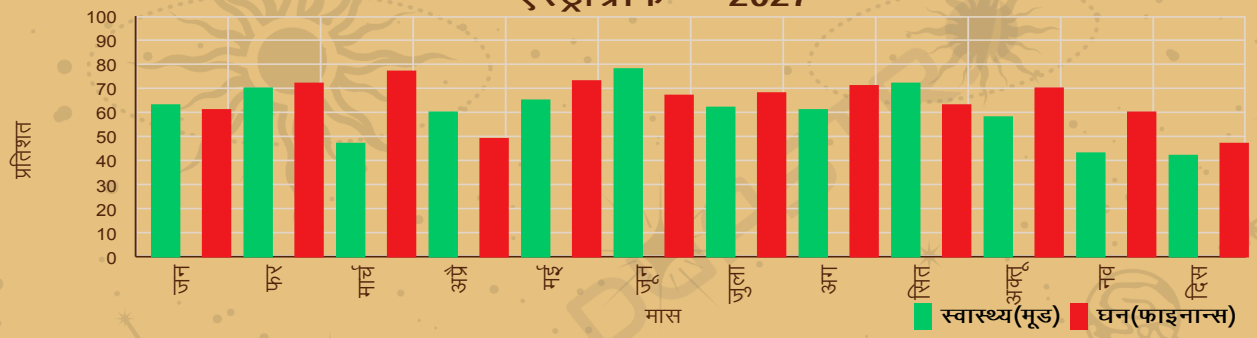

Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2028

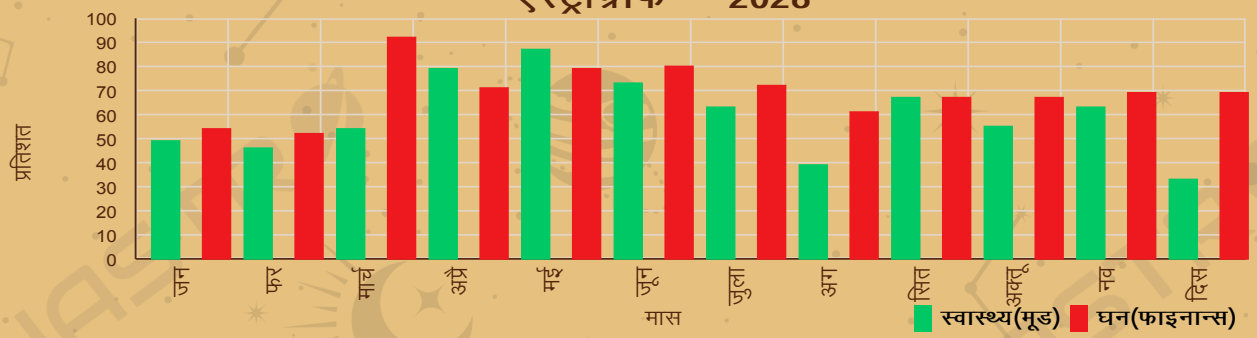

Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2028

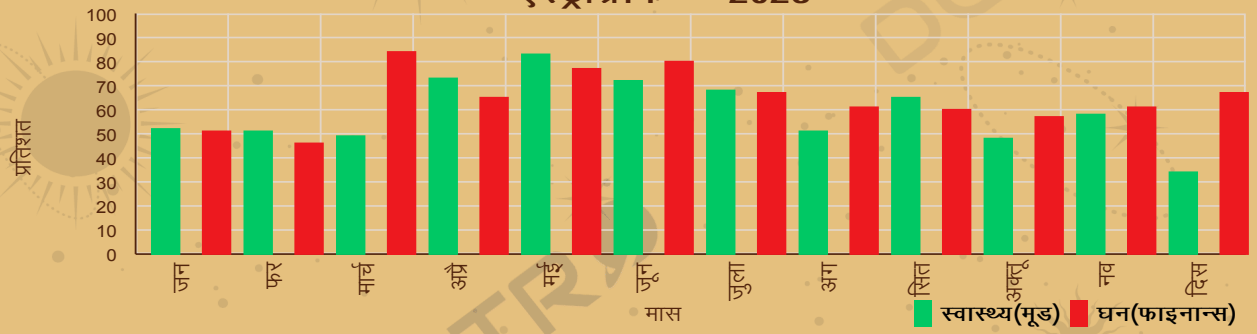

Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2029

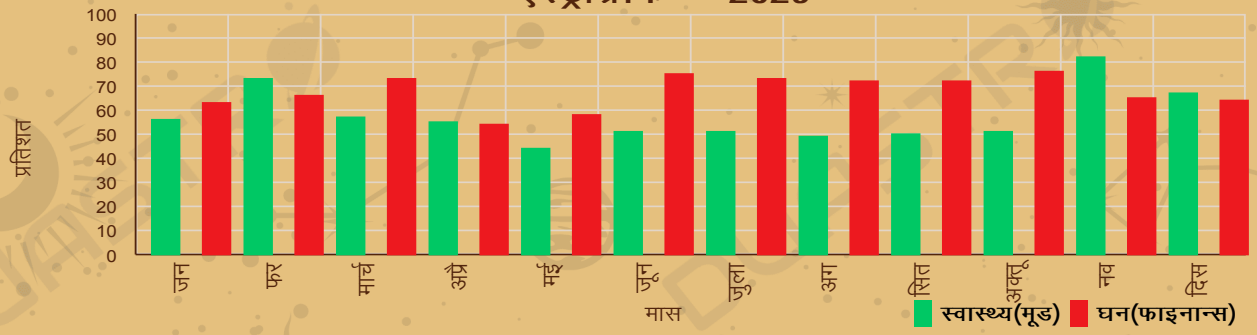

Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2029

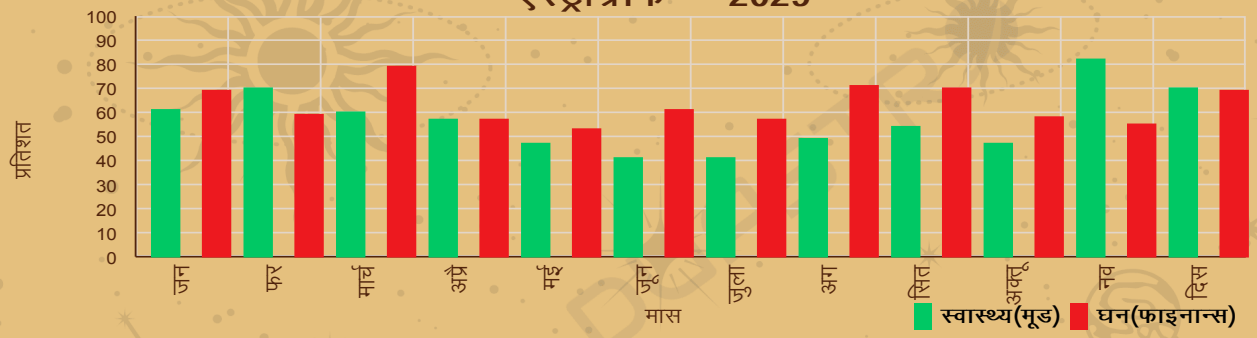

Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2030

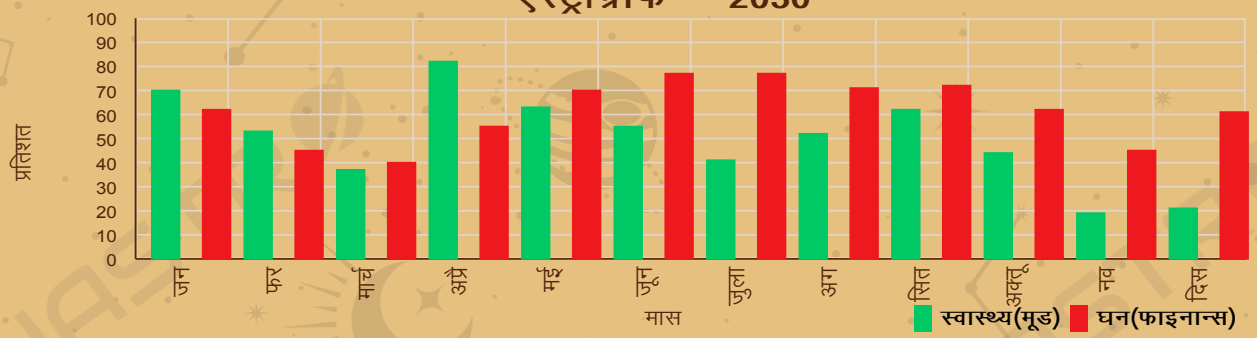

Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2030

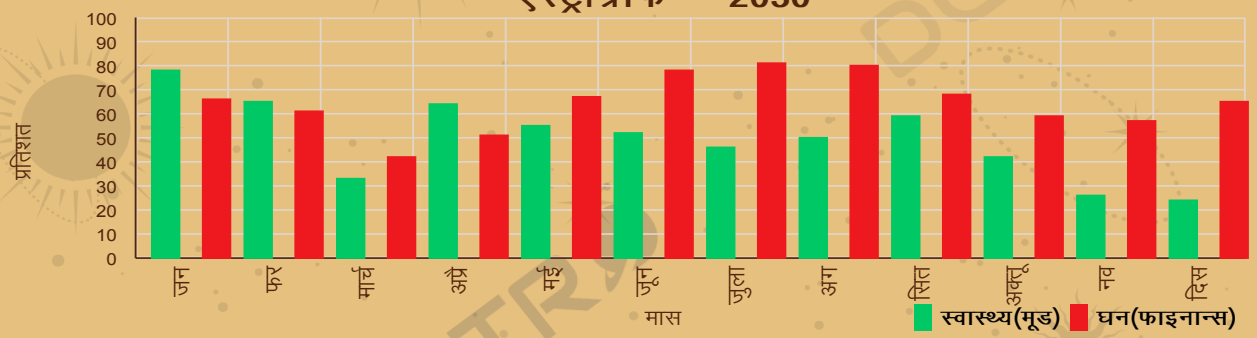

Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2031

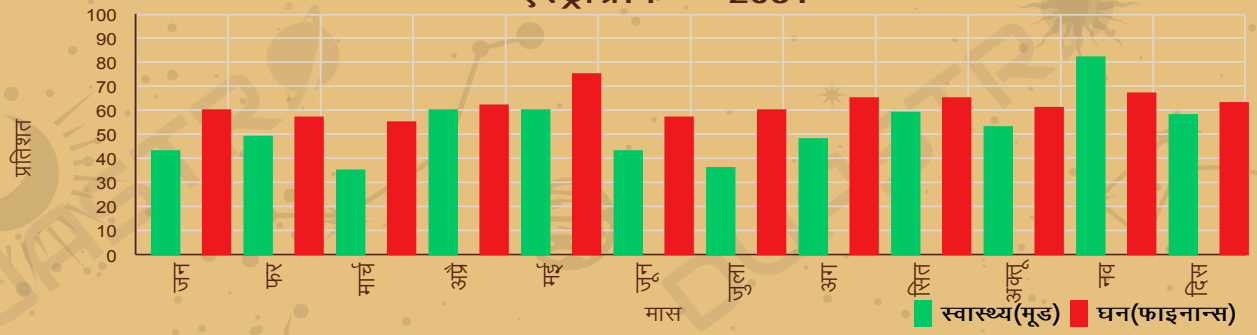

Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2031

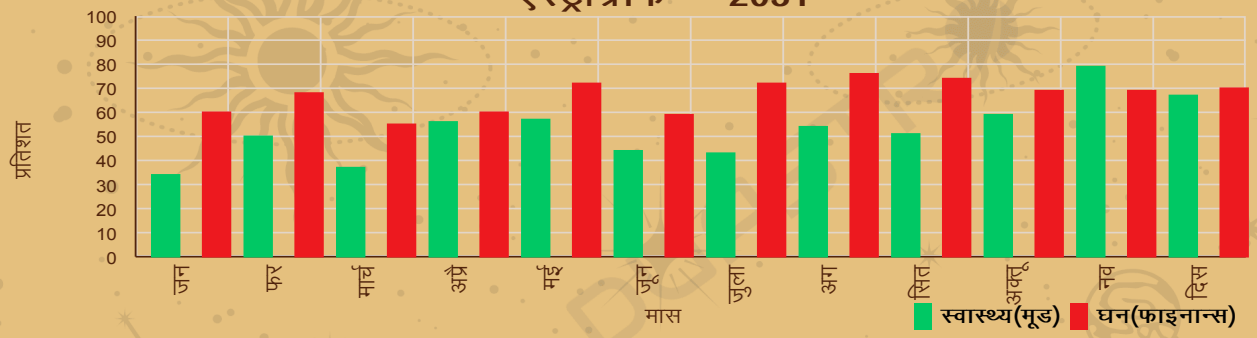

Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2032

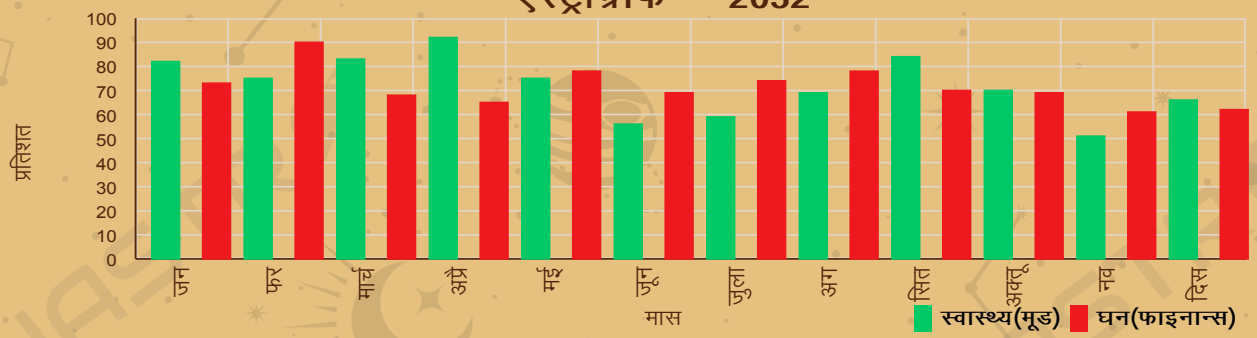

Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2032

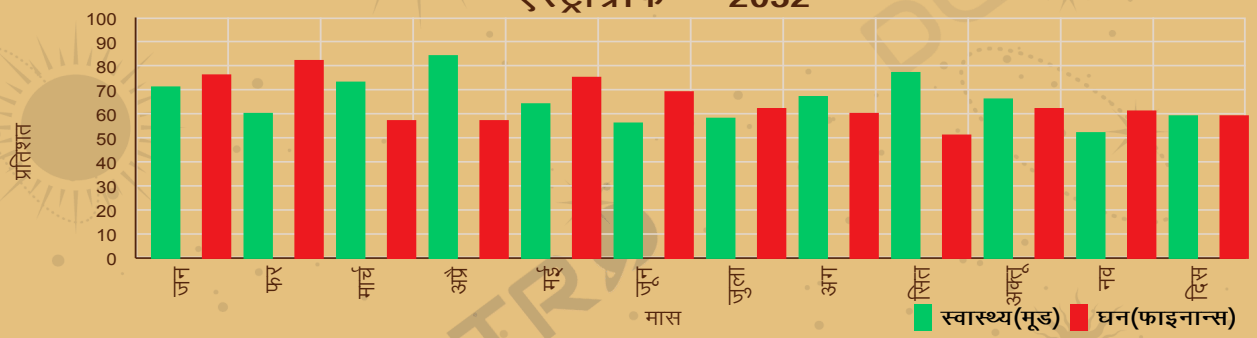

Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2033

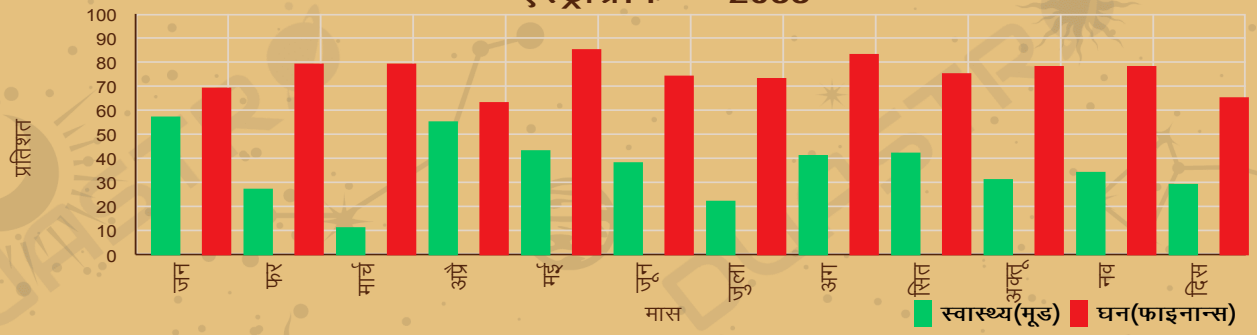

Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2033

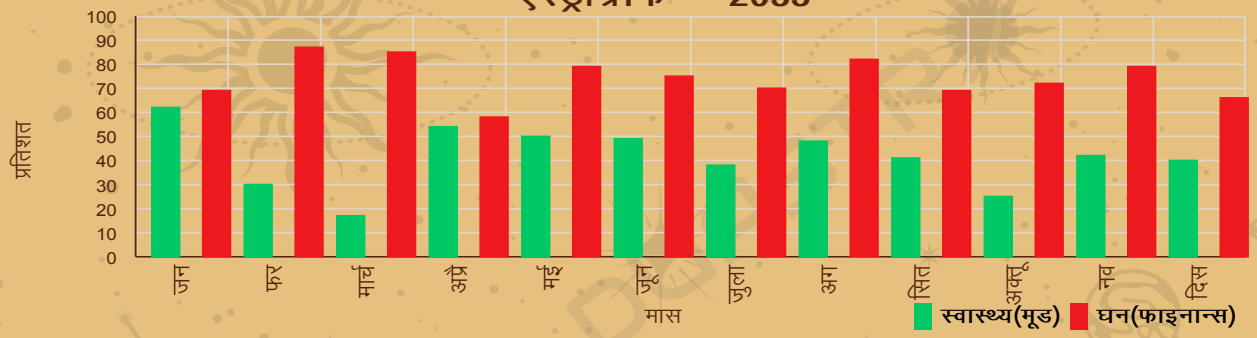

Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2034

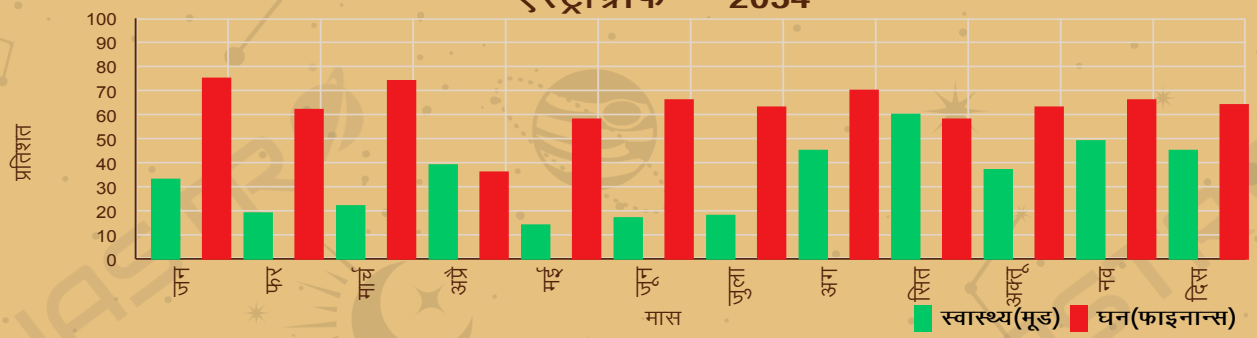

Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2034

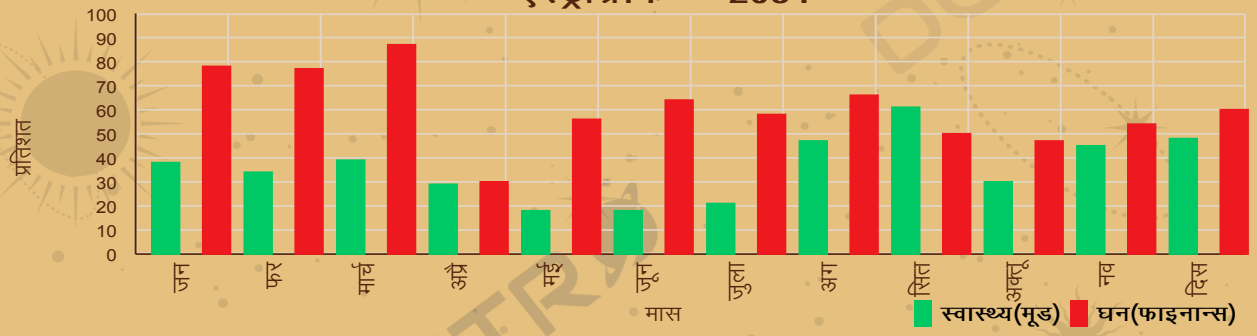

Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2035

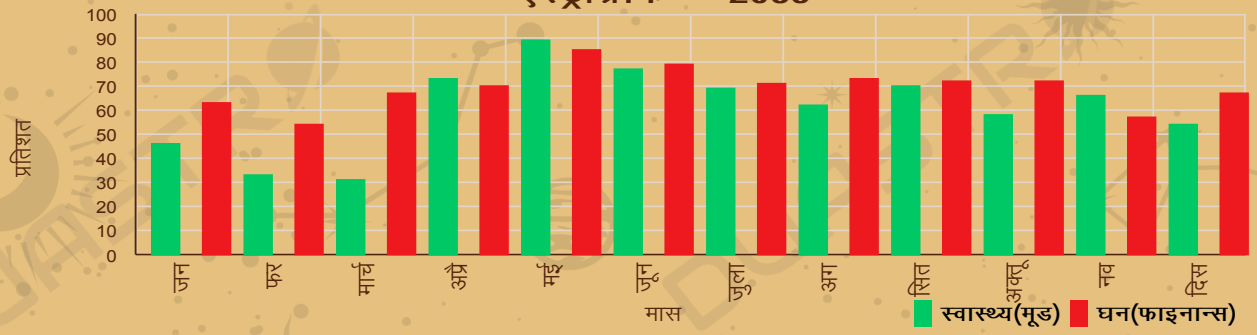

Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2035

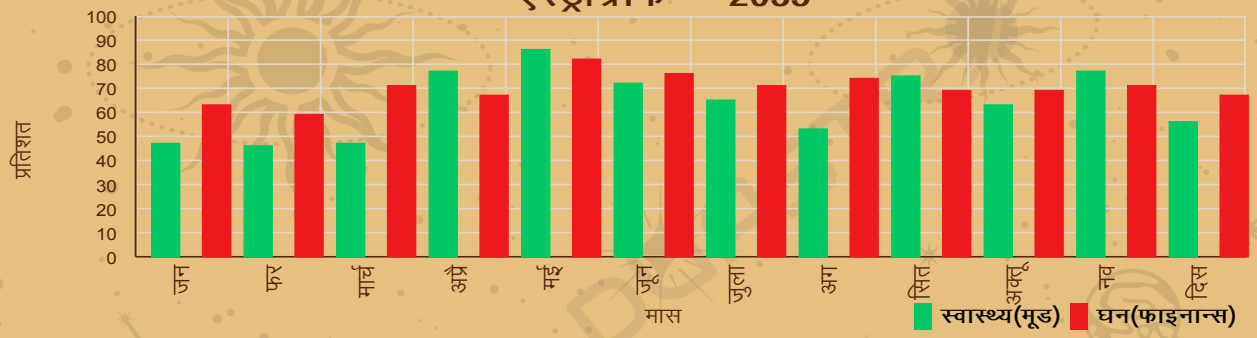

Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2036

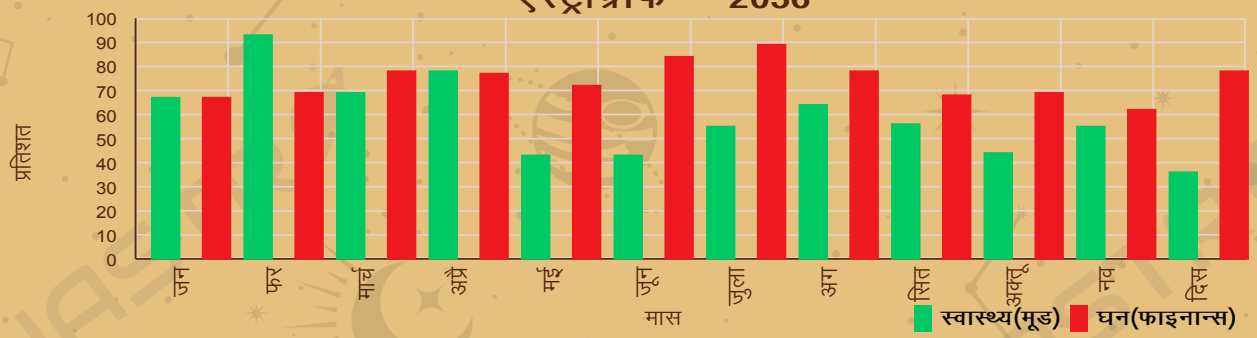
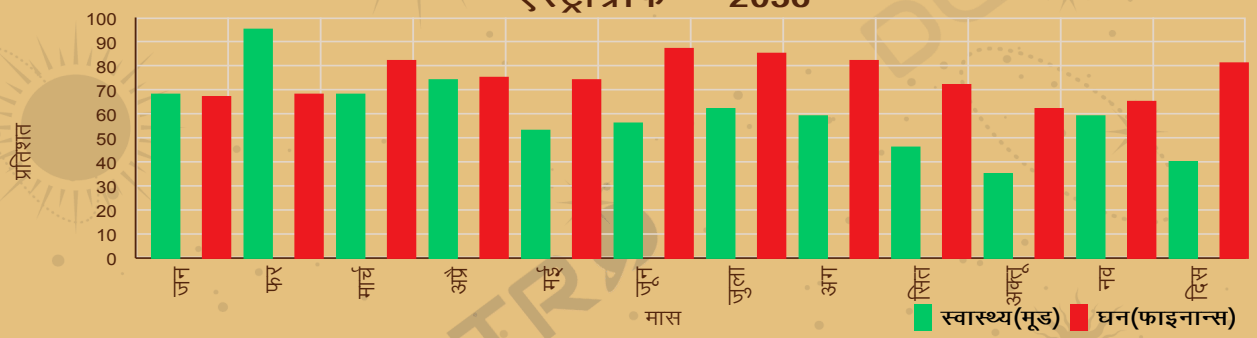
Duastro Sample
एस्ट्रोग्राफ – 2036